महिलाओं के शक्ति हासिल करते ही बाधाएं टूट जाएंगी।
-सांद्रा डे ओ'कोनोर

वैश्विक डिजिटल लेनदेन का 46 फीसदी भारत में होना डिजिटल होते भारत का प्रमाण है। लेकिन हर दिन साइबर धोखाधड़ी की करीब सात हजार शिकायतें मिलना इसका दूसरा पहलू है, जिसके समाधानस्वरूप केंद्र सरकार की पहलें स्वागतयोग्य हैं। पर इनकी कामयाबी जागरूकता व सतर्कता पर ही निर्भर है।

साइबर संकट और समाधान

तकनीकी विकास और इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग के साथ साइबर अपराधों में हुई तेज वृद्धि से उपजी चुनौतियों के मद्देनजर केंद्र सरकार ने जो पहलें की हैं, वे स्वागतयोग्य हैं, जो नागरिकों को साइबर धोखाधड़ी से बचाने के साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से भी अहम हैं। दरअसल, आज का युग तकनीकी और डिजिटल क्रांति का है, जिसमें हर दिन अधिक से अधिक कामकाज ऑनलाइन होता है। सरकारी डाटा, बैंकिंग लेनदेन, आधिकारिक समझौते और यहां तक कि निजी जानकारियां भी इंटरनेट पर मौजूद हैं। यही वजह है कि आज डाटा चोरी, हैकिंग और रैनसमवेयर हमलों जैसे मामले बढ़ रहे हैं, जो निजी और देश की सुरक्षा के लिए भी खतरा बन सकते हैं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक वैश्विक डिजिटल लेनदेन का 46 फीसदी भारत में होता है। 2014 में देश में इंटरनेट उपयोग करने वालों की तादाद जहां 25 करोड़ थी, वह 2024 आते-आते 95 करोड़ हो गई है। सस्ते और सशक्त इंटरनेट के चलते डाटा की हर दिन की खपत 78 गुना बढ़कर 20 जीबी से भी ऊपर पहुंच गई है। देश में हर दिन करीब सात हजार शिकायतें साइबर धोखेबाजी के मामलों की मिलती हैं। स्पष्ट है कि इस परिदृश्य में भौतिक सीमाओं की रक्षा पर ध्यान देना जितना जरूरी है, उतना ही महत्वपूर्ण है डिजिटल सीमाओं को सुरक्षा देना। ताजा एआई क्रांति ने तो इसकी जरूरत को और भी बढ़ा दिया है। इस संदर्भ में भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) के स्थापना समारोह के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री ने भी इसी बात को दोहराया कि साइबर सुरक्षा की परिधि अब केवल डिजिटल क्षेत्र तक नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा का भी अहम बिंदु बन गया है। केंद्र सरकार की तरफ से जो चार पहलें की गई हैं, उनमें 'साइबर धोखाधड़ी न्यूनीकरण केंद्र' में तकनीकी व विधि विशेषज्ञ शामिल होंगे, तो देश भर के डाटा के संग्रह व विश्लेषण के लिए 'समन्वय मंच' होगा। साइबर अपराध के मामलों से निपटने के लिए 'साइबर कमांडो' की एक विशेष शाखा होगी, तो 'सस्पैक्ट रजिस्ट्री' के नाम से एक राष्ट्रीय पोर्टल भी निर्मित होगा। घोषणा के तहत देश में अगले पांच वर्षों में राज्यों व केंद्रीय पुलिस संगठनों में पांच हजार साइबर कमांडो तैनात होंगे, जो न केवल डाटा सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, बल्कि साइबर अपराधियों के हमलों का त्वरित व प्रभावी ढंग से जवाब देने में भी सक्षम होंगे। ये कदम साइबर सुरक्षा को लेकर सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाने के साथ देश को डिजिटल खतरों से सुरक्षित रखने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की जरूरत को भी पूरा करते हैं। लेकिन इन पहलों की कामयाबी की पूर्व शर्तें जागरूकता और सतर्कता ही हैं।

अफगान महिलाओं के हाल पर सब मौन क्यों हैं

कठोर तालिबान शासन में महिलाओं की दुर्दशा पर चीन और अरब देश मौन हैं, क्योंकि वे सिर्फ अपने हित देख रहे हैं। अमेरिका अपनी नैतिक और रणनीतिक जिम्मेदारियों को लेकर जूझ रहा है। अकेला भारत ही वैश्विक मंचों पर अफगान महिलाओं के हितों की बात उठा रहा है। लेकिन यह काफी नहीं है।

केएस तोमर
राजनीतिक विश्लेषक

तालिबान शासन अपने पतन की ओर है, फिर भी वह समाज में महिलाओं की पहचान मिटाने में लगा है, जो उसके अंतरराष्ट्रीय समुदाय से अलग-थलग होने का प्रमुख कारण है। मानवाधिकार संस्था एमनेस्टी इंटरनेशनल ने सुधार की कम गुंजाइश के साथ इसे 'धीमी गति से मौत : महिलाओं और लड़कियों की दुर्दशा' के रूप में चिह्नित किया है। लोग पीड़ित हैं, क्योंकि तालिबान सरकार को अंतरराष्ट्रीय मान्यता और वित्तीय मदद नहीं मिल रही है। भविष्य में भी यही स्थिति रह सकती है, क्योंकि वहां पहले से ही इतने कड़े प्रतिबंध हैं कि महिलाओं को चेहरा समेत पूरा शरीर ढकना होता है, यहां तक कि वे घर से बाहर आवाज भी नहीं निकाल सकतीं।

इन राजकीय प्रतिबंधों की वजह से महिलाएं सार्वजनिक रूप से गीत नहीं गुनगुना सकतीं एवं कुरान नहीं पढ़ सकतीं। साथ ही उनके पतले, तंग और छोटे कपड़े पहनने पर भी पाबंदी है। यही नहीं, कानून ने महिलाओं के घर में भी तेज आवाज में बोलने पर पाबंदी लगा रखी है। इस डर से कि उनकी आवाज चहारदीवारी से बाहर न निकल जाए। शासनादेशों की वजह से बाल विवाह और जबरन विवाह बढ़ गए हैं। वहीं, जिन महिलाओं ने इन अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने की कोशिश की, उन्हें प्रताड़ित किया गया। दुनिया को इसके खिलाफ मुखर होना पड़ेगा। बाद में तीव्र प्रतिक्रिया जताने पर भी कोई परिणाम नहीं निकलेगा।

दूसरी तरफ, चीन का ध्यान अपने शिनजियांग क्षेत्र में अतिवादी गतिविधियों को रोकने पर है। चीन अपने भू-राजनीतिक और आर्थिक हितों के लिए महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आंखें मूंदकर तालिबान से संबंध बनाए रखना चाहता है। तालिबान के प्रति चीन का दृष्टिकोण दर्शाता है कि उसके यहां हो रहे मानवाधिकारों के उल्लंघन पर भी दुनिया का कोई देश हस्तक्षेप या आलोचना न करे। तालिबानी शासन से जुड़कर चीन अपनी पश्चिमी सीमाओं को स्थिर कर भू-राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र में वर्चस्व पाना चाहता है, खासकर जब अमेरिका और उसके सहयोगी अफगानिस्तान से पीछे हट रहे हैं। इसके अलावा, चीन की नजर अफगानिस्तान के खनिज संसाधनों के दोहन पर भी है। महिलाओं के प्रति तालिबान के नजरिये को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खासी नाराजगी है। जबकि चीन का ध्यान अपने रणनीतिक हितों को सुरक्षित करने पर है, इसलिए वह अफगानिस्तान में महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों की अनदेखी कर रहा है। बीजिंग मानवाधिकार के मुद्दों से ज्यादा आर्थिक और सुरक्षा संबंधी चिंताओं को तवज्जो देता है। चीन अफगानिस्तान से होकर अपने बेल्ट ऐंड रोड इनीशिएटिव (बीआरआई) प्रोजेक्ट का विस्तार कर इस क्षेत्र में अपने निवेश को सुरक्षित करना चाहता है।

कूटनीतिक और मानवीय आधार पर अफगानिस्तान में महिलाओं की रक्षा करने में भारत अहम भूमिका निभा सकता है। भारत को शांति वार्ता में महिलाओं को शामिल करने की वकालत कर संयुक्त राष्ट्र की लैंगिक समानता वाली पहल का समर्थन करना चाहिए। अफगान महिलाओं को भारत में पढ़ने के लिए वित्तीय मदद और छात्रवृत्ति देने से भविष्य में वहां सशक्त महिला नेतृत्व तैयार हो सकता है। साथ ही अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर भारत अफगान महिलाओं को स्वास्थ्य, शिक्षा और कानूनी सहायता उपलब्ध करवा सकता है। अतीत में भी भारत ने स्कूल और अस्पतालों के निर्माण तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण, जैसे तमाम कार्यक्रमों के जरिये अफगान महिलाओं की सहायता की है। तालिबान के पुनरुत्थान से उपजी चुनौतियों के बावजूद अंतरराष्ट्रीय मंचों पर महिला अधिकारों की लगातार वकालत करना भारत की उनके प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। हालांकि मौजूदा हालात अफगान महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा करने के लिए बेहतर अंतरराष्ट्रीय प्रयासों की मांग करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र व मानवाधिकार संगठनों समेत विश्व समुदाय ने महिलाओं के प्रति तालिबान के व्यवहार की निंदा की है, लेकिन ये प्रयास नाकाफी हैं। संयुक्त राष्ट्र को अफगानिस्तान में अपनी मौजूदगी बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। तालिबान की शत्रुता के चलते वहां संयुक्त राष्ट्र का प्रभाव काफी कम हो गया है। मानवीय मदद बेशक जरूरी है, लेकिन यह दीर्घकालीन समाधान नहीं है और तालिबान के प्रतिबंधों की वजह से अति जरूरतमंदों तक मदद पहुंच ही नहीं पाती। बयानबाजी के परे वहां संगठित वैश्विक दबाव बनाने की जरूरत है। मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए तालिबान को जवाबदेह ठहराने के लिए अंतरराष्ट्रीय कानूनी ढांचे का लाभ उठाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को उन महिलाओं के लिए सुरक्षित मार्ग तलाशना चाहिए, जो अफगानिस्तान छोड़ना चाहती हैं और संकट में रहने वालों को शरण देनी चाहिए।

वर्ष 2001 में अमेरिका ने तालिबान को सत्ता से बेदखल करने और अफगान महिलाओं को अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय का बेहतरीन नेतृत्व किया था। लेकिन 2021 में अमेरिका ने स्थिरता व समावेशी सरकार सुनिश्चित किए बिना अपने सैनिकों को वापस बुलाकर महिलाओं को उन्हीं ताकतों के हवाले कर दिया, जिनसे सुरक्षा दिलाने का वादा किया गया था। इसलिए तालिबान द्वारा महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने के लिए अमेरिका को फिर से आगे आना होगा। अमेरिका आर्थिक मदद, कूटनीतिक पहल के साथ अंतरराष्ट्रीय समुदाय को संगठित करके तालिबान पर दबाव बना सकता है। अमेरिका को अपनी विदेश नीति के केंद्र में अफगान महिलाओं के हितों को रखना चाहिए। अफगान महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने वाले माविस लीनो दंपती का कहना है कि तालिबान ने जीवन छोड़कर अफगान महिलाओं के लगभग सभी मानवाधिकार छीन लिए हैं।

अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी होते ही वहां की महिलाओं का बुरा वक्त शुरू हो गया और विश्व समुदाय, खासकर अमेरिका खुद को चौराहे पर पाता है, जहां वह अपनी नैतिक और रणनीतिक जिम्मेदारियों को लेकर जूझ रहा है। अरब देशों ने भी अपने राजनीतिक और आर्थिक हितों को मानवाधिकारों से ऊपर रखते हुए तालिबान की बर्बरता को मौन स्वीकृति प्रदान की है। अब विश्व समुदाय को इस भावना के साथ आगे आना चाहिए कि अफगान महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई पूरी दुनिया की महिलाओं के अधिकारों का संघर्ष है। अफगान महिलाओं को अकेले न छोड़ते हुए पूरी विश्व बिरादरी को उनके लिए लड़ना होगा। यह दांव बहुत बड़ा है, क्योंकि अभी चुप रहने के गंभीर परिणाम होंगे।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

बर्ट्रेंड रसेल

आज तक मनुष्य ने दूसरे के साथ जो सबसे बड़ी बुराइयां की हैं, उनमें से ज्यादातर किसी एक पक्ष को नैतिक रूप से सत्य मान कर ही की गई हैं, लेकिन जरूरी नहीं जो महसूस हुआ, वह सत्य ही हो।

मूर्ख आश्वस्त रहते हैं समझदार संदेह से भरे

मैं ऐसी दुनिया की कल्पना करता हूं, जहां लोग संघर्ष से नहीं, बल्कि सहयोग से खुशी प्राप्त करते हों। जिसमें शिक्षा का उद्देश्य मानसिक स्वतंत्रता हो, न कि युवाओं के दिमाग को हठधर्मिता के कठोर पिंजरे में कैद करना, जहां उन्हें पता ही न हो कि शिक्षा का असली अर्थ क्या है। लेकिन हमारी इस वर्तमान दुनिया की पूरी समस्या यह है कि मूर्ख और कट्टरपंथी हमेशा अपने बारे में इतने आश्वस्त रहते हैं और समझदार लोग संदेह से भरे रहते हैं। आखिर इस संदेह, इस डर की वजह क्या है? यह डर ही अंधविश्वास का सबसे बड़ा स्रोत है। भय पर विजय पाना ही बुद्धिमत्ता की शुरुआत है। लेकिन इसके लिए ज्ञान की जरूरत है। ज्ञान के समुद्र में गोता लगाने से पहले दो बातें कहना चाहता हूं, पहला बौद्धिक और दूसरी नैतिक। जब भी आप किसी भी विषय का अध्ययन कर रहे हों, या किसी दर्शन पर विचार कर रहे हों, तो खुद से केवल यह पूछें कि जो ज्ञान ग्रहण कर रहे हैं, उसके तथ्य क्या हैं और तथ्यों से क्या सत्य सामने आता है? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या सोचते हैं। इससे वह सत्य बदलेगा नहीं, इसलिए खुद को विचलित न होने दें। महत्वपूर्ण यह है कि तथ्यों से सामने आया सत्य समाज के लिए कितना लाभकारी है। आपके मन में हजारों विचार आते होंगे, लेकिन सभी कुछ सत्य नहीं होता। आप अपनी नजर हमेशा तथ्य यानी सत्य पर बनाए रखने की कोशिश करें। नैतिकता कहती है कि प्रेम बुद्धिमानी है, जबकि घृणा मूर्खता है। लेकिन तथ्य यह है कि दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं। अगर मूर्खता का कोई अस्तित्व न हो, तो बुद्धिमानी का मूल्य कौन लगाएगा। हमें दोनों को सहन करना सीखना होगा। हमें इस तथ्य को भी स्वीकारना होगा कि लोगों की कही कई बातें हमें पसंद नहीं आएंगी। हमें इतनी सहनशीलता तो सीखनी ही पड़ेगी। आज तक मनुष्य ने दूसरे मनुष्य के साथ जो सबसे बड़ी बुराइयां की हैं, उनमें से ज्यादातर किसी एक पक्ष को नैतिक रूप से सत्य मान कर ही की हैं, जो वास्तव में एक झूठ था। सत्य महसूस होना एक बात है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि जो महसूस हुआ, वह सत्य ही हो। कभी-कभी तथ्यों के अन्वेषण में मैं भी भटक जाता हूं। लेकिन तीन चीजें हमेशा मुझे दिशा दिखाती हैं, प्रेम की लालसा, ज्ञान की खोज और मानव जाति के दुख। ये तीनों, प्रचंड हवाओं की तरह मुझे इधर-उधर एक अनियंत्रित मार्ग पर पीड़ा के एक महान महासागर से गुजारते हुए किनारे तक ले गए हैं। मैंने प्रेम की तलाश की, क्योंकि वह परमानंद लाता है व अकेलेपन से राहत देता है। मैंने अंततः इसे खोजा, क्योंकि प्रेम में मुझे उस स्वर्ग के दर्शन हुए, जिसकी संतों और कवियों ने कल्पना की है। यही वह है, जिसकी मुझे तलाश थी और यद्यपि यह मानव जीवन का सबसे बड़ा वरदान है। फिर मैंने ज्ञान की तलाश की। लोगों के दिलों को समझना चाहा है। जानना चाहा है कि सितारे क्यों चमकते हैं। मैंने पाइथागोरस की शक्ति को समझने की कोशिश की है, जिसके द्वारा संख्या प्रवाह पर हावी रहती है। प्रेम और ज्ञान मुझे जीवन में ऊंचाइयों की ओर ले गए।

सत्य को कसौटी पर परखें

सूत्र

सही-गलत, सुंदर-कुरूप इत्यादि विचार नैतिकता के जाल हैं, जिनमें नहीं फंसना चाहिए। कुरूपता सत्य नहीं है, क्योंकि उसमें भी सुंदरता देखी जा सकती है। एक मां की दृष्टि में उसके बच्चे से सुंदर कोई नहीं होता। हम धारणाओं को सत्य समझ लेते हैं, जबकि सत्य इनसे परे है। तथ्य ही परम सत्य है। तो विचार करें कि जिसे आप सत्य समझते हैं, क्या वह वाकई ऐसा है।

दूसरा पहलू

रंगीन चित्र दिखाते हैं कि 1850 के बाद से दुनिया भर के 100 से अधिक देशों में हवा की गुणवत्ता कैसे बदल गई है।

जहरीली हवा का रहस्य और रंगीन धारियां

वायु प्रदूषण मानव स्वास्थ्य और जलवायु के लिए बहुत बड़ा अदृश्य खतरा है। हमने वायु गुणवत्ता की दृश्य धारियां (स्ट्रिप्स) बनाई हैं, जिनसे वायु प्रदूषण के वैश्विक रुझानों का पता चलता है, ताकि इस छिपे हुए खतरे को सामने लाया जा सके। जलवायु विज्ञान के प्रो. ईडी हॉकिंग्स से प्रेरित होकर, वायु गुणवत्ता को दर्शाती ये धारियां 1850 के बाद दुनिया भर के 176 शहरों के पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) सांद्रता को बताती हैं। ये छोटे कण अक्सर मानव बाल की चौड़ाई के तीसवें हिस्से से भी छोटे होते हैं और फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश कर स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा कर देते हैं।

जिम मैक्वेड

छोटे कण मानव बाल की चौड़ाई के 30वें हिस्से से भी छोटे होते हैं व फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश कर स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा कर देते हैं।

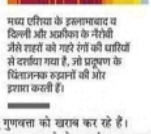

वायु प्रदूषण को और ज्यादा दृश्यमान बनाकर ये धारियां यह समझने का स्पष्ट तरीका हैं कि समय के साथ विभिन्न क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता कैसे विकसित हुई। ये नई धारियां यूरोप में वायु गुणवत्ता के महत्वपूर्ण सुधार को दर्शाती हैं, तो अफ्रीका और मध्य एशिया में चिंताजनक गिरावट का खुलासा करती हैं। लंदन, ब्रुसेल्स और बर्लिन जैसे शहरों को हल्की नीली धारियों से प्रदर्शित किया गया है, जो पीएम स्तर में पर्याप्त कमी का संकेत है। यह सख्त वायु गुणवत्ता नियमों और उत्सर्जन को कम करने की प्रगति का प्रतिबिंब है। इसके उलट, मध्य एशिया के इस्लामाबाद व दिल्ली और अफ्रीका के नैरोबी जैसे शहरों को गहरे रंगों की धारियों से दर्शाया गया है, जो प्रदूषण में चिंताजनक स्थिति की ओर इशारा करती हैं। तेजी से शहरीकरण, औद्योगिक विकास और सीमित नियम जैसे मुद्दे इन क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता को खराब कर रहे हैं।

मध्य एशिया के इस्लामाबाद व दिल्ली और अफ्रीका के नैरोबी जैसे शहरों को गहरे रंगों की धारियों से दर्शाया गया है, जो प्रदूषण के चिंताजनक रुझानों की ओर इशारा करती हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वर्ष 2021 में वायु गुणवत्ता को लेकर नई गाइडलाइन जारी कीं। इनसे पता चला कि वैश्विक स्तर पर 99 फीसदी आबादी वायु गुणवत्ता के तय मानकों से ऊपर स्तर पर जी रही है। वायु गुणवत्ता धारियां स्पष्ट रूप से रेखांकित करती हैं कि प्रदूषण संकट से निपटने के लिए तत्काल लक्षित अंतरराष्ट्रीय प्रयासों की जरूरत है। इन वायु गुणवत्ता पट्टियों को बनाने का मुख्य उद्देश्य वायु प्रदूषण की जटिलताओं का पता लगाना था। 1990 से 2021 के बीच पीएम की वजह से होने वाली मौतों में 93 फीसदी वृद्धि हुई है। 200 से अधिक तस्वीरों का विश्लेषण करने पर पता चला कि वायु प्रदूषण को शून्य स्तर पर ले जाने के लिए परिवहन और विद्युत उत्पादन में जीवाश्म ईंधन का उपयोग कम या बंद करना होगा।

-साथ में किर्स्टी प्रिंगल व सैम इलिंगवर्थ (द कन्वर्सेशन से)

आंकड़े

सौर ऊर्जा उत्पादन

भारत सौर ऊर्जा उत्पादन में जापान से आगे तीसरे नंबर पर पहुंच गया है। इससे बिजली उत्पादन में ईंधन पर निर्भरता कम होगी।

चीन	584.15
अमेरिका	238.12
भारत	113.41
जापान	110.14
जर्मनी	61.56

आंकड़े 2023 की रिपोर्ट के आधार पर टेरावाट हावर (TWh) में। | स्रोत : Ember

श्रीराम से ऋषियों ने कहा कि हमारी पुष्करिणी के पानी को शुद्ध कर दें, तो भगवान ने कहा कि इसका जल भक्त शबरी के चरणों का जल डालने पर ही निर्मल होगा।

भक्त शबरी के चरणों का जल

अंतर्यात्रा
संकलित

भगवान श्रीराम वनवास के दौरान जब माता शबरी के आश्रम पहुंचे, तो कई ऋषियों को इसकी जानकारी लगी। उन्होंने सोचा कि शबरी के आश्रम से पहले हमारे आश्रम भी थे, तो प्रभु हमें छोड़कर सीधे शबरी के पास कैसे चले गए। ऋषियों ने सोचा कि हो सकता है कि हमसे ईर्ष्या करने वाला कोई व्यक्ति श्रीराम को हमारा पता बताए बिना ही सीधे शबरी के पास ले गया हो।

ऋषि भी शबरी के आश्रम पहुंचे और श्रीराम से पूछा, 'प्रभु आप हमारे आश्रमों को छोड़कर सीधे शबरी के पास आ गए, ऐसा क्यों?' श्रीराम ने कहा, 'समस्त ऋषि-मुनि तो मेरे वंदनीय हैं ही। मैंने लोगों से पूछा-यहां भक्त कौन है, तो सभी ने मुझे शबरी का ही नाम बताया। वैसे भी भक्ति मुझे बहुत प्यारी है। इसलिए मैं सबसे पहले यहां आ गया।' इसी बीच ऋषियों ने प्रार्थना की कि प्रभु हमारी पुष्करिणी बड़ी सुंदर थी और जल बड़ा ही निर्मल था। किंतु उसमें कीड़े पड़ गए हैं। इसका जल स्वच्छ कर दें। श्रीराम ने कहा कि महर्षियो! सरोवर या कूप में कीड़े पड़ जाना और पौधा लगाने पर सूख जाना, किसी पाप का परिणाम माना गया है। एक बार एक ऋषि ने भक्त शबरी को भला-बुरा कहकर शुद्धि के लिए इस पुष्करिणी में स्नान किया था, उन्हीं ऋषि के पाप की वजह से इसमें कीड़े पड़े हैं। अतः आप लोग शबरी के चरणों का जल लेकर इसमें डालें। ऋषियों ने ऐसा ही किया और पुष्करिणी का जल फिर से निर्मल हो गया।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 02 दिसंबर, 1958

फ्रांस के आम चुनाव में दिगाल के समर्थकों को सफलता

फ्रांस के आम चुनावों में जनरल दिगाल के समर्थकों की सफलता
कम्युनिस्ट पार्टी की जबर्दस्त हार

फ्रांस के आम चुनाव का परिणाम घोषित कर दिया गया। चुनाव में प्रधानमंत्री जनरल दिगाल की पार्टी को भारी सफलता मिली है। सबसे जबर्दस्त हार कम्युनिस्ट पार्टी की हुई है, जिसे केवल दस ही सीटें मिल सकीं।

छोटे कर्जदारों को शोषण से बचाएगा यूएलआई

यूएलआई अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी, जैसे ब्लॉक-चेन का इस्तेमाल करता है। इससे डाटा ट्रांसफर में सुरक्षा और गोपनीयता को बढ़ावा मिलेगा।

रजत कुमार मिश्रा | आर्थिक

जन-धन, आधार, मोबाइल की त्रिमूर्ति और यूपीआई के साथ-साथ अब यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफेस (यूएलआई) का आगमन भारत की डिजिटल और आर्थिक आधारभूत संरचना में आमूलचूल परिवर्तन ला सकता है। यूएलआई भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा लाया गया एक नया प्लेटफॉर्म है। रिजर्व बैंक ने 10 अगस्त, 2023 को निर्बाध कर्ज प्रदान करने के लिए पायलट परियोजना के तहत 'पब्लिक टेक प्लेटफॉर्म' की स्थापना की घोषणा की थी, जिसे अब यूएलआई का नाम दिया गया है। केंद्रीय बैंक के अनुसार, डिजिटलीकरण के युग में, क्रेडिट मूल्यांकन के लिए जरूरी डाटा भी एक ही स्थान पर उपलब्ध होना चाहिए, ताकि त्वरित और सुरक्षित कर्ज वितरण को प्रोत्साहन मिले।

यूएलआई लाए जाने की कई वजह हैं। एक वजह तो यही है कि सरकार स्वरोजगार करने वालों, ग्रामीण युवाओं और छोटे उद्यमियों को सहायता प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है, क्योंकि बदलते आर्थिक परिदृश्य और रोजगार के घटते मौकों के बीच 'आत्मनिर्भरता' ही बेहतर समाधान है। दूसरी वजह छोटे कर्जदारों को शोषण से बचाना है। चीनी एप्स द्वारा छोटे-छोटे ऋण देकर वसूली के नाम पर लोगों को प्रताड़ित किया जाता रहा है। यह समस्या सिर्फ आर्थिक ही नहीं, बल्कि साइबर सुरक्षा और मनी लॉन्ड्रिंग से भी जुड़ी है, जिसने भारत में अब तक 100 से अधिक जानें ले ली हैं। लगभग 40 फीसदी घोटालों का कोई सुराग भी नहीं मिला। इन सब का कारण किसी एकीकृत कर्ज प्रणाली का न होना और औपचारिक संस्थाओं जैसे बैंकों की जटिल प्रक्रिया और नाना प्रकार के दस्तावेजों की अनिवार्यता है।

वर्ष 2024-25 बजट में इसीलिए वित्त मंत्री ने सरकारी बैंकों को आम नागरिकों की ऋण-पात्रता तय करने के लिए एक आतंरिक मूल्यांकन पद्धति विकसित करने का निर्देश दिया और मुद्रा लोन के मूल्य को दोगुना कर दिया। परंतु ऐसी स्थिति में बैंकों के पास कर्जदार की पूरी जानकारी न होने और ऋण डिफॉल्ट करने का खतरा भी उत्पन्न हो सकता है। यूएलआई दरअसल इन्हीं सवालों का जवाब है, जो आगामी दौर में भारतीय आर्थिक व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

इसमें किसी व्यक्ति की वित्तीय और गैर-वित्तीय जानकारियां डिजिटलीकृत रूप में एक प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध रहेंगी। इनमें न सिर्फ बैंक खातों और कर्जों की जानकारी होगी, बल्कि भूमि से जुड़े सरकारी रिकॉर्ड्स, सैटेलाइट द्वारा भूमि की इमेजिंग और सहकारी संस्थाओं (कृषि, दुग्ध, मत्स्य आदि) द्वारा दिए जाने वाले पैसों की भी सूचना होगी। किसान क्रेडिट कार्ड के प्रयोग से निरंतर कृषि उपकरणों, खाद, बीज आदि की खरीद संबंधित किसान की कृषि उत्पादकता और ऋण-पात्रता का परिचायक होगी।

ऐसी स्थिति में बैंक, एनबीएफसी, फिन-टेक कंपनियां आसानी से और तुरंत ग्राहक के लिए उपयुक्त कर्ज सीमा और दरों को निर्धारित कर सकते हैं। इससे छोटे और ग्रामीण उधारकर्ताओं, जिनके पास कोई क्रेडिट इतिहास नहीं है, के लिए भी क्रेडिट मूल्यांकन का समय कम हो जाएगा। इसका अगला स्वाभाविक कदम ब्याज दरों में पारदर्शिता और कमी होना चाहिए। भूमिहीन या जोतदार किसान या पहली बार कर्ज लेने वाले संपत्ति विहीन लोग भी अब मुख्यधारा की वित्तीय संस्थाओं द्वारा कर्ज के हकदार बनेंगे।

यूएलआई की एक और विशेषता अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी, जैसे ब्लॉक-चेन का इस्तेमाल है। इससे डाटा ट्रांसफर में सुरक्षा और गोपनीयता को बढ़ावा मिलेगा। कोई भी कंपनी ग्राहक का डाटा बिना उसकी अनुमति के नहीं देख पाएगी। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के हेल्थ-रिकॉर्ड की ही तरह ग्राहक निर्धारित समय, जैसे एक सप्ताह के लिए अपनी सहमति देंगे, जिसे आवश्यकतानुसार रद्द भी किया जा सकता है।

यूएलआई का तकनीकी ढांचा सामान्य मापदंडों वाले एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (एपीआई) से भी सुसज्जित है, जो दो अलग-अलग सॉफ्टवेयर या प्लेटफॉर्म के बीच बड़ी आसानी से एक पुल बना सकता है इसके चलते हर बैंक या संस्थान को अलग-अलग जटिल तकनीक नहीं बनानी पड़ेगी, और एकीकृत रूप से डाटा साझा करना संभव हो सकेगा। साथ ही इसका इस्तेमाल कर स्टार्टअप यूएलआई पर नए प्रयोग और नवाचार कर उसे और भी ज्यादा उपयोगी बना पाएंगे, जिस प्रकार यूपीआई से पेटीएम, फोन-पे, भारत-पे आदि का पूरा फिन-टेक इकोसिस्टम विकसित हुआ।

यूएलआई आम उपभोक्ता के सीधे संपर्क में न होकर एक ऐसी आधारशिला रख सकता है, जो कर्ज मूल्यांकन, वितरण, भुगतान और वित्तीय डाटा ट्रांसफर को गोपनीय, सुदृढ़ और आधुनिक बनाएगा। हालांकि यह वक्त ही बताएगा कि यूपीआई की ही तरह यूएलआई लोकप्रिय होगा या नहीं।

सम्पादकीय

मणिपुर में गृहयुद्ध की स्थिति

मणिपुर में हिंसा शुरू हुए लगभग सवा साल हो चुके हैं लेकिन राज्य अभी भी शांति का इंतजार कर रहा है। ऐसे लगता है जैसे राज्य में गृह युद्ध छिड़ा हुआ है। स्नाइपर राइफल, मोर्टार, बम और हैंड ग्रेनेड तो हिंसा में इस्तेमाल किए ही जा रहे थे लेकिन अब मैतेई और कुकी समुदायों के आतंकी संगठनों के पास अत्याधुनिक हथियार और उपकरण पहुंच चुके हैं। ड्रोन से किए गए बम हमलों और राकेट हमलों ने सरकार और सुरक्षा बलों के लिए नई चिन्ताएं खड़ी कर दी हैं। सुरक्षा बलों को अपने ही देश की भूमि पर युद्ध लड़ना पड़ रहा है। हिंसा के बढ़ते मामलों को देखते हुए सुरक्षा एजेंसियों और केन्द्रीय बलों ने राज्य के सीमांत क्षेत्रों में कुछ ड्रोन रोधी सिस्टम्स तैनात किए हैं ताकि किसी भी तरह के खतरनाक ड्रोन को रोका जा सके। सीआरपीएफ ने भी एक ड्रोन रोधी प्रणाली का परीक्षण किया है और इसे राज्य में तैनात बल को प्रदान किया गया है। सीआरपीएफ द्वारा जल्द ही कुछ और ड्रोन रोधी बंदूकें राज्य में लाई जा रही हैं। वहीं राज्य पुलिस ने भी अपने सुरक्षा उपायों को बढ़ाने और ड्रोन से होने वाले खतरों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए ड्रोन रोधी प्रणाली की खरीद की प्रक्रिया शुरू कर दी है। हवाई गश्त के लिए सैन्य हैलीकाप्टर लगाए जा रहे हैं। राज्य में घाटी और पहाड़ से लगने वाले इलाकों में पिछले एक साल से बंकर बने हुए हैं। मैतेई और कुकी समुदाय में खाई इतनी चौड़ी हो चुकी है कि अब दोनों समुदाय के लोग एक-दूसरे के सामने हथियार तान कर खड़े हुए हैं। हर एक के कंधे पर हथियार है। कोई नहीं जानता कब कौन किस की तरफ से गोलियां बरसाना शुरू कर देगा। मणिपुर में शांति बहाली की उम्मीदों को टूटता देख इम्फाल घाटी में स्थानीय संगठन ने पब्लिक इमरजैंसी घोषित कर दी है। लोग मणिपुर छोड़ने के लिए अपना सामान बांध रहे हैं। बाजार बंद है। सवाल यह भी है कि मणिपुर के उग्रवादी संगठनों को अत्याधुनिक हथियार कैसे मिल रहे हैं और वह इतने ताकतवर कैसे बन रहे हैं। हिंसा में लगातार बढ़ोतरी हो जाने के बावजूद राज्य सरकार हाथ पर हाथ रख कर बैठी है और केन्द्र सरकार की भी खास प्रतिक्रियाएं सामने क्यों नहीं आ रही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत ने पहली बार 10 जून को नागपुर में मणिपुर को लेकर टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि 10 वर्ष पहले मणिपुर में शांति थी। ऐसा लगा था कि वहां बंदूक संस्कृति खत्म हो गई है लेकिन राज्य में अचानक हिंसा बढ़ गई। उन्होंने सरकार को परामर्श दिया था कि मणिपुर की स्थिति पर प्राथमिकता से विचार किया जाए। श्री मोहन भागवत ने गत 6 सितम्बर को मणिपुर की स्थिति पर गंभीर टिप्पणी करते हुए कहा कि मणिपुर के हालात कठिन हैं। अब राज्य में सुरक्षा का कोई भरोसा नहीं है। उन्होंने कहा कि चुनौतियों के बावजूद संघ के कार्यकर्ता दोनों समुदायों की मदद और माहौल सामान्य करने की कोशिशें कर रहे हैं। संघ कार्यकर्ता न ही वहां से भागे हैं और न ही हाथ पर हाथ रख कर बैठे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य में दोनों समुदायों में खाई पाटने में काफी समय लगेगा। संघ प्रमुख के इस वक्तव्य के बाद भले ही राजनीति की जा रही हो लेकिन केन्द्र सरकार जातीय विभाजन को जल्द से जल्द पाटने के लिए दोनों समूहों से बातचीत का मार्ग प्रशस्त करने के प्रयासों में जुटी है।

हरियाणा चुनावी मुद्दों से मिल रहे हैं सत्ता-विरोधी संकेत

हरियाणा विधानसभा चुनावों के लिए विपक्षी इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबंधन की बातचीत टूटने के बाद से कांग्रेस के जीत के सपनों को सेंध लगी है। आप ने प्रत्याशियों की दो-दो सूची जारी कर दी है, सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान भी कर दिया है। फिर भी दोनों दलों में कुछ लोग हैं, जो अभी गठबंधन की उम्मीद छोड़ने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि यही गठबंधन कांग्रेस की जीत का बड़ा कारण माना जा रहा है। इस गठबंधन के टूटन से भाजपा की निराशा के बादल कुछ सीमा तक छंटते हुए दिखाई दे रहे हैं। लेकिन भाजपा की जीत अभी भी निश्चित नहीं मानी जा रही है। भले ही 'आप' को दूर रखकर हरियाणा कांग्रेस की राज्य इकाई खुश हो रही हो, लेकिन इसका फायदा भाजपा को ही होने वाला है क्योंकि 'आप' प्रत्याशियों को जहां भी, जितने भी वोट मिलने वाले हैं, वे जाएंगे कांग्रेस के खाते से ही। इस त्रिकोणीय संघर्ष का फायदा भाजपा को ही मिलेगा।

ललित गर्ग

हरियाणा विधानसभा चुनाव के मतदान की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आती जा रही है, राजनीतिक दलों में उठापटक हो रही है, दलबदल का सिलसिला जारी है, गठबंधन टूट रहे हैं जो नये जुड़ रहे हैं। प्रदेश में तीसरी बार सरकार बनाने को आतुर भाजपा के सामने इस बार चुनौतियां कम नहीं हैं, वही कांग्रेस लोकसभा चुनाव में मिली सफलता से अति-उत्साहित दिखाई दे रही है, आम आदमी पार्टी भी सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित करने में जुटी है। हरियाणा में तू डाल-डाल, मैं पात-पात की कशमकश जोरों से चल रही है। विनेश और बजरंग पहलवान को शामिल करके कांग्रेस खुशियां मना रही थी, लेकिन 'आप' से हो रहा समझौता टूटते ही कांग्रेस की खुशियां कुछ हद तक फीकी दिखाई देने लगीं। फिर भी भूपिंदर सिंह हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस हरियाणा में अपनी बहुमत की सरकार बनाने का दावा कर रही है। भाजपा भी यहां अपनी सरकार बचाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। इस बार हरियाणा के चुनावों पर समूचे देश की नजरे लगी है।

हरियाणा कांग्रेस एवं उसके नेता प्रारंभ से ही स्वतंत्र चुनाव लड़ने के पक्ष में रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस नेताओं के मुताबिक, दस वर्षों की सत्ता-विरोधी लहर के मद्देनजर भाजपा 2019 से कमजोर स्थिति में है, जब उसे 90 सीटों की विधानसभा में 40 सीटें ही मिल पाई थीं। हाल ही में सम्पन्न लोकसभा चुनावों के नतीजे भी संकेत दे रहे हैं जहां पिछली बार की दसों सीटों की जगह उसे सिर्फ 5 सीटें मिलीं। आप को कांग्रेस के साथ गठबंधन में यहां एक लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ने का मौका मिला था, लेकिन वह हार गई थी। इसी स्थिति को देखते हुए ही प्रदेश कांग्रेस आप के साथ गठबंधन को पूरी तरह गैर जरूरी मान रहा है। लेकिन कांग्रेस का राष्ट्रीय नेतृत्व राजनीति गणित को देखते हुए आप के साथ गठबंधन को लेकर निरन्तर प्रयास करता रहा। यही कारण दोनों दल गठबंधन के लिए बातचीत की मेज पर बैठे। राहुल गांधी अब लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं और उनकी प्राथमिकता यह है कि राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष के इंडिया गठबंधन की एकजुटता और उसकी मजबूती में किसी तरह की कमी न दिखे ताकि केंद्र सरकार और भाजपा पर उसका दबाव बना रहे। हरियाणा में आप पार्टी कोई चमत्कार घटित करने की स्थिति में नहीं है। उसकी भूमिका सत्ता के गणित को प्रभावित करना मात्र है। कुछ सीटें उसके खाते में जा सकती है, जिसका रोल भविष्य की सत्ता की राजनीति में हो सकता है। अरविन्द केजरीवाल के जातीय गणित के कारण 'आप' पार्टी कांग्रेस को भारी नुकसान पहुंचा सकता है तो कुछ नुकसान भाजपा का भी कर सकती है। कम वोटों के अंतर से होने वाली जीत-हार में 'आप' पार्टी का असर साफ दिखने वाला है। देर से ही सही, हो सकता है कांग्रेस नेतृत्व को यह बात समझ में आ जाए, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होगी। हालांकि चुनाव परिणाम आने पर ही असल माजरा समझ आएगा, लेकिन यह तय है कि भाजपा को दस साल के राज के बावजूद कमजोर नहीं माना जा सकता।

लोकसभा चुनाव में भाजपा की सीटों में आई कमी के बाद विपक्ष को जो थोड़ी धार मिली है, उसका जो मनोबल बढ़ा था, उसके मद्देनजर ये चुनाव अहम माने जा रहे हैं। हरियाणा के बाद महाराष्ट्र और झारखंड में भी चुनाव होने हैं। दिल्ली विधानसभा के चुनाव भी ज्यादा दूर नहीं हैं। ऐसे में हरियाणा विधानसभा चुनाव में अगर इंडिया गठबंधन साथ मिलकर मजबूती से लड़ता और अच्छी जीत दर्ज करा पाता तो उसका असर न केवल आने वाले विधानसभा चुनावों पर बल्कि पूरे विपक्ष के मनोबल पर पड़ने वाला था। इंडिया गठबंधन के कारण सबसे ज्यादा नुकसान भाजपा को ही झेलना पड़ता है। इसलिये इस गठबंधन की मजबूती ही भाजपा के लिये असली चुनौती है। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों को याद करें तो इस पर लगभग आम राय है कि वहां कांग्रेस को प्रदेश नेतृत्व के अति आत्मविश्वास का नुकसान हुआ। असल सवाल विपक्षी वोटों के बंटवारे का है। जिस तरह से आप प्रत्याशियों की सूची जारी कर रही है, उससे साफ है कि वह इसी पहलू की ओर इशारा कर रही है कि उसे सीटें भले न आएं, कांग्रेस को कई सीटों का नुकसान तो हो ही सकता है। भाजपा लम्बे समय से हरियाणा में कमजोर बनी हुई है, भले ही सरकार उसी की हो। अपनी लगातार होती कमजोर स्थितियों में सुधार लाने एवं प्रदेश में भाजपा को मजबूती देने के लिये ही लोकसभा चुनाव से ठीक पहले मनोहर लाल के स्थान पर ओबीसी वर्ग के नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बनाकर सत्ता विरोधी कारकों को कम करने की कोशिश की थी, लेकिन भाजपा को उसका पूरा लाभ नहीं मिल सका। इसके मुख्य कारण सत्ता विरोधी वातावरण बना तो किसानों व बेरोजगारों की नाराजगी बड़ी चुनौती बन कर सामने आयी। भाजपा द्वारा पेश किए गए तीन विवादास्पद कृषि कानून हरियाणा में विवाद का मुख्य मुद्दा बने हुए है। राज्य के किसानों ने इन कानूनों का विरोध किया, उनका दावा है कि ये उनकी फसल की बिक्री और आय पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। केन्द्र की अग्निपथ योजना भी इन चुनावों में एक विवादास्पद मुद्दा बनी हुई है। इसने राज्य के युवाओं में चिंता पैदा कर दी है। आलोचकों का मानना है कि यह स्थायी भर्ती से दूर जाने का कदम है, जिससे सैनिकों के लिए रोजगार में अस्थिरता पैदा होती है। इन चुनावों में बेरोजगारी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, राज्य की बेरोजगारी दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में सरकारी नीतियों पर काफी बहस चल रही है, जिससे यह चुनावों में एक केंद्रीय मुद्दा बन गया है। पहलवानों से जुड़ा मामला और बृज भूषण शरण सिंह पर लगे आरोप भी हरियाणा चुनाव में अहम मुद्दा बन गए हैं। पहलवानों ने सिंह पर उन्हें न्याय और सुरक्षा प्रदान करने में विफल रहने का आरोप लगाया है, जिससे हरियाणा में राजनीतिक परिदृश्य में एक नया आयाम जुड़ गया है। हरियाणा में पहलवानों की सबसे अधिक संख्या और कुश्ती में एक मजबूत परंपरा होने के बावजूद, समर्थन की कथित कमी पर चिंता है। खेलो इंडिया पहल में, जिसका उद्देश्य जमीनी स्तर पर खेलों को बढ़ावा देना है, गुजरात को सबसे अधिक बजट आवंटित किया गया, जिससे हरियाणा के खेल समुदाय में असंतोष पैदा हुआ। यह मुद्दा राज्य में एथलीटों के लिए संसाधनों और समर्थन के वितरण में कथित असंतुलन को उजागर करता है। इन स्थितियों में विनेश और बजरंग पहलवान के कांग्रेस में शामिल होने का पार्टी को लाभ मिलेगा। हरियाणा चुनाव में उठाये जा रहे मुद्दों पर गौर करे तो ये संकेत भाजपा के लिये संकट का कारण बन रहे हैं। कुल मिलाकर इस बार हरियाणा के चुनावों में लड़ाई कई दलों के लिये आरपार की है। 'अभी नही तो कभी नहीं'- हरियाणा का सिंहासन छूने के लिये सबके हाथों में खुजली आ रही है। इसमें हरियाणा के मतदाता की जागरूकता, संकल्प एवं विवेक ही प्रभावी भूमिका अदा करेंगा।

शख्सियत

कुछ लोगों का जीवन भी बड़ा ही अद्भुत होता है वे अपने लिए कभी जी ही नहीं पाते उनका अपना मूल्य दूसरा ही जान पाते हैं,ऐसी ही शख्सियत समाज में सेवा का बीड़ा उठाकर अपने कर्तव्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं ऐसे ही लोग समाजसेवी कहलाते हैं

सरला जैन
(समाजसेविका)

नमस्कार मित्रों हमारी आज की शख्सियत कॉलम की आदर्श हैं हमारी बड़ी बहन सरला जैन जोकि एक समाजसेविका भी हैं इसके साथ ही सामाजिक व धार्मिक क्षेत्रों में अपना एक अलग स्थान बनाए रखती हैं। राजस्थान के सिंहद्वार अलवर में श्रावक श्रेष्ठी श्री नेमीचन्द जैन के यहां 20 सितम्बर 1964 को एक बालिका ने जन्म लिया। सौभाग्यवश यह दिन जैन समाज के महापर्व अनन्त चतुर्दशी का था। शुभ दिन, शुभ बेला में जन्मी कन्या विलक्षण प्रतिभा से युक्त किन्तु सहज एवं सरल व्यक्तित्व की धनी होने के कारण नामकरण सरला हुआ जो विद्यालय एवं महाविद्यालय में सरला जैन के नाम से विख्यात हुआ। बालिका सरला विद्यालय एवं महाविद्यालय काल में सृजन, कला एवं सेवा अभिरूचि गुणों से परपूर्ण थी। आर्य कन्या महाविद्यालय अलवर से कला संकाय में हायर सेकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण की। विद्यालय काल से सास्कृतिक गतिविधियों में विशेष भागीदारी रखते हुए आपने डिबेट, नृत्य, गायन आदि विधाओं में विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करते हुए अनेक पुरस्कार एवं मेडल प्राप्त किये। चित्रकला पेंटिंग द्वारा मानवीय संवेदनाओं एवं सूक्ष्म मनोभावों को केनवास पर अंकित करना आपकी विशिष्ट अभिरुचि थी। मेधावी सरला प्रारम्भ में चिकित्सक बनकर पीड़ित मानवता की सेवा करना चाहती थी किन्तु धर्मपरायण पिता श्री ने चिकित्सा शिक्षा में जीवादि हिंसा की प्रक्रिया को रेखांकित किया तथा उनकी इच्छा को सम्मान देते हुए इन्होंने महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय में प्रवेश लिया तथा वाणिज्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। महाविद्यालय काल में भी अभिनय, गायन, नृत्य आदि विधाओं में भागीदारी अनवरत रूप से जारी रही। महाविद्यालय छात्र संघ में पदाधिकारी रहते हुए नेतृत्व गुण को पुष्पित एवं पल्लवित किया। समाज सेवा की प्रबल इच्छा को साकार करने हेतु आपने राजस्थान प्रशासनिक सेवा को माध्यम बनाना चाहा तथा इस परीक्षा की विधिवत तैयारी प्रारम्भ की। फिर एक बार पितृ आज्ञा को शिरोधार्य कर आपने विवाह बंधन मो बंधना स्वीकार किया तथा 23 नवम्बर 1985 को श्री एन के जैन के साथ विवाह सूत्र में बंध गई। पति महोदय राजकीय राजर्षी महाविद्यालय अलवर में लेखाशास्त्र विषय के प्राध्यापक थे जिन्होने कालांतर में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की और तदुपरान्त राजस्थान वाणिज्यिक कर सेवा में चयनित होकरए प्रशासनिक सेवा के आपके स्वप्न को मूर्तरूप प्रदान किया। दिगम्बर जैन महासमिति महिला प्रकोष्ठ अलवर के, विगत 20 वर्षों से निरन्तर अध्यक्ष रहते हुए आपने प्रदेश स्तर पर आयोजिक महिला उत्थान एवं जैन धर्म के प्रचारए प्रसार का बीड़ा उठा रखा है तथा जैन महिलाओं को धर्म एवं जैन संस्कृति से जोड़े रखने का अनवरत प्रयास जारी है। संगीत में विशारद उपाधि प्राप्त कर आपने जैन भजन गायकी को अपना कर्मक्षेत्र बनाया तथा विभिन्न जैन मंचों/आयोजनों पर जीवंत गागकी के साथ-साथ चार सीडी जारी की। जैन भजन गायकी में सरला जैन एक हस्ताक्षर के रूप में विख्यात है। मंच उदघोषक के रूप में आपने विशेष योग्यता का प्रदर्शन करते हुए राजस्थान के राज्यपाल श्री अंशुमान सिंह तथा माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलौत के अलवर में आयोजित कार्यक्रमों सहित अनेक प्रशासनिक, सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों का सफल संचालन कर आत्म प्रशंसा प्राप्त की। ऑल इण्डिया रेडियों वर्तमान में प्रसार भारती अलवर केन्द्र पर आकस्मिक उदघोषिका के रूप में 1993 से सेवाएं प्रदान कर रही है।

जय हिन्द
रूपक शर्मा

आज का इतिहास

12 सितंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- फ्रांस के राजकुमार लुई और इंग्लैंड के राजा हेनरी तृतीय ने 1217 में शांति समझौते पर हस्ताक्षर किये।
- तैमूर लंग 1398 में सिंधु नदी के तट पर पहुंचा।
- स्वीडन और पोलैंड ने 1635 में संघर्ष विराम संधि पर हस्ताक्षर किये।
- लॉर्ड कॉर्नवालिस 1786 में गवर्नर जनरल बना।
- पहला टाइपराइटर 1873 में ग्राहकों को बेचा गया।
- फ्लोरिडा में 1928 को भीषण तूफान से 6000 लोगों की मौत।
- अमेरिकी सेना ने 1944 को पहली बार जर्मनी में प्रवेश किया।
- अमेरिका के 35वें राष्ट्रपति जॉन एफ केनेडी ने 1953 में जैकलीन बुविये से शादी की थी।
- तत्कालीन सोवियत संघ का रॉकेट 'लूना 2' 1959 में चांद पर पहुंचा।
- भारतीय तैराक मिहिर सेन ने 1966 में डार्डनेलेस जलडमरूमध्य को तैर कर पार किया।
- अल्बानिया ने 1968 में खुद को वारसा संधि से अलग करने की घोषणा की।
- पूर्व और पश्चिम जर्मनी को 1990 में एकीकृत करने के लिए अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस, सोवियत संघ, पूर्व और पश्चिम जर्मनी ने समझौते पर हस्ताक्षर किये।
- अंतरिक्ष शटल एसटीएस 48 (डिस्कवरी 14) का प्रक्षेपण 1991 में हुआ।
- 43.5 करोड़ मील लम्बी यात्रा के उपरांत 'मार्स ग्लोबल सर्वेयर' यान मंगल की कक्षा में 1997 को पहुँचा, संयुक्त राष्ट्र के कार्यों की वार्षिक रिपोर्ट में 48 वर्षों बाद कश्मीर का ज़िक्र पहली बार नहीं किया गया।
- न्यूयार्क में 2000 को अंतर्राष्ट्रीय आयुर्वेद सम्मेलन प्रारम, उत्तर-पश्चिम अंतर्राष्ट्रीय समुद्री मार्ग से लिए एक महत्त्वपूर्ण समझौते पर भारत, ईरान एवं रूस के बीच समझौता।

विशेष आलेख

मोबाइल, इंटरनेट बच्चों बुजुर्गों के लिए जितना उपयोगी उतना ही विनाशक

संजीव ठाकुर

बच्चों एवं बुजुर्गों के लिए मोबाइल,इंटरनेट वर्तमान युग में जितना उपयोगी है उतना ही उनकी आंखों, शरीर एवं मानसिक विकारों के लिए विनाशक भी है। आज इसके बिना शिक्षा स्वास्थ्य तकनीकी में कार्य नहीं किया जा सकता है पर दूसरी तरफ मनुष्य के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव भी मोबाइल इंटरनेट और कंप्यूटर से पड़ने लगा है। टेलीफोन, मोबाइल, इंटरनेट के अविष्कार के बाद मानवीय संवार माध्यम के अविष्कार के बाद संवार विज्ञान के इतिहास में अत्यंत समीचीन तथा भविष्य का एक तूफानी विकास है। विभिन्न संवार माध्यमों के आपस में जुड़े कंप्यूटर एवं विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का समूह कंप्यूटर नेटवर्क कहा जाता है, और इन्हीं कंप्यूटर नेटवर्क का विश्व स्तरीय अंतरजाल को अंग्रेजी में इंटरनेट कहा जाता है। अमेरिका में एक दूसरे के सूचना माध्यमों को जोड़कर जानकारी गुप्त रूप से आदान-प्रदान करने के लिए 1969 में अमेरिका में कंप्यूटर में अपारनेट की स्थापना की गई थी। इसी परिकल्पना के साथ कंप्यूटर नेटवर्क, आगे चलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नेटवर्क इंटरनेट के रूप में परिवर्तित हो गया। इंटरनेट का सार्थक उपयोग समाज में शिक्षा संगठन और भागीदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण पॉजिटिव ट्रैक होने के साथ एक चमत्कारिक परिवर्तन समाज में आया है। आज लोगों के शौक खेलना, पढ़ना ,संगीत सुनना, चित्र बनाना ,फोटोग्राफी परिवर्तित होकर 90% लोगों के इंटरनेट सर्फिंग, संगीत सुनना और चित्र बनाने जैसे शौक इंटरनेट से मोबाइल अथवा कंप्यूटर के माध्यम से पूरे किए जा रहे हैं। विश्व में जनसंख्या के हिसाब से 4 अरब लोग इंटरनेट कंप्यूटर तथा मोबाइल के माध्यम से सुबह शाम इस्तेमाल कर रहे हैं। भारतीय परिपेक्ष में 140 करोड़ की अनुमानित जनसंख्या वाले देश में लगभग 60% लोग मोबाइल और इंटरनेट का उपयोग कर एक दूसरे से जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं। इंटरनेट एक ऐसा सेवक है जो मोबाइल के माध्यम से आपके सभी आदेशों का पालन करने के लिए दिन रात उपलब्ध है। मोबाइल और कंप्यूटर में उपयोग होने वाला इंटरनेट एक ऐसा अंतरजाल है जिस का अविष्कार सूचनाओं को साझा करने के उद्देश्य किया गया था और अब सूचना प्रौद्योगिकी के इस वर्तमान काल में दस्तावेजों एवं ध्वनी माध्यम के साथ वीडियो का आदान प्रदान करना भी इंटरनेट के माध्यम से संभव हो गया है। हवाई जहाज की, होटल की, किताबों की और व्यापार बढ़ाने की योजनाओं की बुकिंग इंटरनेट द्वारा घर बैठे कंप्यूटर या मोबाइल से किया जा सकता है। सरकार की प्रशासनिक कार्यों से लेकर व्यापार ,शिक्षा के नव अवसर भी इंटरनेट के माध्यम से पूर्ण किए जाने लगे हैं।

इंटरनेट ने पूरे विश्व को एक दूसरे के एकदम करीब लाने के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी में एक चमत्कारिक परिवर्तन लाया है। भारत में इस इंटरनेट या अंतरजाल ने जहां पूरे भारत को एक करके रख दिया है वहीं दूसरी तरफ इंटरनेट की सेवाएं जो एयरटेल आइडिया, डोकोमो, टाटा,जिओ और बीएसएनएल जैसी कंपनियां भारतीय उपभोक्ताओं को शहर से लेकर गांव तक अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। दूसरी तरफ पूर्व में जहां गरीब उपभोक्ता 10 से लेकर 100 तक आसानी से रिचार्ज करा लिया करता था ,अब इंटरनेट की कंपनियां 200 से लेकर 1000 तक बात करने की सुविधा के साथ इंटरनेट की सुविधा भी साथ में उपलब्ध करा रहे हैं जो सीधे-सीधे आम उपभोक्ता के लिए उनकी आर्थिक स्थिति में सेंध मारने जैसा कार्य है। हालांकि यह सेवाएं स्वैच्छिक हैं, उपभोक्ता इंटरनेट की सेवाएं लेना चाहे तो ले अन्यथा केवल बातचीत करने की सेवाएं सी ले सकता है,पर एक बार इंटरनेट इस्तेमाल करने की आदत पड़ने के बाद उपभोक्ता इसका आदी होने लगता है। अब स्थिति यह है कि सीधा 28,58,89 दिनों के लिए इंटरनेट के साथ बात करने की सुविधा महंगी दरों में उपलब्ध कराई जा रही है। जिससे गरीब उपभोक्ता की जेबों में हमला कर उनका मासिक बजट बिगाड़ने का काम हो रहा है, इस तरह से बात करने की सुविधा के साथ इंटरनेट भी दिया जाना भारत के ग्रामीण क्षेत्र में गरीब व्यक्ति को और भी गरीबी के दलदल में धकेलने जैसा ही है। यह सभी कंपनियों का गरीब उपभोक्ता के जेबों में सीधे-सीधे पैसे निकालने का सुनियोजित षड्यंत्र की तरह कर रही है। भारत के हर तीसरे व्यक्ति के पास एंड्रइड या स्मार्टफोन उपलब्ध है और यह बड़ी कंपनियां हर माह इन उपभोक्ताओं को आवश्यक रूप से इंटरनेट उपलब्ध कराने के पैकेज देकर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयास कर रही है, इस पर प्रभावी नियंत्रण अति आवश्यक है। इस तरह के मोबाइल रिचार्ज पर सरकार को कड़ा कानून बनाकर इस के नियमन पर नियंत्रण रखना होगा। यह एक तरह की उपभोक्ताओं की परोक्ष तथा अदृश्य भावनाओं से खेल कर उनके बजट से आर्थिक लाभ लेने की सुनियोजित योजनाएं हैं ,जिनमें तत्काल नियंत्रण की आवश्यकता होगी। भारत में इंटरनेट सेवा की शुरुआत भारत संचार निगम लिमिटेड ने वर्ष 1995 की थी अब एयरटेल, रिलायंस, टाटा इंडीकॉम, वोडाफोन, जैसी दूरसंचार कंपनियां इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराती है। विज्ञान की प्रकृति के साथ-साथ सूचना संवार माध्यम में आशातीत वृद्धि हुई है। इंटरनेट के माध्यम से न केवल उच्च शिक्षा प्राप्त की जा सकती बल्कि रोजगार प्राप्ति के लिए सहायक होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में कहा जाता है कि इंटरनेट दुनिया के सबसे बड़ा पुस्तकालय है यहां सभी पुस्तकें पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं। इंटरनेट की एक को ही देखकर हमें भारतीय संदर्भ में आम उपभोक्ताओं के आर्थिक बजट को भी ध्यान में रखकर इंटरनेट उपलब्ध कराने वाली एजेंसियों पर नजर रख बातचीत करने के लिए सेवाएं उपलब्ध कराने के साथ इंटरनेट उपलब्ध कराना एक विकल्प रखना चाहिए । अन्यथा सीधा-सीधा इंटरनेट कंपनियां भारतीय आम उपभोक्ताओं का बजट बिगाड़ने का काम ही कर रही है। इसके अलावा इंटरनेट से बच्चों तक अवांछित नग्न दृश्य भी इंटरनेट आसानी से उपलब्ध कराकर उनके भविष्य से खिलवाड़ भी कर रहा है। लोग इंटरनेट का दुरुपयोग कर अश्लील साइटों को देखने और सूचनाओं को चुराने में भी सकते इससे साइबर अपराधों में वृद्धि हुई है भयादोहन की घटनाएं भी बार-बार इंटरनेट के माध्यम से आम उपभोक्ताओं को परेशान कर रही है। अतः भारतीय उपभोक्ताओं को यह सलाह है कि इंटरनेट का ज्ञान की तरह उपयोग करें ,कूड़ेदान की तरह नहीं। यदि इसका सही उपयोग ज्ञान के सागर में गोता लगाने के लिए किया जाए और ज्ञान उपलब्ध हो सके तो इससे अच्छी कोई बात नही हो सकती। बस इसके आर्थिक पक्ष पर भी समुचित नजर रखी जानी चाहिए।

आज का राशिफल

[illegible]

मेष
आपको पेट सम्बंधी कोई तकलीफ हो सकती है। किसी रिश्ते में आगे बढ़ने से पहले आपको बेहद ध्यान रखना होगा। आज आप नए काम की शुरुआत कर सकेंगे। यात्रा टालने की सलाह आपको दी जाती है।

वृष
निर्णय न ले पाने के कारण नए काम शुरू नहीं कर पाएंगे। आज आप सम्बंधों में औपचारिकता रखें, नहीं तो मनमुटाव होने की संभावना है। व्यवहार में जिद्दीपन छोड़ दें। प्रवास न करना हितकर है। परिजनों के साथ वाद-विवाद में न उतरें।

मिथुन
आज का दिन मिश्रित फलदायी है। आज आपको वाणी और व्यवहार में संयम रखने की सलाह दी जाती है। अपने छिपे हुए शत्रुओं से संभलकर रहें। ज्योतिष और आध्यात्मिक बातों में आज आपकी रुचि रहेगी। यात्रा, प्रवास टालें।

कर्क
किसी भी महत्वपूर्ण विषय पर आज निर्णय न लें। दोपहर के बाद तन और मन की प्रसन्नता रहेगी। परिजनों के साथ आनंद-उल्लास में समय व्यतीत होगा। मित्रों, स्नेहीजनों से उपहार मिलने से मन खुश होगा। आर्थिक लाभ होगा। अचानक धन खर्च होने की संभावना है।

सिंह
अधूरे कामों को पूरा करने के लिए अच्छा समय है। आपके परिवार में आनंद और उत्साह का वातावरण होगा। अपने काम में यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेंगे। लोगों के साथ संपर्क के दौरान स्वभाव को शांत रखना आवश्यक है।

कन्या
आप कुछ अधिक ही इमोशनल रहेंगे। नौकरीपेशा लोग चिंता में रहेंगे। जमीन, जायदाद के कामों में सावधानी रखें। आज आपको किसी भी काम में बिना सोचे-समझे भाग नहीं लेना है। साथियों के साथ अच्छी तरह से समय गुजरेगा। आज आपका मन दुविधाओं में उलझा रहेगा।

तुला
प्रवास की संभावना है। आप मौज-मस्ती में समय व्यतीत कर सकेंगे। आपको शारीरिक एवं मानसिक खुशियों का अनुभव होगा। आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यापारी अपने व्यापार को आगे बढ़ा सकेंगे।

वृश्चिक
भावनात्मक संबंधों में आप नरम रहेंगे। मित्रों एवं स्वजनों से भेंट होगी। भाई-बहनों से लाभ होगा। विरोधियों का सामना कर पाएंगे। आध्यात्मिक बातों में सिद्धि मिलेगी। ध्यान से मन शांत बना रहेगा।

धनु
प्रवास में अनपेक्षित बाधाएं खड़ी हो सकती हैं। आज किसी भी नए काम की शुरुआत ना करें। आध्यात्मिक सिद्धियों के प्राप्त होने का योग हैं। आज आपके जीवनसाथी के साथ संबंध अधिक प्रगाढ़ होंगे। उनके साथ रोमांस के पल गुजारेंगे।

मकर
प्रियजनों के साथ हुई मुलाकात सफल रहेगी। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। आनंददायक प्रवास की संभावना है। उत्तम वैवाहिक सुख की अनुभूति होगी। आज का दिन कुछ कष्टदायक है, इसलिए आपको संभलकर चलना चाहिए।

कुंभ
आप शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। मन किसी चिंता में रहेगा। परिजनों के साथ मनमुटाव के प्रसंग बन सकते हैं। स्वभाव में उग्रता तथा आवेश के कारण किसी से विवाद न हो इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें।

मीन
वाणी पर संयम रखें, नहीं तो विवाद की संभावना बनी रहेगी। आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकेंगे। विरोधियों के समक्ष विजय प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले लोग लाभ प्राप्त कर सकेंगे। किसी बात की चिंता आपको रह सकती है। माता के स्वास्थ्य की चिंता आपको रह सकती है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,इमीपुरा रोड खण्डवा,निवाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतीक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तनुजा पठान"। प्रधान संपादक-राम बिलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन नं.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com "पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। गुरुवार, 12 सितंबर 2024

सांच को आंच नहीं

सेबी की प्रमुख माधवी पुरी बुच पर लगे रहे आरोपों का सिलसिला जैसे थमने का नाम नहीं ले रहा। हालांकि ये सब अभी आरोप ही हैं, जो साबित नहीं हुए हैं। इसके बावजूद इनसे संदेह का माहौल बन रहा है, जो ठीक नहीं है। भारत आज दुनिया की पांचवीं बड़ी इकॉनमी है और यहां का शेयर बाजार भी दुनिया के शीर्ष मार्केट्स में शामिल है। बड़े पैमाने पर यहां विदेशी निवेशक पैसा लगाते आए हैं, जिसके समय के साथ और भी बढ़ने की आशा है।

सेबी चीफ पर गंभीर आरोप

अच्छी शुरुआत के बावजूद | याद किया जा सकता है कि सेबी प्रमुख के पद पर माधवी पुरी बुच की नियुक्ति की खबर अपने साथ काफी पॉजिटिविटी लेकर आई थी। वह इस पद पर नियुक्त होने वाली पहली महिला तो थीं ही, पहली बार प्राइवेट सेक्टर के किसी फाइनैंस प्रफेशनल को यह पद दिया गया था। जाहिर है, उनसे उम्मीदों का स्तर भी काफी ऊंचा था। ऐसे में उनका कार्यकाल जिस तरह के विवादों में घिरता दिख रहा है, वह वाकई निराशाजनक है।

सेबी की साख | जहां तक बात जवाबी कदमों की है तो उस पर राय बंटी हुई है। एक खेमा विरोधियों और आरोप लगाने वालों का है जिनकी मांग है कि माधवी पुरी बुच को तत्काल सेबी चीफ का पद छोड़ देना चाहिए। दूसरी तरफ ऐसे लोग भी हैं जो मानते हैं कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है और इस तरह पद छोड़ देने से विरोधियों के सामने घुटने टेक देने का संदेश जाएगा जो अच्छा नहीं है। लेकिन माधवी पुरी बुच की व्यक्तिगत छवि से ज्यादा बड़ा सवाल शेयर बाजार नियामक सेबी की साख और उसकी विश्वसनीयता का है।

जांच की निष्पक्षता | अगर यह मान भी लिया जाए कि माधवी पुरी बुच पर लगाए गए सारे आरोप गलत हैं और जैसा कि उनका दावा है, उन्होंने सेबी प्रमुख के तौर पर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह पूरी सचाई और ईमानदारी से किया है तो यह बात स्थापित कैसे होगी? निष्पक्ष जांच ही इसका एकमात्र रास्ता है। मगर जांच की निष्पक्षता तब तक सुनिश्चित नहीं की जा सकती जब तक कि माधवी पुरी बुच खुद सेबी प्रमुख के पद पर बैठी हैं।

नैतिक साहस | समझना जरूरी है कि बाजार नियामक जैसी संस्थाओं की निष्पक्षता जितनी ही जरूरी है उसकी निष्पक्ष छवि। इसलिए सेबी चीफ जैसे पद पर बैठे व्यक्ति को लेकर किसी विवाद की गुंजाइश न रहे तो बेहतर। इसके लिए बाजार के डगमगाने या लुढ़कने का इंतजार करना सही नहीं होगा। सीधी बात है, उनके ऊपर गंभीर आरोप लगाए गए हैं और उन्हें पद से अलग हटकर जांच का सामना करने का नैतिक साहस दिखाना चाहिए।

साड्डी दिल्ली

विदेशी नाम क्यों

विवेक शुक्ला

मुमकिन है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी हालिया पोलैंड यात्रा के दौरान वहां के प्रधानमंत्री डॉनल्ड टस्क को बताया हो कि नई दिल्ली के दिल में एक सड़क पोलैंड के महान खगोलशास्त्री निकोलस कोपरनिकस के नाम पर है। 1973 तक इसका नाम होता था लिटन रोड। रॉबर्ट लिटन 1876-1880 के दौरान भारत में वायसराय थे। लिटन रोड का नाम बदलने के लिए पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह ने खासी मशक्कत की थी। नटवर सिंह, जिनका बीते महीने निधन हुआ, 1970 के दशक के आरंभ में भारत के पोलैंड में राजदूत थे। पोलैंड में जब 1973 में निकोलस कोपरनिकस की 550 वीं जयंती मनाई जा रही थी, तब वह वहीं थे। उन्होंने उस वक्त भारत सरकार से गुजारिश की थी कि नई दिल्ली की किसी सड़क का नाम निकोलस कोपरनिकस के नाम पर रखना सही रहेगा। पर यह आसानी से नहीं हुआ। फिर नटवर सिंह ने एक खत सीधे प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को लिखा। वह बताते थे- 'मैंने अपने पत्र में कहा कि पोलिश खगोलशास्त्री के नाम पर राजधानी की किसी सड़क का नाम रखा जाना चाहिए। हम कम से कम निकोलस कोपरनिकस के नाम पर एक सड़क का नाम तो रख ही सकते हैं।' नटवर सिंह की सलाह पर लिटन रोड का नाम बदल दिया गया।

आप कह सकते हैं कि निकोलस कोपरनिकस के बाद राजधानी में संसार के कई नायकों के नामों पर सड़कों के नाम रखे जाने लगे। इनमें दक्षिण अफ्रीका के महानायक नेल्सन मंडेला, मिस्र के नेता गमाल आब्देल नासेर, मार्क्स, लेनिन, स्टालिन की साम्यवादी परंपरा की एशियाई कड़ी हो चि मिन्ह, बांग्लादेश के संस्थापक बंगबंधु मुजीब उर रहमान शामिल हैं। अफसोस कि मुजीब की मूर्ति को बांग्लादेश में तोड़ दिया गया। दरअसल ब्रिटिश सरकार ने नई दिल्ली का 13 फरवरी, 1931 को उद्घाटन करने से पहले ही यहां की सड़कों के नाम इतिहासकार पर्सिवल स्पीयर की सलाह पर रखे थे। देश आजाद हुआ तो जाहिर है कि लोकतंत्र की बयार बहने लगी। तब सरकार ने अलबुर्कर रोड का नाम कर दिया तीस जनवरी मार्ग। आप जानते हैं कि तीस जनवरी का खास मतलब है। गांधी जी की इसी दिन, 1948 को अलबुर्कर रोड के बिड़ला हाउस में हत्या की गई थी। बेशक, यह लुटियंस दिल्ली की पहली सड़क थी जिसका नाम बदला गया था। अफोंसो दे अलबुर्कर (1453–1515) गोवा के गवर्नर थे। उन्हीं के नाम पर थी यह सड़क। उनका जन्म पुर्तगाल में हुआ था और निधन गोवा में। मतलब ब्रिटिश सरकार ने नई दिल्ली की कुछ सड़कों के नाम कुछ गैर-ब्रिटिश और गैर-भारतीय हस्तियों के नामों पर भी रखे थे।

एकदा

वो समय आ ही गया

चेकोस्लोवाकिया के मोराविया में एक बालक मेंडल खेती के काम में पिता की मदद किया करता था। वह अपने पिता से अनगिनत सवाल पूछता। जैसे, 'फूलों के अलग-अलग रंग और आकार क्यों होते हैं?' 'इस सेब के पेड़ में लाल सेब हैं, जबकि उस पेड़ के सेब पीले हैं, ऐसा क्यों?' तब इसका जवाब किसी को नहीं पता था। बाद में मेंडल पादरी बन गया। यह 1847 की बात है। चर्च ने मेंडल की दिलचस्पी विज्ञान में देखकर उसे पढ़ने वेनिस यूनिवर्सिटी भेज दिया। वहां से वापस आकर मेंडल अल्थुन के स्थानीय स्कूल में फिजिक्स पढ़ाने लगे। वह चर्च में ही रहते और अपने बगीचे की देखभाल करते। बगीचे में मेंडल के दिमाग में फिर से वही सवाल आने लगे कि कुछ मटर के दाने चिकने और बाकी झुर्रीदार क्यों हैं? मेंडल ने मटर पर अध्ययन करने की सोची, क्योंकि उसका जीवनकाल छोटा होता है। आठ साल तक उन्होंने मटर के अलग-अलग दस हजार पौधे लगाए। अपने प्रयोगों में उन्होंने पौधों को लंबा या नाटा करने में कामयाबी पा ली। फिर मटर की संकर नस्लें भी बनाईं। उन्होंने इस पर अपनी रिसर्च भी पब्लिश की, लेकिन उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। मेंडल ने कहा, कभी न कभी उनका वक्त जरूर आएगा। उनकी मृत्यु के कई साल बाद 1900 में तीन यूरोपीय वैज्ञानिकों के हाथ मेंडल का पर्चा लग गया। पता चला कि आनुवंशिकी की खोज 17वीं सदी में ही हो गई थी। ऐसी खोज, जिस पर आज सबसे एडवांस वैज्ञानिक रिसर्च होती हैं, और जिससे मानव जाति के बड़े से बड़े रहस्य खुलते हैं। आखिर मेंडल का समय आया और ऐसा आया कि पूरी दुनिया पर छा गया। तब दुनिया ने जाना कि आनुवंशिकी की खोज करने वाले ग्रेगर जोहान मेंडल ही थे।

AI Image

संकलन : रमेश यादव

BJP नेतृत्व ने एक तिहाई से ज्यादा विधायकों के टिकट काटे तो उभर आया नेताओं का असंतोष

हरियाणा में अपनों ने ही बढ़ा दी है मुश्किल

राज कुमार सिंह

टिकट वितरण के समय राजनीतिक दलों में असंतोष नया नहीं, लेकिन हरियाणा BJP में जो कुछ हो रहा है, उसे असंतोष नहीं, बगावत कहना सही होगा। जैसे-जैसे प्रत्याशियों की लिस्ट आती गई, बगावत के स्वर मुखर होते गए।

कई विधायकों के टिकट कटे | हरियाणा BJP आज जिस तरह की बगावत का सामना कर रही है, शायद ही यहां उसके साथ पहले ऐसा हुआ हो। इसकी वजह भी है। चार मंत्रियों समेत 15 विधायकों के टिकट काटना सामान्य तो हरगिज नहीं है। 90 सदस्यीय हरियाणा विधानसभा में BJP को पिछली बार 40 सीटें मिली थीं। यानी एक-तिहाई से भी ज्यादा विधायकों के टिकट काट दिए गए। हालांकि यह ऐसी ही रणनीति दूसरे राज्यों में उसके लिए कारगर साबित हो चुकी है।

सत्ता विरोधी भावना की काट | यह सत्ता विरोधी भावना कम करने के लिए ही किया गया होगा। दस साल के शासन के बाद लोगों में सत्ता विरोधी भावना होना अस्वाभाविक नहीं, पर सिर्फ चेहरे बदलने से उसकी काट हो जाएगी, यह भी मानकर नहीं चला जा सकता। सत्ता विरोधी भावना सरकार के विरुद्ध होती है, लेकिन उसका स्थानीय प्रतिनिधि होने के नाते सबसे ज्यादा खामियाजा विधायक को भुगतना पड़ता है। मतदाता तो बेहतर काम की अपेक्षा रखते ही हैं, कार्यकर्ता भी विधायक पर अपने कामों के लिए दबाव बनाते हैं। जब अपेक्षाएं पूरी नहीं होतीं तो नाराजगी की कीमत विधायक को चुकानी पड़ती है - कभी टिकट कटने के रूप में तो कभी चुनावी हार के रूप में।

नेताओं की अनदेखी | टिकट कटने पर निराशा में आरोप भी लगाए जाते हैं और राजनीतिक विकल्प भी खोजे जाते हैं, पर कैमरे पर रोते हुए दिखना नया ट्रेंड है। अन्य दल से या निर्दलीय चुनाव लड़ने पर सहानुभूति कितनी मिलेगी, चुनाव परिणाम बताएंगे, लेकिन पुराने नेताओं की अनदेखी का संदेश तो गया ही है। ऐसे फैसलों का बचाव करना तब और मुश्किल होता है, जब पार्टी अन्य दलों या क्षेत्रों से लाकर उम्मीदवार थोप देती है। मसलन, स्वास्थ्य मंत्री बनवारी लाल अपने दायित्व का निर्वाह ठीक से नहीं कर रहे थे, तो उन्हें पहले ही मंत्रिमंडल से हटा दिया जाना चाहिए था। मगर उनके स्वास्थ्य निदेशक को नौकरी छोड़ते ही उनकी जगह टिकट दे देना कैसे सही ठहराया जा सकता है?

सीट बदलते सीएम | निर्दलीय विधायक रणजीत सिंह चौटाला को पहले मनोहर लाल खट्टर और नायब सिंह सैनी सरकार में मंत्री बनाया गया। फिर लोकसभा चुनाव में हिसार से BJP उम्मीदवार बना दिया गया, लेकिन हारने के बाद अब उनकी परंपरागत सीट से विधानसभा टिकट लायक भी नहीं समझा गया। विधायक मोहन लाल बड़ौली को सोनीपत से लोकसभा चुनाव लड़वाया गया। हारने पर प्रदेश BJP अध्यक्ष भी बना दिया गया, लेकिन अब वो विधानसभा चुनाव भी नहीं लड़ रहे। मुख्यमंत्री नायब सिंह का दस साल में चौथी बार सीट बदलना भी चर्चा का विषय है।

हरियाणा में टिकट बंटवारे को लेकर BJP के अंदर मनमुटाव दिख रहा है

बगावत की वजह

- 40 में से 15 विधायकों के टिकट कटे
- निर्दलीयों और दलबदलुओं को तवज्जो
- बड़े नेताओं को अपनी उपेक्षा की पीड़ा

दलबदलुओं पर दांव | आरोपों के चलते सोनीपत के सांसद रमेश कौशिक का टिकट काटा गया था, अब गन्नौर से उनके भाई को टिकट दे दिया गया है। सवाल उठ रहा है कि क्या कांग्रेस से BJP में आए रमेश कौशिक के भाई से बेहतर कोई पुराना निष्ठावान नेता पार्टी में नहीं था?

राज्यमंत्री की पीड़ा | इस बार टिकट तो केंद्रीय राज्य मंत्री राव इंद्रजीत सिंह की बेटी आरती को भी मिल गया, लेकिन लगातार उपेक्षा से उनकी पीड़ा अब मुखर होने लगी है। तीसरी बार केंद्र में मोदी सरकार बनने पर इसी साल जून में फिर राज्य मंत्री बनाए जाने पर इंद्रजीत ने अपना दर्द बयां किया था कि वह शायद केंद्र में सबसे लंबे समय तक राज्य मंत्री रहने का रेकॉर्ड बना चुके हैं। ध्यान रहे कि 2014 में मोदी की लहर में कमल थामने से पहले राव इंद्रजीत सिंह कांग्रेस सरकार में भी केंद्र में राज्य मंत्री रहे थे।

सीएम पद का सपना | अहीरवाल इलाके के सबसे बड़े नेता माने जाने वाले इंद्रजीत का सपना मुख्यमंत्री बनना है। अब जब BJP हरियाणा में भी सत्ता की हैट्रिक की कवायद में जुटी है, वह याद दिला रहे हैं कि अगर अहीरवाल ने पूरा जन समर्थन नहीं दिया होता तो मनोहर लाल दो बार मुख्यमंत्री नहीं बन पाते। लेकिन BJP उनका मुख्यमंत्री बनने का सपना पूरा करेगी, इसके आसार नहीं दिखते। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से ले कर केंद्रीय ऊर्जा एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल तक कह चुके हैं कि सरकार बनने पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ही होंगे।

राह के रोड़े | ऐसे में राजनीति के पुराने खिलाड़ी राव के दांव अभूतपूर्व अंतर्कलह से ग्रस्त BJP की चुनौतियां बढ़ाएंगे ही। हरियाणा में सत्ता की 'हैट्रिक' अपने आप में दुष्कर चुनौती है। उस राह में अंतर्कलह और भितरघात के रोड़ों से निपटना BJP के लिए आसान तो हरगिज नहीं होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

क्या मिसाल बनेगी iPhone की क़ामयाबी

गुरचरण दास

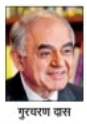

Apple के iPhone 16 के लॉन्च के साथ भारत के निर्माण क्षेत्र को बड़ी ताकत मिली है। नया 'मेड-इन-इंडिया' iPhone पूरी दुनिया में अब उपलब्ध होगा, यह बहुत बड़ी बात है। भारत दुनिया की तेजी से बढ़ती विशाल अर्थव्यवस्था हो सकता है, लेकिन यहां पर्याप्त नौकरियां नहीं पैदा हो रहीं। लेबर सर्वे से स्थिति का सही आकलन नहीं हो पाता, क्योंकि लोग बेरोजगार नहीं हैं। बहुत सारे लोग लो-प्रोडक्टिविटी वाली और अस्थायी नौकरियों में फंसे हुए हैं, जो उनकी उम्मीदों के मुताबिक नहीं हैं।

निर्माण में पीछे | भारत ने सर्विस सेक्टर में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन औद्योगिक सफलता वैसी नहीं रही। मैन्युफैक्चरिंग का योगदान देश की अर्थव्यवस्था में 15% से भी कम है। यह सेक्टर सिर्फ 11% लोगों को रोजगार देता है और दुनिया के कुल सामानों का सिर्फ 2% निर्यात करता है। ऐसा कोई देश नहीं, जिसने मैन्युफैक्चरिंग और एक्सपोर्ट के बिना तरक्की की हो। चीन इसका ताजा उदाहरण है।

नौकरियों के मौके | Apple ने हाल ही में iPhone बनाने के लिए भारत को दूसरे स्थान के रूप में चुना। इसे तेजी से मिली सफलता ने कई धारणाओं को तोड़ा है। साल 2021 तक iPhone पूरी तरह से चीन में बनता था। अब जब भारत में इसका निर्माण शुरू हुआ है तो यह पहले ही डेढ़ लाख सीधी नौकरियां पैदा कर चुका है। करीब साढ़े चार लाख अप्रत्यक्ष नौकरियों के मौके भी बने हैं। हालांकि अब भी iPhone के ग्लोबल प्रॉडक्शन का यह सिर्फ 14% हिस्सा ही है। अमेरिकी ब्रोकरेज फर्म जेपी मॉर्गन का अनुमान है कि 2026 तक यह आंकड़ा 26% तक बढ़ सकता है।

चीन को मौका | एक सफल निर्यात केंद्र बनने के लिए भारत को iPhone के पार्ट्स बनाने वाली कंपनियों को भी अपने यहां लाना होगा। कुल मूल्य का करीब 85% हिस्सा पार्ट्स का होता है और ये ज्यादातर चीन की हैं। इनके आने से नौकरियों के ज्यादा मौके बनेंगे, ज्यादा स्किल और टेक्नॉलजी आएगी। हमारी छोटी और मझोली कंपनियां भी वैश्विक बाजार से जुड़ सकेंगी।

भ्रम टूटा | इस कहानी से पहली सीख, यह भ्रम छोड़ना होगा कि भारत एक बड़ा बाजार है। सच यह है कि बड़े ग्लोबल ब्रैंड 'मेक इन इंडिया' के लिए कतार में नहीं खड़े। जब Apple ने भारत में उत्पादन शुरू किया, तब यहां iPhone की बिक्री दुनिया की सिर्फ 0.5% थी। आज कई बड़े ब्रैंड अपने ग्लोबल सप्लाई बेस को फैलाना चाहते हैं, लेकिन भारत उनकी लिस्ट में टॉप पर नहीं है, क्योंकि मैन्युफैक्चरिंग के लिए छवि उतनी अच्छी नहीं है। दूसरे, कोई भी देश अपने घरेलू बाजार के दम पर पर्याप्त रोजगार पैदा नहीं कर सकता। चीन हमसे कहीं बड़ा मार्केट है और उसे भी सफल होने के लिए एक्सपोर्ट की जरूरत पड़ी। एक्सपोर्ट में सफल होने के लिए ग्लोबल वैल्यू चेन से जुड़ना जरूरी है। यह तभी संभव है, जब भारत आयात-निर्यात पर लगने वाले टैक्स (टैरिफ) को कम करे।

AI Image

कॉमन रूम

बड़ी कंपनियां बुलाएं | हमें यह सबक भी मिलता है कि नौकरियां पैदा करने में मुख्य भूमिका MSMEs की नहीं, बड़ी कंपनियों की होती है। हां, कुल मिलाकर छोटी कंपनियां ज्यादा रोजगार देती हैं। सरकार को उन ग्लोबल ब्रैंड्स को टारगेट करना चाहिए, जो चीन में जोखिम को लेकर चिंतित हैं। नौकरियों की भरमार के लिए भारत का पहला कदम यही होना चाहिए कि मैन्युफैक्चरिंग में बड़ी कंपनियों को आकर्षित किया जाए।

ट्रेनिंग जरूरी | भारत को कुशल लोग चाहिए। iPhone की फैक्ट्रियों में ज्यादातर महिलाओं को सिर्फ 4-6 हफ्ते की ट्रेनिंग की जरूरत पड़ी। ITI और स्किल मिशन जैसे हमारे ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट्स को इंडस्ट्री के साथ मिलकर काम करना होगा। iPhone की कहानी दिखाती है कि प्रॉडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव सही से कैसे लागू हों।

भरोसे की बात | सरकार और कंपनियों के बीच भरोसा बहुत जरूरी है। iPhone पर दोनों पक्षों के बीच 15 महीने बातचीत चली थी। इस सफलता से हमें यह सबक मिलता है कि भारत अच्छा मैन्युफैक्चरिंग केंद्र बन सकता है। अब सरकार की जिम्मेदारी है कि वह इस सफलता को कपड़े, जूते, खिलौने, फूड प्रोसेसिंग जैसे क्षेत्रों में दोहराए।

टाइम मशीन

कर्णावती ने दुश्मनों की काटी नाक

महारानी कर्णावती की कहानी शुरू होती है उनके पति और गढ़वाल के राजा महिपत शाह की असमय मृत्यु के बाद। महिपत ने 1622 में राजा श्याम शाह के बाद गद्दी संभाली थी। महिपत ने मुगलों की सत्ता को चुनौती देने के अलावा तिब्बत जैसी मुश्किल भूमि पर भी तीन बार आक्रमण किया। नौ वर्ष तक राज करने के बाद 1631 में रणभूमि में ही उनकी मौत हो गई। तब उनका बेटा पृथ्वीपत शाह था कुल सात बरस का। राजकाज संभालने का जिम्मा कर्णावती के हिस्से आया।

दुश्मनों की नजर | हिमाचल के एक राज परिवार से ताल्लुक रखने वाली कर्णावती को शासन की कला घुट्टी में पिलाई गई थी। उन्होंने देहरादून और मसूरी जैसी जगहों के अलावा समूचे राज्य में कृषि और सामाजिक कल्याण के अनेक कामों को अंजाम दिया। लेकिन, तब किसी भी राज्य में स्त्री द्वारा शासन किए जाने को एक बड़ी कमजोरी के रूप में देखा जाता था। बताया जाता है कि तत्कालीन कुमाऊंनी राजा बाजबहादुर चंद के मुगलों से अच्छे संबंध थे। उसने कांगड़ा में नियुक्त मुगल अधिकारी नजाबत खान से कहा कि गढ़वाल पर आक्रमण करने का इससे बेहतर समय और नहीं हो सकता।

चाल में उलझाया | नजाबत खां ने मुगल बादशाह शाहजहां को आक्रमण के लिए तैयार कर लिया। 30 हजार सैनिकों को लेकर नजाबत खान ने गंगा नदी पार की और देहरादून के समीप रायवाला नामक जगह पर अपने खेमे गाड़े। यह बात है वर्ष 1635 की। रानी कर्णावती तक संदेश भेजा गया, या तो 10 लाख रुपये का नजराना अता करो या एक बड़े आक्रमण के लिए तैयार रहो। अपने सलाहकारों के कहने पर रानी ने एक लाख रुपये तुरंत देकर बाकी रकम शीघ्र देने का वादा कर दिया। हालांकि बची रकम भेजी नहीं। इससे क्रुद्ध नजाबत खान ने फौज को लेकर श्रीनगर की तरफ बढ़ना शुरू किया। श्रीनगर में गढ़वाल रियासत की राजधानी हुआ करती थी।

घिर गए मुगल | 17वीं शताब्दी में भारत आए इटली के निकोलाओ मानूची ने कर्णावती और मुगलों के संघर्ष के बारे में विस्तार से लिखा है। मुगल सेना ने जैसे-जैसे शिवालिक की तलहटी से ऊपर पहाड़ों की तरफ चढ़ना शुरू किया, उसका सामना हुआ छापामार गुरिल्ला शैली में आक्रमण करने वाले गढ़वाली सैनिकों से। शिवालिक की पहाड़ियों के बीच बनी असंख्य चट्टियों में छिपे इन सिपाहियों ने मुगल सेना की नाम में दम कर दिया। जब समूची मुगल फौज पहाड़ियों के बीच अच्छी तरह से घिर गई, तो दोनों तरफ के रास्ते बंद कर दिए गए। मुगल सैनिक न ऊपर जा सकते थे और न नीचे। अफरातफरी का माहौल बनने लगा। यह देखकर नजाबत खान ने रानी से इजाजत मांगी कि वह रास्ते खोलकर उसे अपनी सेना को वापस ले जाने दें।

AI Image

सबसे बड़ी हार | रानी कर्णावती चाहती थीं कि मुगलों को कभी न भूलने वाला सबक मिले। उन्होंने नजाबत खान से कहा कि वह अपने सैनिकों को वापस ले जा सकता है, लेकिन सभी को अपनी नाक कटानी होगी। जान खतरे में देखकर शाहजहां के सैनिकों ने हथियार डाल दिए और नाक कटा ली। निकोलाओ मानूची ने दर्ज किया है कि इस घटना से शर्मसार होकर शाहजहां ने फैसला किया कि वह फिर कभी गढ़वाल पर आक्रमण नहीं करेगा। उधर, नजाबत खान ने रास्ते में ही आत्महत्या कर ली। इस घटना के बाद रानी कर्णावती को नक्कटी रानी यानी दुश्मन की नाक काट लेने वाली रानी कहकर संबोधित किया जाने लगा।

क़दम-दर-क़दम

प्रणव प्रियदर्शी

ग्लोबल स्टार्टअप डेटा प्लेटफॉर्म ट्रैक्सन (Tracxn) की सह-संस्थापक नेहा सिंह महिला उद्यमियों की दुनिया में ऊंचा मकाम रखती हैं। लेकिन उन्हें उस दिन का इंतजार है जब विमिन लीडर्स की बढ़ती संख्या का प्रतिशत देखने के बजाय लोग इंडस्ट्री पर उनके सामूहिक प्रभाव का जश्न मनाएंगे। बहरहाल, महिला उद्यमी की शुरुआत तक पहुंचने के लिए भी उन्हें काफी मशक्कत करनी पड़ी। हालांकि उनका इरादा शुरू से अपना कुछ बनाने का था, लेकिन इस लक्ष्य की ओर जाने का कोई रास्ता उनके सामने मौजूद नहीं था। लिहाजा, 2013 में Tracxn की स्थापना से पहले उन्हें कंसल्टिंग से लेकर वेंचर कैपिटल इन्वेस्टिंग तक काफी कुछ करना पड़ा। लेकिन अब Traxcn में 11 साल के अपने अनुभव की बदौलत वह नई उम्र की लड़कियों को आत्मविश्वास के साथ कहती हैं कि ऊंचे सपने देखने में कभी संकोच मत करो, तुम खुद यह देखकर हैरान हो जाओगी कि तुममें कितना कुछ कर गुजरने की, कितना कुछ हासिल करने की क्षमता है। रास्ते में चुनौतियां तो आती ही हैं, उनकी राह में भी कम नहीं आईं। जो चीज सबसे ज्यादा मददगार साबित हुई, वह थी समस्या को हल करने के नजरिए से देखने की आदत। उन्होंने शुरू में ही अपने दिमाग को ऐसे ढाल लिया था कि जब भी कोई समस्या सामने आती, उनकी नजर इस बात पर नहीं जाती कि यह कितनी बड़ी बाधा है, इसे हल कैसे किया जा सकता है। उनका कहना है कि बतौर लीडर आपकी सबसे बड़ी परीक्षा यह होती है कि आप प्रतिभाशाली लोगों को इकट्ठा कर पाते हैं या नहीं। इसके लिए पहली जरूरत है अपनी कमजोरियों को पहचानने की, तभी आप उन लोगों को तलाशेंगे, जिनमें वह ताकत है जो आपमें नहीं। मगर यह काम एक दिन का नहीं है। इसीलिए यह याद रखना भी उतना ही जरूरी है कि उद्यमिता सौ या पचास मीटर की दौड़ नहीं मैराथन है, जिसमें जल्दबाजी से कुछ हासिल नहीं होना।

नेहा सिंह

आधी दुनिया

रीडर्स मेल www.edit.nbt.in

एकतरफा आरोप

संपादकीय पृष्ठ पर 11 सितंबर को प्रकाशित लेख 'चुनावी मुद्दों से मिल रहे कैसे संकेत' पढ़ा। अफजल गुरु को दी गई फांसी अगर लोगों के बीच आज भी विवाद का केंद्र बनी हुई है, तो इसे एकतरफा ढंग से नहीं देखा जाना चाहिए। यह बात याद रखने की है कि अदालत के फैसले वक्त की कसौटी पर भी कसे जाते हैं। कभी-कभी वक्त के साथ ऐसे नए तथ्य खुलते हैं जिनसे उन फैसलों पर दोबारा विचार करने की जरूरत महसूस होने लगती है। इसीलिए अदालत के फैसले का हवाला देते हुए भी कुछ सावधानी बरतने की जरूरत है। जहां तक संसद पर हमले की बात है तो भूलना नहीं चाहिए कि हमला बीजेपी सरकार के समय में ही हुआ था जिसे रोक पाने में वह विफल रही थी।

शुभम कौल, ईमेल से

शानदार प्रदर्शन

पेरिस पैरालिंपिक्स में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन ना केवल ऐतिहासिक बल्कि अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। भारत ने कुल 29 मेडल जीते, जिनमें 7 स्वर्ण, 9 सिल्वर और 13 ब्रॉन्ज हैं। इन्हीं खिलाड़ियों की बदौलत भारत ने पैरालिंपिक्स में 18वां स्थान प्राप्त किया, जो गर्व का विषय है। केंद्र और राज्य सरकारों को भी इन सभी खिलाड़ियों को उचित प्रोत्साहन राशि देनी चाहिए, ताकि भारत के दिव्यांग खिलाड़ी विश्व स्तर की सारी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर देश का नाम रोशन करें।

वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

मेडिक्लेम पर GST

इंश्योरेंस सेक्टर में जीएसटी दरों में कमी करना जरूरी है। केंद्रीय मंत्री गडकरी भी इसके लिए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को पत्र लिख चुके हैं। आम लोग तो इसकी मांग कर ही रहे हैं। मेडिक्लेम पॉलिसी पर 18% GST लगता है। एक तो इसका प्रीमियम महंगा, ऊपर से GST की मार। जीएसटी काउंसिल की बैठक में हालांकि इस पर सहमति बनने की बात कही जा रही है, लेकिन फैसला नहीं किया जा सका है। इस मसले को अब और नहीं टाला जना चाहिए।

चंद्र प्रकाश शर्मा, रानी बाग

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र

बच्चों के लिए सोशल मीडिया बैन करेगा ऑस्ट्रेलिया- एक खबर
- जो मीडिया सोशल होना सिखाए, उसे बैन क्यों करना?

मनोज सैनी

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें hindi.speakingtree.in

परम आनंद है तो समझिए ईश्वर आपके पास हैं

सलिल पांडेय

कुछ लोग निराकार ईश्वर में आस्था रखते हैं। उनके लिए ईश्वर का कोई आकार नहीं होता है, बल्कि वह कण-कण में समाया होता है। वहीं कुछ लोग साकार ईश्वर के प्रति आस्था रखते हैं। साकार और निराकार आस्थाएं संसार के लगभग हर देश, हर कबीले में हैं। प्रश्न है कि ईश्वर का प्रकट होना क्या है? यह कैसे संभव हो कि हम उनका प्रकटीकरण देख सकें। साकार ईश्वर के प्रति आस्था रखने वाले अधिकांश श्रद्धालुओं के मन में यह आकांक्षा होती है कि पूजा-पाठ करते समय भगवान साक्षात प्रकट हो जाएं। ताकि उनके स्वरूप का दर्शन हो सके और अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति की प्रार्थना वह सीधे प्रकट हुए भगवान से कर सकें। इसके लिए श्रद्धालु घर के निजी पूजा स्थल पर स्थापित प्रतिमा से लेकर मंदिरों तथा तीर्थस्थलों तक में जब दर्शन करता है तो यही चाहता है कि मूर्ति से कोई शक्ति दिव्य रूप में प्रकट हो। ऐसा होने पर उसे महसूस होगा कि उसकी आराधना सही चल रही है। धर्मग्रंथों की अनेक कथाओं में भी ऐसा उल्लेख किया गया है कि ईश्वर जब किसी श्रद्धालु पर प्रसन्न हुए तो प्रकट होकर उसे वरदान भी दिया।

प्रश्न है कि यह प्रकट होना क्या है। इसे किस रूप में समझा जाना चाहिए? कहीं कुछ प्रकट होने का तथ्य जानना हो तो प्रकृति पर नजर डालनी चाहिए। सूरज दिन में प्रकट होता है जबकि चांद-सितारे रात में प्रकट होते हैं। सूरज, चांद और सितारों का प्रकट होना दर्शाता है कि उनका अस्तित्व पहले से विद्यमान है। ग्रहों की चाल से ये लुप्त और प्रकट होते हैं। प्रकृति में प्रकटीकरण के लिए खेतों पर भी ध्यान देना चाहिए। किसान खेतों में बीज और खाद डालता है, उनकी पानी से सिंचाई करता है। ऐसी स्थिति में बीज डालने के पहले जिस कृषि भूमि में सिर्फ मिट्टी दिखाई पड़ती थी, उसमें फसल लहलहाने लगती है। यानी फसलों का प्राकट्य हो गया है। इसी तरह किसी वृक्ष के प्राकट्य की आकांक्षा है तो किसी दूसरे वृक्ष के पास ध्यान लगाकर यह प्रार्थना नहीं की जाती कि हे वृक्ष, मेरी इच्छा के अनुसार एक दूसरा वृक्ष उत्पन्न हो जाए। इसके लिए जिस तरह के वृक्ष की इच्छा है, उसका बीज या कलम लाकर उसके लिए उचित भूमि चयनित कर उसका रोपण करना पड़ेगा और समय-समय पर उसे सींचते भी रहना पड़ेगा।

कुछ ऐसी ही ईश्वर के भी प्राकट्य की प्रक्रिया है। भगवान बाहर की किसी मूर्ति में नहीं बल्कि शरीर की भूमि के अंतरतम में पहले से ही विद्यमान हैं। शरीर के मन-मस्तिष्क से लेकर रोम-रोम में भगवान बसते हैं। इसी पंच भौतिक शरीर में बीज रूप में विद्यमान भगवान को योग-ध्यान के जरिए सिंचित किया जाए तो अंदर से उनका प्राकट्य होकर रहता है। इसके लिए अभ्यास एवं साधना की जरूरत पड़ती है।

इस साधना से जब सप्त चक्रों में से कोई एक ही चक्र स्पंदित होने लगता है तब यह भ्रम स्वतः टूटने लगता है कि मूर्ति में से भगवान प्रकट होते हैं। अभ्यास की प्रक्रिया जारी रही और कुंडलिनी जागरण की स्थिति आ गई तो परम आनंद की अनुभूति होने लगती है। यह परम आनंद का अहसास ही ईश्वर का प्राकट्य है। इसी को संत कबीर 'कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूंढे बन माहि, ऐसे घट-घट राम हैं दुनिया देखे नाहिं' दोहे के माध्यम से कहा है।

चिंतन

नापाक हरकतों से बाज नहीं आएगा पाकिस्तान

पाकिस्तान सरकार दिवालिया होने से बचने के लिए दुनियाभर के देशों से भीख मांग रही है। उसे वहां से कुछ फौरी राहत भी मिली है, परंतु वह बस इतनी है जो रोजाना के सरकारी खर्च तो चल रहे हैं, परंतु जनता की दयनीय दशा में कोई खास सुधार नहीं हो सकता। पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था उस मरीज की तरह हो चुकी है, जो मृत समान ही है, पर वेंटिलेटर लगाकर उसे आधिकारिक रूप से मृत घोषित किए जाने से बचाकर रखा गया है। इसके बावजूद नापाक पड़ोसी अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा। वो रह रहकर भारत को छेड़ने की हरसंभव कोशिश करता रहता है। उसका हर संभव प्रयास होता है कि किसी भी तरह से भारत में अशांति फैलाई जाए। उसकी कोशिश है कि किसी कश्मीर में आतंकवाद को दोबारा जिंदा किया जाए। भारत का अमन-चैन उससे सहन नहीं होता, लेकिन हमारे सुरक्षा बलों की चौकसी उसके हर मंसूबे को नाकाम कर रही है। एक के बाद एक कश्मीर में आतंकी मारे जा रहे हैं। बुधवार को भी जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में सुरक्षाबलों से एनकाउंटर में 2 आतंकी मारे गए हैं। आर्मी के फर्स्ट पैरा के जवानों को उधमपुर के खंडरा टॉप के जंगलों में 2-3 आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस के साथ मिलकर सर्च ऑपरेशन चलाया गया। दोपहर 12.50 बजे आतंकियों ने जवानों पर फायरिंग की। जवाब में जवानों ने भी फायरिंग की। करीब चार घंटे चले एनकाउंटर के बाद सुरक्षाबलों ने तीनों आतंकियों को ढेर कर दिया। पाक सेना सीमा पर भी गोलीबारी करके भारत को उकसाने की कोशिशों में लगी रहती है। 10-11 सितंबर की दरमियानी रात 2:35 बजे जम्मू-कश्मीर के अखनूर में पाकिस्तानी जवानों ने बॉर्डर पर सीजफायर का उल्लंघन किया। जवाब में हमारे सीमा सुरक्षा बल के जवानों ने भी फायरिंग की। हमारा एक जवान घायल हो गया है। असल मसला ये है कि 18 सितंबर को जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव की पहले फेज की वोटिंग होनी है। पाकिस्तान को लग रहा है कि कहीं कश्मीर में शांतिपूर्वक सरकार बन गई तो उसके नापाक मंसूबे ध्वस्त हो जाएंगे। 17 अक्टूबर को भी पाकिस्तानी रेंजर्स ने भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर फायरिंग की थी। इसमें दो बीएसएफ जवान घायल हुए थे। घटना इंटरनेशनल बॉर्डर पर हुई थी। जबकि भारत और पाक के बीच युद्धविराम समझौता भी है। भारत और पाकिस्तान ने 25 फरवरी, 2021 को युद्धविराम समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। दोनों देशों ने घोषणा की थी कि वे जम्मू-कश्मीर और अन्य क्षेत्रों में नियंत्रण रेखा पर युद्धविराम पर सभी समझौतों का सख्ती से पालन करेंगे। तब इस्लामाबाद और नई दिल्ली में जारी एक संयुक्त बयान में इसका ऐलान किया गया था। भारत और पाकिस्तान ने शुरुआत में 2003 में युद्धविराम समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन पाकिस्तान समझौते का उल्लंघन करता आया है। फरवरी 2021 में लोकसभा में तत्कालीन केंद्रीय गृह राज्य मंत्री जी किशन रेड्डी ने कहा था कि 2018, 2019 और 2020 में पाकिस्तान के साथ भारत की सीमा पर संघर्ष विराम उल्लंघन के कुल 10,752 मामले हुए थे, जिसमें 364 सुरक्षाकर्मी और 341 नागरिक घायल हुए। 2020 में 5,000 से ज्यादा बार गोलीबारी की घटना हुई, जो एक साल में सबसे ज्यादा थी। साफ है कि पाक अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आएगा। इसके लिए जरूरी है कि उसे कड़े से कड़ा जवाब दिया जाए। एक बार ऐसा जोर का तमाचा मारा जाए कि वो दोबारा ऐसी हरकत करने की हिमाकत करने से पहले सौ बार सोचे।

अब जैविक दूध से श्वेत क्रांति

नवाचार
प्रमोद भार्गव

> बीते 9 वर्षों में देश में दूध का उत्पादन लगभग 57 प्रतिशत बढ़ा है। अब जनता को सबसे बड़ा लाभ जैविक दूध के रूप में मिलने वाला है। पशुधन के बिना मिलने वाला यह जैविक दूध, दूध की कमी पूरी करने के साथ पौष्टिक भी होगा। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने ई-3 (इकोनॉमी, एनवायरमेंट, एम्प्लायमेंट) नीति को जारी करते हुए कहा कि यह नई औद्योगिक क्रांति, जैव तकनीक और बायो मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में होगी। आईटी क्रांति की तरह जैविक दूध और खाद्य सामग्री अभी भले ही लोगों को एक चौंकाने वाली बात लग रही हो, लेकिन भविष्य की जरूरतें इसी से पूरी होंगी। यह दूध केवल जैविक उत्पादों से तैयार होगा। इसमें रसायन का प्रयोग नहीं होगा।

भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार अब जैविक तकनीक के क्षेत्र में नवाचार करने जा रही है। सरकार ने इस सिलसिले में देश में पहली बार ई-3 (इकोनोमी, एनवायरमेंट, एमप्लायमेंट) नीति जारी की है। इसके तहत दूध, खाद्यान्न, पर्यावरण सहित प्रत्येक चुनौती से निपटने की तैयारी है। इस क्षेत्र में फिलहाल जनता को सबसे बड़ा लाभ जैविक दूध के रूप में मिलने वाला है। पशुधन के बिना मिलने वाला यह जैविक दूध, दूध की कमी पूरा करने के साथ पौष्टिक भी होगा। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस ई-3 नीति को जारी करते हुए कहा कि यह नई औद्योगिक क्रांति, जैव तकनीक और बायो मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में होगी।

आईटी क्रांति की तरह जैविक दूध और खाद्य सामग्री अभी भले ही लोगों को एक चौंकाने वाली बात लग रही हो, लेकिन भविष्य की जरूरतें इसी से पूरी होंगी। यह दूध केवल जैविक उत्पादों से तैयार होगा। इसमें रसायन का प्रयोग कतई नहीं होगा। भारत दूध उत्पादन में दुनिया में पहले सोपान पर है और विश्व के कुल दूध उत्पादन में भारत 24 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। बीते 9 वर्षों में देश में दूध का उत्पादन लगभग 57 प्रतिशत बढ़ा है। नतीजतन प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 2022-23 में 459 ग्राम प्रतिदिन हो गई है। 9 वर्ष पहले यह उपलब्धता महज 300 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रतिदिन थी। जबकि कुछ साल पहले दुग्ध उत्पादों के आयात की संभावना जताई जाने लगी थी। किंतु अब पशु संवर्धन के लिए किए गए प्रयास रंग दिखाने लगे हैं। बीते एक दशक में दूध के उत्पादन एवं उत्पादकता में आजादी के बाद से सर्वाधिक वृद्धि हुई है। दूध की उपलब्धता बढ़ी तो भारतीयों के खान-पान की आदत में दूध और उसके उत्पादों का सेवन व खपत भी बढ़ गई। अब प्रत्येक भारतीय दुनिया में औसत खपत में से 65 ग्राम अधिक दूध पीने लगा है। दूध की वैश्विक औसत खपत फिलहाल 394 ग्राम प्रति व्यक्ति है। भारत में दूध पशुपालक उत्पादित करते हैं। उनका यह परंपरागत धंधा है, जिसे वे ज्ञान परंपरा से जानते व सीखते हैं। भारत में दूध, दही, घी और मक्खन का उत्पादन प्राचीन समय से चला आ रहा है।

भगवान कृष्ण की बाल लीलाएं दही, माखन की चोरी और फिर कंस को गोकुल से कर के रूप में दुग्ध उत्पादन नहीं भेजने के विरोध से जुड़ी हैं। दूध को लेकर कृष्ण के नेतृत्व में ग्वाल समाज का दूध के परिप्रेक्ष्य में शायद यह क्रांति का पहला उद्घोष था। इसके बाद ब्रिटिश साम्राज्य में यह विरोध देखने में आया और सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में इसने श्वेत या दुग्ध क्रांति के रूप में जन्म लिया। दरअसल, जिस खेड़ा क्षेत्र से श्वेत क्रांति की शुरुआत हुई थी, वही आजादी के बाद खेड़ा जिला बना और वर्तमान में इसे ही आनंद के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में 30 करोड़ से अधिक गाय एवं भैंस के साथ 2 करोड़ से अधिक भेड़-बकरी आदि पशुओं को पाल-पोसकर यह दूध प्राप्त किया जा रहा है। लेकिन इसकी खपत और जरूरत निरंतर बढ़ रही है।

फिरंगी हुकूमत के दौरान पॉल्सन नाम की ब्रिटिश कंपनी का इस क्षेत्र का दूध खरीदने पर एकाधिकार था। कंपनी दुग्ध उत्पादकों का लगातार शोषण कर रही थी।

इस शोषण की शिकायत किसानों ने सरदार पटेल से की। पटेल शोषण की जानकारी से बेचैन हुए और लौहपुरुष के अवतार में आ गए, उन्होंने तत्काल कंपनी को दूध बेचने से मना कर दिया। उनका मानना था कि जब कंपनी को दूध मिलेगा ही नहीं, तो उसे किसानों की शर्तें मानने को मजबूर होना पड़ेगा। साथ ही पटेल ने सभी किसानों को मिलकर सहकारी संस्था बनाकर स्वयं दूध और दूध के उत्पाद बेचने की सलाह दी। पटेल के इस सुझाव से किसान सहमत हो गए और अंग्रेजों को दूध न देने की चुनौती दे दी। बाद में 1946 में पटेल ने अपने भरोसे के साथ ही मोरारजी देसाई और त्रिभुवन दास पटेल की सहायता से भारत की पहली दुग्ध सहकारी संस्था की स्थापना की। इसे ही बाद में जिला सहकारी दुग्ध उत्पादन संघ के नाम से जाना गया। 250 लीटर दूध का प्रतिदिन कारोबार करने वाली इसी संस्था को आज विश्वव्यापी संस्था 'अमूल' के नाम से जाना जाता है। किसानों की ज्ञान परंपरा और वर्गीज कुरियन के यांत्रिक गठबंधन से इस संस्था ने उपलब्धि का शिखर चूम लिया।

बिना किसी सरकारी मदद के बूते देश में दूध का 70 फीसदी कारोबार असंगठित ढांचा संभाल रहा है। इस कारोबार में ज्यादातर लोग अशिक्षित हैं। दूध का 30 फीसदी कारोबार संगठित ढांचा, मसलन डेयरियों के माध्यम से होता है। देश में दूध उत्पादन में 96 हजार सहकारी संस्थाएं जुड़ी हैं। 14 राज्यों की अपनी दुग्ध सहकारी संस्थाएं हैं। देश में कुल कृषि खाद्य उत्पादों व दूध से जुड़ी प्रसंस्करण सुविधाएं महज दो फीसदी हैं, किंतु वह दूध ही है, जिसका सबसे ज्यादा प्रसंस्करण करके दही, मठा, घी, मक्खन, मावा, पनीर आदि बनाए जाते हैं। इस कारोबार की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे आठ करोड़ से भी ज्यादा लोगों की आजीविका जुड़ी है। बड़े पैमाने पर ग्रामीण सीधे शहरी एवं कस्बाई ग्राहकों तक भी दूध बेचने का काम करते हैं।

वर्ष 2013-14 के दौरान देश में 1463 लाख टन दूध उत्पादन हुआ था, जो 2022-23 में बढ़कर 2306 लाख टन हो गया है। भारत में प्रत्येक वर्ष दूध उत्पादन 5.9 प्रतिशत से ज्यादा की दर से बढ़ रहा है, जबकि दुनिया में दूध की औसत वृद्धि दर्ज प्रतिवर्ष मात्र दो प्रतिशत है। लगभग 150 देशों में भारत के सह दुग्ध उत्पादों की मांग बनी हुई है। पिछले वर्ष 65 लाख टन दुग्ध उत्पादन का निर्यात हुआ था। इस निर्यात के 2024 में और बढ़ने की उम्मीद है। केंद्रीय पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री संजीव बालियान का कहना है कि 'देश की अर्थव्यवस्था में डेयरी सेक्टर का योगदान पांच प्रतिशत है और यह लगभग आठ करोड़ लोगों के रोजगार का बारहमासी मजबूत साधन है।' दूध की इस बड़ी अर्थव्यवस्था में समृद्धि का रास्ता राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अस्तित्व में आने के बाद खुला है। इस योजना की शुरुआत दिसंबर 2014 में हुई थी। लक्ष्य था, वैज्ञानिक तरीके से देसी गो-जातीय प्रजातियों का विकास और संवर्धन।

फलस्वरूप राज्यों में गायों और भैंसों के परंपरागत प्रजनन तरीके से अलग किसानों के दरवाजे पर कृत्रिम गर्भाधान और आईवीएफ सेवाएं उपलब्ध कराईं। इसके नतीजे कारगर निकले। दूध की इस बढ़ती खपत के चलते दुनिया के देशों की निगाहें भी इस व्यापार को हड़पने में लगी हैं। दुनिया की सबसे बड़ी दूध का कारोबार करने वाली फ्रांस की कंपनी लैक्टेल है। इसने भारत की सबसे बड़ी हैदराबाद की 'तिरूमाला डेयरी' को 1750 करोड़ रुपये में खरीद लिया है। भारत की तेल कंपनी ऑइल इंडिया भी इसमें प्रवेश कर रही है। क्योंकि दूध का यह कारोबार विश्वस्तर पर करीब 16 फीसदी की दर से हर साल बढ़ रहा है। अमेरिका भी अपने देश में बने सह उत्पाद भारत में खपाने की तिकड़म में है। हालांकि फिलहाल उसे सफलता नहीं मिली है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)
लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।

सारा संसार

श्रीपुरम गोल्डन मंदिर तमिलनाडु के वेल्लोर शहर में मालाकोडी की पहाड़ियों पर स्थित है। यह मंदिर धन की देवी लक्ष्मी और भगवान नारायण को समर्पित है। सोने से बने इस मंदिर को 100 एकड़ के क्षेत्र में फैलाया गया है। बता दें कि पूरी तरह से शुद्ध सोने से बने इस मंदिर का निर्माण कार्य वर्ष 2007 में पूरा हुआ है।

निरंतर रूप से निखरती है आत्म-प्रतिस्पर्धा

संकलित
दर्शन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए वह अनेक छोटे-बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहता है। समाज का अंग होते हुए, समाज में अपनी पहचान बनाना भी प्रत्येक व्यक्ति का एक उद्देश्य जैसा ही प्रतीत होता है। इन उद्देश्यों, लक्ष्यों व उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए चल रहे अनवरत प्रयत्नों के फलस्वरूप एक सामाजिक प्रक्रिया जन्म लेती है। इस सामाजिक प्रक्रिया का नाम है-प्रतिस्पर्धा। यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो बेहतर प्रदर्शन करने की तीव्र लालसा। यह लालसा एक अबोध शिशु से लेकर एक वृद्ध तक सभी में विद्यमान रहती है। वस्तुतः जब आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता पर्याप्त नहीं होती, तो प्रतिस्पर्धा स्वतः ही जन्म ले लेती है। प्रतिस्पर्धा में कदाचित विरोध व ईर्ष्या की भावनाएं भी अंतर्निहित होती हैं, किंतु ऐसी प्रतिस्पर्धा स्वस्थ नहीं कही जाती। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा वास्तव में उत्कृष्टता का मार्ग प्रशस्त करती है। प्रतिस्पर्धा की यही विशेषता इसे संघर्ष से अलग करती है। एक अन्य विशेष बात यह है कि प्रतिस्पर्धा किसी तंत्र विशेष तक ही सीमित रहती है। एक विशेष तरह की प्रतिस्पर्धा एक विशेष तंत्र में ही दृष्टिगोचर होती है। किसी व्यक्ति के साथ आपकी प्रतिस्पर्धा केवल तभी तक रहती है, जब तक आप उसके साथ किसी तंत्र को साझा करते हैं। किसी व्यक्ति द्वारा वह तंत्र छोड़ते ही प्रतिस्पर्धा स्वतः समाप्त हो जाती है। यह आवश्यक नहीं कि प्रतिस्पर्धा सदैव दूसरे व्यक्ति के साथ ही हो। विवेकशील या विद्वान व्यक्ति की प्रतिस्पर्धा प्रायः स्वयं से होती है।

सफलता के लिए योजना बनाकर काम करें

संकलित
प्रेरणा

जब भगवान विष्णु श्रीकृष्ण रूप में अवतार लेने वाले थे। देवकी और वसुदेव कंस की कैद में थे। कंस ने देवकी-वसुदेव की 6 संतानों का वध कर दिया था। सातवीं संतान के रूप में बलराम देवकी के गर्भ में आए तो भगवान विष्णु ने योगमाया से कहा था कि आप इस सातवीं संतान को देवकी के गर्भ से निकाल कर वसुदेव जी की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ में स्थापित कर दो। इसके बाद कंस को ये सूचना दी जाएगी कि सातवां गर्भ गिर गया है। योगमाया ने ऐसा ही किया। इसके बाद जब आठवीं संतान के जन्म का समय आया तो भगवान ने योगमाया से कहा कि अब मेरे अवतार लेने का समय आ गया है। जब मेरे अवतार का जन्म होगा, ठीक उसी समय आप गोकुल में यशोदा के गर्भ से जन्म लेना। वसुदेव जी कंस के कारागर से निकालकर मुझे गोकुल पहुंचाएंगे और आपको लेकर कंस के कारागार में आ जाएंगे। जब कंस आठवीं संतान को मारने के लिए आएगा तब आप मुक्त हो जाना। भगवान ने जो योजना बनाई थी, उसी के अनुसार श्रीकृष्ण का अवतार हो गया। इस कथा में भगवान ने संदेश दिया है कि जब भी कोई काम करना हो तो उसकी योजना जरूर बनाएं। योजना अच्छी होगी तो सफलता जरूर मिलेगी।

पूर्वांचल
कृष्णमोहन झा

मणिपुर में कठिन चुनौतियों के बीच काम कर रहा संघ

देश के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में पिछले एक साल से जारी हिंसात्मक उपद्रवों के कारण असुरक्षा का जो माहौल बना हुआ है उस पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत कई बार गंभीर चिंता व्यक्त कर चुके हैं। संघ प्रमुख ने मणिपुर की समस्या के समाधान हेतु त्वरित कदम उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। हाल में ही संघ के समर्पित कार्यकर्ता शंकर दिनकर काणे के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में संघ प्रमुख ने कहा कि मणिपुर में असुरक्षा के माहौल में रहकर भी संघ के कार्यकर्ता दोनों समूहों के बीच शांति ,सौहार्द और परस्पर विश्वास कायम करने के लिए रात-दिन काम कर रहे हैं और उन्हें अपने प्रयासों में अब सफलता मिलने लगी है। संघ प्रमुख ने मणिपुर में शिक्षा के प्रचार-प्रसार और राज्य के बच्चों को शिक्षित करने के लिए शंकर दिनकर काणे के सराहनीय योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि वे चालीस साल पहले मणिपुर में शिक्षा की जड़ें मजबूत करने के लिए वहां काफी समय तक रुके और इसी पुनीत भावना से वहां के बच्चों को महाराष्ट्र लेकर आए तथा यहां उनके आवास और शिक्षा के पर्याप्त प्रबंध किए।

मणिपुर में संघ के कार्यों के अच्छे परिणाम सामने आने लगे हैं। संघ प्रमुख ने कहा कि मणिपुर में चालीस साल पहले जो बदतर होते हालात थे, उसमें सकारात्मक बदलाव लाने में काणे जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं का बहुत बड़ा योगदान है जो वहां जाकर वहां का हिस्सा बन गए और बदलाव लाने के लिए समर्पित भाव से जुटे रहे। संघ प्रमुख ने कहा कि पूर्वांचल को पंद्रह साल पहले समस्याओं वाला क्षेत्र कहा जाता था परन्तु अब स्थितियां बदल चुकी हैं। मणिपुर में बहुत बदलाव आया है परन्तु कुछ लोग मणिपुर में अशांति का वातावरण निर्मित कर वहां की प्रगति के मार्ग में बाधा खड़ी करना चाहते हैं लेकिन उनके प्रयास सफल नहीं होंगे। राज्य की जनता समझ चुकी है कि अशांति का माहौल रहते प्रगति नहीं हो सकती। मोहन भागवत ने कहा कि संघ के कार्यकर्ता असुरक्षित माहौल में भी अपने काम में लगे हुए हैं। वे दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर उनके बीच क्रोध और द्वेष को कम करने तथा उनके बीच अविश्वास की खाई को पाटने की कोशिश कर रहे हैं।

संघ के कार्यकर्ताओं को अपनी कोशिशों में लगातार सफलता मिल रही है। संघ के कार्यकर्ताओं को अपने कार्यों से दोनों पक्षों का विश्वास अर्जित करने में कामयाबी मिली है। मणिपुर में सामाजिक समन्वय स्थापित करने और राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने में शंकर दिनकर काणे जैसे समर्पित कार्यकर्ताओं के प्रयास फलीभूत हुए हैं। गौरतलब है कि संघ प्रमुख ने लोकसभा चुनावों के परिणाम घोषित होने के बाद अपने एक भाषण में कहा था कि मणिपुर एक साल से जल रहा है। वहां स्थितियां सामान्य करने के लिए प्राथमिकता से प्रयास करने होंगे। संघ के कार्यकर्ता कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए वहां जिस मुस्तैदी से डटे हुए हैं उसको रेखांकित करते हुए मोहन भागवत ने कहा कि संघ के कार्यकर्ता वहां दोनों पक्षों के लोगों की सेवा कर रहे हैं। केवल एनजीओ यह काम नहीं कर सकते।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

अंतर्मन

आज की पाती

पाकिस्तान का झूठ बेनकाब

पाकिस्तान आतंकवाद की ही नहीं, बल्कि झूठ की भी फैक्टरी है। लेकिन कहते हैं न कि 'सच्चाई छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से, खुशबू आ नहीं सकती कागज के फूलों से।' पाकिस्तान की असलियत सबके सामने आ चुकी है। अब इसकी ड्रामेबाजी नहीं चलने वाली। पाकिस्तान कायरतापूर्ण हरकतें करता आया है। कारगिल युद्ध में भी इसने अपनी कायरता दिखाई थी, इस बात को वहां के सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने कुछ दिन पहले, 6 सितंबर को रक्षा दिवस के दिन माना है। पाकिस्तान ने इस बात को कभी भी सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं किया था कि कारगिल युद्ध में उसकी सीधी भूमिका थी। वो हमेशा ही यह कहता रहा है कि कारगिल युद्ध में उसके यहां के मुजाहिदीन और स्वतंत्रता सेनानियों का काम था। लेकिन अब उसे स्वीकार करना पड़ा है कि यह काम पाक का ही था। - मिलिंद जोशी, बिलासपुर

करंट अफेयर

केन्या में अदाणी समूह के खिलाफ प्रदर्शन

केन्या सरकार और भारतीय उद्योगपति गौतम अदाणी के नेतृत्व वाले अदाणी समूह के बीच हुए एक समझौते के विरोध में बुधवार को देश के मुख्य हवाई अड्डे पर सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के कारण विमानों का परिचालन थमा रहा और सैकड़ों यात्री हवाई अड्डे पर फंसे रहे। सरकार ने कहा है कि अदाणी समूह के साथ निर्माण और संचालन समझौते के तहत जोमो केन्याटा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का नवीनीकरण किया जाएगा और एक अतिरिक्त रनवे एवं टर्मिनल का निर्माण किया जाएगा। समझौते के तहत समूह 30 वर्षों तक हवाई अड्डे का संचालन करेगा। 'केन्या एयरपोर्ट वर्कर्स यूनियन' ने हड़ताल की घोषणा की और आरोप लगाया कि इस समझौते से लोगों के रोजगार जाएंगे और जिनकी नौकरियां बची रहेंगी उन पर 'सेवा की बेहद खराब नियम एवं शर्तें' लगाई जाएंगी। नैरोबी में सेवा देने वाली विमानन कंपनी 'केन्या एयरवेज' ने घोषणा की कि हवाई अड्डे पर जारी हड़ताल के कारण विमानों के परिचालन में देरी होगी और संभवतः परिचालन रद्द करना पड़ेगा। पिछले सप्ताह हवाई अड्डा कर्मचारियों ने हड़ताल पर जाने की चेतावनी दी थी, लेकिन सरकार के साथ वार्ता लंबित रहने के कारण उन्होंने हड़ताल वापस ले ली थी।

ऑफ बीट

सिक्स-पैक एब्स हासिल करना कठिन क्यों है

बहुत से लोग कुछ ऐसा हासिल करने की उम्मीद में जिम जाना शुरू करते हैं, जिसे लंबे समय से स्वास्थ्य और फिटनेस के पैमाने के रूप में देखा जाता रहा है और वह हैं सिक्स-पैक एब्स अर्थात पेट की उभरी हुई मांसपेशियां। किसी भी मांसपेशी के निर्माण के लिए, आपको उच्च प्रोटीन युक्त आहार खाने के साथ-साथ नियमित रूप से वजन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। वजन प्रशिक्षण मांसपेशी प्रोटीन संश्लेषण नामक प्रक्रिया को बढ़ावा देकर काम करता है। चूंकि प्रोटीन हमारी मांसपेशियों के निर्माण खंड हैं, मांसपेशी प्रोटीन संश्लेषण यह सुनिश्चित करता है कि पुराने प्रोटीन जो टूट जाते हैं और हटा दिए जाते हैं, उन्हें बदलने के लिए लगातार नए प्रोटीन बनाए जा रहे हैं। जब आप प्रोटीन युक्त भोजन खाते हैं तो मांसपेशियों में प्रोटीन संश्लेषण भी बढ़ जाता है। लेकिन यदि आप पहले से कुछ वजन प्रशिक्षण करते हैं, तो यह वृद्धि अधिक होगी और यदि आपने कोई व्यायाम नहीं किया है तो उसकी तुलना में लंबे समय तक रहेगा। यदि आप वजन प्रशिक्षण करते हैं और प्रति भोजन कम से कम 20 ग्राम प्रोटीन खाते हैं, तो यह मांसपेशी प्रोटीन संश्लेषण को अधिकतम करता है।

ट्रेंड

कांग्रेस देश विरोधी

देश विरोधी बातें करना और देश को तोड़ने वाली ताकतों के साथ खड़े होना राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की आदत सी बन गई है। मैं राहुल गांधी को बताना चाहता हूं कि जब तक भाजपा है, आरक्षण को कोई छू भी नहीं सकता।
-अमित शाह, केंद्रीय गृहमंत्री

जाति जनगणना अजेय विचार

जाति जनगणना अब एक अजेय विचार है। यह महत्वपूर्ण प्रश्न कि क्या हमारी 90% आबादी का भारत की संस्थागत संरचना - अर्थव्यवस्था, सरकार, शिक्षा - में सार्थक प्रतिनिधित्व है - एक उत्तर की मांग करता है। इसके मूल में, यह निष्पक्षता और न्याय का मुद्दा है।
-राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद

मिलकर खुशी हुई

अमेरिका के एक्जिम बैंक की अध्यक्ष से दिल्ली में बैठक के दौरान मिलकर खुशी हुई। भारत क्वाड का एक प्रमुख सदस्य है और बड़ी संख्या में क्षेत्रों में उच्च स्तर की वित्तीय सहायता के लिए पात्र हो सकता है।
-किरण मजूमदार-शॉ, उद्यमी

आध्यात्मिक सुयोग

सागर यात्रा की पूर्व संध्या पर भगवान वरुण की आरती करके इस आध्यात्मिक सुयोग का शुभारंभ करना मेरे लिए एक सर्वथा नवीन अनुभव था। प्रथम दिन इस जहाज पर भारतवंशियों की संख्या व समृद्धि देखकर बहुत प्रसन्नता हुई।
-कुमार विश्वास, कवि व व्याख्याता

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

दैनिक जागरण
वार-वार दोहराने से भी असत्य कभी सत्य नहीं हो सकता

विमर्श की लड़ाई

राहुल गांधी अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान लगातार ऐसा कुछ कह या कर रहे हैं, जो विवाद का विषय बन रहा है। पहले उन्होंने बेरोजगारी का सवाल उठाकर भारत के मुकाबले चीन की स्थिति बेहतर बताई, फिर यह कहकर हंगामा खड़ा कर दिया कि भारत में लड़ाई इसकी है कि सिख पगड़ी धारण कर सकते हैं या नहीं? इसके साथ ही उन्होंने आरक्षण खत्म करने लायक स्थितियों का जिक्र किया और जब इसका विरोध हुआ तो यह कह दिया कि वह तो इसकी सीमा 50 प्रतिशत से अधिक करना चाहते हैं। सिखों के संदर्भ में उनके बयान को भड़काऊ ही कहा जाएगा और इसे इससे समझा जा सकता है कि खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने उनके कथन को अपने पक्ष में भुनाना शुरू कर दिया। राहुल का यह कहना भी भड़काऊ ही था कि भारत में अन्य भारतीय भाषाओं और उनकी संस्कृति को हिंदी के मुकाबले कमतर बताया जा रहा है। इस पर आश्चर्य नहीं कि अमेरिका में राहुल ने जिस तरह भारत विरोध के लिए कुख्यात लोगों से मुलाकात की, उसका भी विरोध शुरू हो गया है। इस सबसे वह किस तरह बेपरवाह हैं, इसका पता इससे चलता है कि अब उन्होंने अपने इस पुराने बयान को दोहरा दिया कि प्रधानमंत्री मोदी चार हजार वर्ग किमी क्षेत्र पर कब्जा किए चीन से नहीं निपट पाए। यह तय है कि भाजपा नेता और मोदी सरकार के मंत्री इसका भी प्रतिवाद करते हुए राहुल को गलत ठहराएंगे, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या वे आम लोगों को यह संदेश दे पाएंगे कि नेता प्रतिपक्ष संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के फेर में राष्ट्रीय हितों को चोट पहुंचा रहे हैं?

यह एक तथ्य है कि भाजपा विभिन्न विषयों पर राहुल गांधी की तमाम आलोचना के बाद भी अपने पक्ष में विमर्श नहीं खड़ा कर पा रही है। पहले वह कोई विमर्श खड़ा करती थी और कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दल उस पर अपनी सफाई देते हुए दिखते थे। अब इसका उलटा हो रहा है। अब विपक्षी नेता और विशेष रूप से राहुल गांधी कोई गलत-सही मुद्दा उछालते हैं और सत्तापक्ष सफाई देते हुए दिखता है। यह स्थिति लोकसभा चुनावों के समय से ही देखने को मिल रही है। तब राहुल गांधी ने मोदी सरकार पर आरक्षण खत्म करने और संविधान बदलने के जो आरोप उछाले, सत्तापक्ष उनका सही तरीके से प्रतिकार नहीं कर सका। इसका उसे चुनावों में नुकसान भी उठाना पड़ा। जब किसी मामले में कोई पक्ष प्रतिक्रिया देते हुए ही नजर आता है तो वह विमर्श की लड़ाई में कमजोर ही दिखता है। राहुल के रवैये से यह साफ है कि उनके मन में जो भी उलटा-सीधा आएगा, वह उसे बोलेंगे और इसकी परवाह भी नहीं करेंगे कि इससे राष्ट्रीय हित सध रहे हैं या नहीं? ऐसे में भाजपा को यह सोचना ही होगा कि आखिर प्रभावी तरीके से उनका प्रतिकार कैसे किया जाए?

हिमालय का संरक्षण

हिमालय के संरक्षण के लिए उत्तराखंड सरकार विशेष समिति गठित करने जा रही है। यह समिति हिमालयी सरोकारों से जुड़े विषयों को लेकर देश के नामी संस्थानों के विशेषज्ञों के साथ ही हितधारकों से विमर्श कर सरकार को उपाय सुझाएगी। हिमालय को लेकर चिंता और चिंतन के साथ सरकार की पहल स्वागत योग्य है। हिमालयी राज्य होने के नाते उत्तराखंड ने यह संदेश तो दिया ही है कि वह विकास की गति बनाए रखने के साथ ही हिमालय के संरक्षण को लेकर सजग है। उत्तराखंड सरकार ने हिमालय के लिए अलग नीति बनाने की बात नीति आयोग के समक्ष भी मजबूती से रखी है। वर्तमान में हिमालय के महत्व को नए तरह से समझने की जरूरत है। हिमालय से देश-दुनिया को जो मिल रहा है, वह अमूल्य है। जलवायु परिवर्तन के खतरों को देखते हुए हिमालय के जल एवं जंगल के संरक्षण की दिशा में मिलकर प्रयास करने होंगे। इस बात पर गंभीरता से विचार करना होगा कि आने वाली पीढ़ी को विरासत में हम क्या देकर जा रहे हैं। उत्तराखंड में हिमालय के संरक्षण के लिए अनेक कार्य किए जा रहे हैं। राज्य में जलस्रोतों एवं नदियों के पुनर्जीवीकरण की मुहिम छेड़ी गई है। जीईपी (ग्रास एन्वायरमेंट प्रोडक्ट) की शुरुआत की गई है। आर्थिकी एवं पारिस्थितिकी में संतुलन बनाकर विकास कार्य किए जा रहे हैं। गैर सरकारी संगठन भी हिमालय के संरक्षण के लिए जन जागरूकता अभियान छेड़े हुए हैं। हिमालयी सरोकारों के संरक्षण के लिए आवश्यक है कि हर व्यक्ति हिमालय के महत्व को समझे। पहाड़ों में जिस तरह अनियोजित विकास को प्रश्रय मिल रहा है, उसने समस्याएं खड़ी कर दी हैं। इस मानसून सीजन में ही राज्य में 500 से अधिक भूस्खलन जोन सामने आ चुके हैं। राज्य के विकास के लिए हिमालय की आवश्यकताओं को भी समझना होगा।

हिमालय की अपनी आवश्यकताएं हैं और इन्हें समझे बिन सुनियोजित विकास संभव नहीं है

चिंता बढ़ाते मणिपुर के हालात

दिव्य कुमार सोती

मणिपुर में शांति और स्थिरता भारतीय हितों के लिए बेहद अहम है, क्योंकि म्यांमार में चीनी और अमेरिकी खुफिया एजेंसियां अपना जाल बिछाने में लगी हुई हैं

अवधेश राजपूत

पिछले करीब डेढ़ साल से अशांत चल रहे मणिपुर में हिंसा और अशांति ने फिर से सिर उठा लिया। इसके चलते वहां बंद और कर्फ्यू वाले दिन लौट आए हैं। यह भी चिंताजनक है कि वहां खतरनाक ड्रोन और राकेट से हमले होने लगे हैं। इतना ही नहीं, सीआरपीएफ जैसे अर्धसैनिक बल को निशाना बनाया जा रहा है। अराजकता की यह स्थिति तब है जब वहां केंद्रीय सुरक्षा बलों के लगभग 70,000 जवान तैनात हैं। स्पष्ट है कि इतनी बड़ी तैनाती के बावजूद समस्या की जड़ों को पहचान कर उन पर आवश्यक कार्रवाई नहीं हो पाई है। यदि वहां तत्काल प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो स्थिति हाथ से निकल सकती है। ऊपर से म्यांमार में उत्पन्न अस्थिरता के चलते परिस्थितियां और अधिक जटिल एवं खतरनाक होती जा रही हैं। ये नए ड्रोन और राकेट हमले दिखाते हैं कि बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के पतन और अमेरिका समर्थित मुहम्मद यूनुस सरकार के सत्ता में आने से मणिपुर में कुकी अलगाववादियों का हौसला और बढ़ गया है। वे म्यांमार के चिन प्रदेश और भारत में मणिपुर और मिजोरम के कुकी बहुल क्षेत्रों को मिलाकर कुकीलैंड बनाने के अपने मिशन के अगले चरण में प्रवेश कर चुके हैं। इस मुहिम को अमेरिका का समर्थन मिल रहा है। यूं तो अमेरिका दिखावटी तौर पर म्यांमार की सैन्य सरकार के खिलाफ है, लेकिन इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव से अमेरिका में खलबली भी है। इसीलिए बांग्लादेश में अमेरिका ने अपने मनोनुकूल सत्ता परिवर्तन कराया।

जहां मणिपुर में हथियारबंद विद्रोह की आंच बढ़ा दी गई है, वहीं म्यांमार के चिन प्रदेश पर चीन-कुकी उग्रवादी संगठनों के कब्जे के चलते भारत का म्यांमार से भूसंपर्क बाधित हो चुका है। चीन और अमेरिका अपने-अपने द्वारा समर्थित उग्रवादी संगठनों के माध्यम से म्यांमार को अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रों में बांटते जा रहे हैं। भारत इस खेल से बाहर खड़ा और असमंजस में दिखाई देता है। भारत म्यांमार में लोकतंत्र बहाली की बात कहता है, मगर इसका जवाब किसी के पास नहीं है कि देश के तमाम हिस्सों में हथियारबंद गुटों के कब्जे की स्थिति में लोकतंत्र कैसे बहाल होगा? यह भी एक बड़ा सवाल है कि म्यांमार के विघटन की सूरत में हमारे साथ कौन से गुट खड़े होंगे? यह भी कम बड़ी विडंबना नहीं कि चिन प्रदेश पर कब्जे के बाद मणिपुर के हिस्सों को मिलाकर कुकीलैंड बनाने के लिए सशस्त्र संघर्ष छेड़े 24 कुकी उग्रवादी संगठनों के साथ भारत सरकार का वर्तमान में एक समझौता है। इस समझौते के अंतर्गत इन संगठनों के विरुद्ध सुरक्षा बलों के अभियान को स्थगित रखा गया है। इन संगठनों को सरकार द्वारा चिह्नित कैंपों में भारतीय सुरक्षा बलों की निगरानी में रहना है और हथियारों का उपयोग नहीं करना है। इन 2,000 से अधिक उग्रवादियों को सरकार से 6,000 रुपये प्रति माह भत्ता भी मिलता है। इसके बावजूद ये संगठन लगातार हिंसक गतिविधियों में शामिल हो रहे हैं, आतंकी हमलों को अंजाम दे रहे हैं और उपरोक्त समझौते की शर्तों का उल्लंघन कर रहे हैं। हालांकि उग्रवादी संगठनों के हाथ में सीमावर्ती चिन प्रदेश चले जाने के चलते और म्यांमार में भारतीय सामरिक हितों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार इन गुटों को नाराज करने से बच रही है और समझौते को स्थगित नहीं कर रही है, जबकि मणिपुर सरकार इससे हाथ खींच चुकी है। इस पूरे घटनाक्रम से मैतेयी समुदाय में असंतोष बढ़ता जा रहा है, क्योंकि हिंसक हमलों को अंजाम देने के बाद आतंकी इन सुरक्षित कैंपों में शरण ले लेते हैं। चूंकि मणिपुर पुलिस और केंद्रीय अर्धसैनिक बल स्थिति संभालने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं तो इससे भी असंतोष उपज रहा है। इसी कारण कुकी और मैतेयी समुदाय अलग-अलग सुरक्षा बलों की मांग कर रहे हैं। जहां कुकी असम राइफल्स की तैनाती चाहते हैं, वहीं मैतेयी सीआरपीएफ के पक्ष में हैं।

मणिपुर में चहुंओर विश्वास का संकट खड़ा हो गया है। इससे कई खतरे उत्पन्न होने की आशंका बढ़ी है। यह न भूला जाए कि मणिपुर में पहले से ही कई माओवादी मैतेयी उग्रवादी संगठन सक्रिय रहे हैं। मैतेयी समुदाय में नई दिल्ली के प्रति बढ़ते असंतोष का लाभ उठाकर वे चीन की सहायता से नए सिरे से अपने पैर पसार सकते हैं। बांग्लादेश की सेना और खुफिया एजेंसी के चीन और पूर्वोत्तर में चीन द्वारा दशकों से हथियारबंद किए गए आतंकी संगठनों से पुराने रिश्ते रहे हैं। पूर्वोत्तर के तमाम आतंकी नेता अतीत में बांग्लादेश में शरण पा चुके हैं। ऐसे में आवश्यक है कि कम से कम कुछ कुकी उग्रवादी संगठनों के साथ समझौता रद कर बाकियों को कड़ा संदेश दिया जाए और उनसे समझौते की शर्तों का कड़ाई से पालन कराया जाए। दोनों समुदायों की महिलाओं का सुरक्षा बलों के काम में बाधा डालना मणिपुर में एक नई समस्या बनकर उभरी है। ये महिलाएं सुरक्षा कर्मियों के साथ धक्कामुक्की करती हैं। उनका रास्ता रोकती हैं। हिंसक तत्वों की ढाल बनती हैं। सुरक्षा बल इन महिलाओं के सामने असहाय दिखते हैं, क्योंकि पुरुष सैनिकों द्वारा उन पर बल प्रयोग संभव नहीं है। ऐसे में आवश्यक है कि मणिपुर में महिला अर्धसैनिक बलों की भी तैनाती हो।

मणिपुर में सक्रिय हथियारबंद गुट चाहे वे किसी भी समुदाय के हों, उनका निशस्त्रीकरण भी आवश्यक हो गया है। वर्तमान के विषाक्त माहौल में यह बातचीत से संभव नहीं दिखता। ऐसे में आवश्यक है कि खालिस्तानी आतंकवाद के दौर में पंजाब में तमाम आतंकी गुटों के बलपूर्वक निशस्त्रीकरण के लिए चलाए गए सैन्य अभियान जैसा ही अभियान मणिपुर में भी चलाया जाए। ऐसे किसी अभियान की सफलता के लिए अगर राष्ट्रपति शासन की आवश्यकता हो तो उससे भी संकोच नहीं किया जाए। मणिपुर दिल्ली से दूर अवश्य है, लेकिन वहां शांति और मजबूत पकड़ भारत के सामरिक हितों की रक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। तब और भी, जब म्यांमार में अमेरिका और चीन की खुफिया एजेंसियां एक बड़ा परोक्ष युद्ध लड़ रही हों।

(लेखक काउंसिल आफ स्ट्रैटेजिक अफेयर्स से संबद्ध सामरिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

संशोधन की मांग करता वक्फ कानून

कौसर जहां

वक्फ संपत्तियों का सदुपयोग सुनिश्चित करने के लिए वक्फ बोर्डों को चुनिंदा लोगों के चंगुल से मुक्त करना जरूरी है

वक्फ व्यवस्था में जरूरी है सुधार। फाइल

वक्फ बोर्ड अधिनियम में संशोधन पर संयुक्त संसदीय समिति यानी जेपीसी में चर्चा चल रही है। उसने इस अधिनियम में संशोधन को लेकर आम लोगों से भी सुझाव मांगे हैं। उम्मीद है कि व्यापक विचार-विमर्श के उपरांत जल्द ही इसे अंतिम रूप दे दिया जाएगा। जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं, उन्हें आज नहीं तो कल यह समझ आएगा कि यह उनकी भूल थी। यह सुधार मुस्लिम समाज की बेहतरी के लिए है। सुधार पारदर्शिता और भ्रष्टाचार के चंगुल से मुक्त होने का रास्ता तलाशने के लिए है। आज मुस्लिम समाज के बीच इसकी छटपटाहट है कि वह कैसे स्वयं को कट्टरपंथी तत्वों के दबाव से मुक्त करके सुधारों का हिस्सा बने। मुस्लिम समाज चाहता है कि विकास में कौम की भागीदारी बढ़े। मुस्लिम महिलाएं उन बेड़ियों से मुक्त होना चाहती हैं, जो उनकी समान भागीदारी की राह में रोड़ा हैं। कोई भी समाज अपनी महिलाओं को पीछे रखकर आगे नहीं बढ़ सकता। जब मोदी सरकार ने तीन तलाक प्रथा खत्म करने का कानून बनाया तो सबसे अधिक खुश मुस्लिम महिलाएं ही थीं। वक्फ में महिलाओं की भागीदारी से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा। मुस्लिम महिलाएं निर्णय लेने की प्रक्रिया से जुड़ेंगी तो इस संस्था में नए विचार भी आएंगे। वक्फ की मौजूदा व्यवस्था में सुधार का प्रस्तावित कदम बहुत पहले उठाया जाना चाहिए था, लेकिन देर आयद दुरुस्त आयद।

वक्फ अधिनियम में जो संशोधन प्रस्तावित किए हैं, उनसे वक्फ बोर्ड ज्यादा प्रभावी रूप से काम कर पाएंगे। ये सच्चर कमेटी की सिफारिशों के अनुरूप हैं, जिसकी वकालत यूपीए के नेता किया करते थे। वक्फ कानून में संशोधन संविधान की भावना के अनुरूप हैं। ओवैसी और विपक्ष के जो अन्य नेता वक्फ सुधार को संविधान के खिलाफ मानते हैं, उन्हें संविधान फिर से पढ़ना चाहिए। संविधान की बुनियाद ही बराबरी के सिद्धांत पर टिकी है। जो लोग इसे धार्मिक मामले में दखल बता रहे हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि यह इबादत नहीं, बल्कि संपत्तियों के प्रबंधन का मामला है। वक्फ संपत्तियों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करने के लिए वक्फ बोर्डों को चुनिंदा लोगों के चंगुल से मुक्त करना जरूरी है। वक्फ अधिनियम में संशोधन करके एक पारदर्शी, जवाबदेह और समान प्रतिनिधित्व की व्यवस्था लागू करने का ही प्रयास किया जा रहा है। प्रस्तावित संशोधनों में जहां मुस्लिम समुदाय के उपेक्षित तबकों की भागीदारी की चिंता की गई है, वहीं महिलाओं को प्रतिनिधित्व देने की भी पहल की गई है। ऐसा करके सरकार ने अपना यही सोच सामने रखा है कि विकसित भारत का संकल्प पूरा करना है तो महिलाओं को हर स्तर पर प्रतिनिधित्व देना होगा। यदि यह कोशिश की जा रही है कि वक्फ की संपत्तियों का दुरुपयोग न हो, उनका सही मूल्यांकन किया जाए और भ्रष्टाचार की गुंजाइश खत्म करके संपत्ति के अनुपात में राजस्व की व्यवस्था हो तो इसमें क्या बुराई है?

कोई भी निकाय तभी प्रभावी होता है, जब उसके संचालन और प्रबंधन में पारदर्शिता हो। यही प्रयास नए संशोधनों के माध्यम से सरकार ने किया है। नए प्रविधानों में यह व्यवस्था है कि वक्फ संपत्ति को निष्पक्ष तरीके से चिह्नित किया जाए और अगर कोई विवाद है तो उसका समुचित तरीके से निस्तारण हो। इन संशोधनों से वक्फ बोर्ड व्यापक पारदर्शिता से काम करेंगे और अधिक जवाबदेह होंगे। नई व्यवस्था में मुस्लिम समुदाय के पिछड़े वर्गों, शिया, सुन्नी, बोहरा, आगाखानी आदि को प्रतिनिधित्व दिया जाएगा। केंद्रीय परिषद और राज्य वक्फ बोर्ड में दो महिलाओं को रखना अनिवार्य होगा। इसमें किसी के अधिकार कम करने के बजाय ज्यादा लोगों को जिम्मेदारी दी जाएगी। वक्फ कानून में संशोधन कर एक केंद्रीय पोर्टल और डाटाबेस के माध्यम से वक्फ के पंजीकरण के तरीके को सुव्यवस्थित किया जाएगा। इसके साथ ही ट्रिब्यूनल की संरचना में सुधार किया जाएगा। ट्रिब्यूनल के आदेशों के खिलाफ हाई कोर्ट में अपील के लिए 90 दिनों की सीमा निर्धारित की गई है। इससे विवाद कम होंगे। वक्फ संपत्तियों के सर्वेक्षण के लिए सर्वे कमिश्नर का अधिकार कलेक्टर या कलेक्टर द्वारा नामित डिप्टी कलेक्टर को होगा। प्रस्तावित वक्फ अधिनियम में बोहरा और आगाखानियों के लिए अलग बोर्ड की स्थापना का प्रविधान किया गया है। किसी भी संपत्ति को वक्फ के रूप में दर्ज करने से पहले सभी संबंधित पक्षों को उचित नोटिस दिया जाएगा। यह न्यायसंगत कदम है और इससे बोर्ड पर सवाल भी नहीं उठेंगे।

वक्फ परिषद में केंद्रीय मंत्री, तीन सांसद, मुस्लिम संगठनों के तीन नुमाइंदे, मुस्लिम कानून के तीन जानकार, सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट के दो पूर्व जज, एक प्रसिद्ध वकील, राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चार लोग, भारत सरकार के अतिरिक्त या संयुक्त सचिव आदि होंगे। इनमें दो महिलाओं का होना जरूरी होगा। यह समान प्रतिनिधित्व का सर्वोत्तम माडल है। 2013 में वक्फ अधिनियम में संशोधन करके वक्फ बोर्डों को वक्फ संपत्ति के मामले में असीमित अधिकार दे दिए गए थे, जिन्हें किसी भी अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती थी। यह लोकतंत्र के विरुद्ध था और इससे आम मुसलमानों को कोई लाभ नहीं था। नए प्रविधान सभी चिंताओं का समाधान करेंगे। जेपीसी की रिपोर्ट के आधार पर प्रस्तावित विधेयक में कुछ और बदलाव संभव हैं। विधेयक पेश करते वक्त ही सरकार ने साफ कर दिया था कि उसका मजहबी मामलों में दखल का कोई इरादा नहीं है। आजादी के बाद वक्फ कानून 1954 में अस्तित्व में आया, जिसे 1955 और 2013 में संशोधित किया गया। भ्रष्टाचार की शिकायतों के बाद सरकार ने एक बार फिर इसमें बदलाव का प्रस्ताव रखा है। हमें समाज की बेहतरी के लिए इसका स्वागत करना चाहिए।

(लेखिका दिल्ली हज समिति की अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

निद्रा और चिरनिद्रा

एक सघन और स्वस्थ निद्रा दिन भर के कठिन परिश्रम का पुरस्कार है। निद्रा का अर्जन करना पड़ता है। मात्र बाल्यावस्था को ही यह वरदान प्राप्त है कि निद्रा के लिए विशिष्ट प्रयत्न नहीं करने पड़ते। बाल्यकाल और किशोरावस्था की कुछ अवधि के उपरांत प्रकृति प्रायः निद्रा को सहजता से उपलब्ध संपदा नहीं रहने देती। इसके चलते अनिद्रा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अनिद्रा कई व्याधियों का आधार बिंदु है। यदि अनिद्रा किसी गंभीर रोग या चिंता का परिणाम है तो उसके लिए चिकित्सक की शरण में जाना उचित है। इसके उलट यदि अनिद्रा अस्त-व्यस्त जीवन शैली या पर्याप्त श्रम की अनुपस्थिति का परिणाम है तो इसके लिए प्रकृति, मौसम, दैव या भाग्य नहीं आप स्वयं उत्तरदायी हैं। प्रकृति ने मनुष्य के हिस्से कुछ कर्म लिखे हैं। वे मानसिक भी हो सकते हैं शारीरिक भी। जब तक आप अपने हिस्से के वे श्रम नहीं करेंगे, आपको स्वस्थ निद्रा का पुरस्कार नहीं मिलेगा।

जीवन के अंत में हम सभी को चिरनिद्रा अर्थात मृत्यु का सामना करना है। मृत्यु सबको अंतिम निद्रा में सुला देती है, परंतु किसी को सरल एवं बिना किसी कष्ट के मृत्यु मिल जाती है। कुछ ऐसे भी उदाहरण मिल जाएंगे, जहां मृत्यु कष्ट से हुई या वर्षों मृत्यु की प्रतीक्षा की गई। कभी-कभी कष्टप्रद मृत्यु किसी प्रकार के बुरे कर्म का परिणाम भी हो सकती है। उसे छोड़कर साधारणतया प्रकृति का नियम चिरनिद्रा के मामले में भी लागू होता है। अर्थात जिसने जीवन भर पर्याप्त श्रम किया होगा, उसे डाल से पके हुए खरबूजे के टूटने जैसी आसान मृत्यु मिल जाएगी। यह निद्रा इतनी गहरी होगी कि जब आप अगले जन्म में आंखें खोलेंगे तो पाएंगे कि नई देह में ऊर्जा ही ऊर्जा है। प्रत्येक रात्रि मिलने वाली अस्थायी मृत्यु यानी निद्रा के गुण-स्वभाव का अध्ययन करके चिरनिद्रा की तैयारी की जा सकती है।

ट्विंकल तोमर सिंह

बच्चियों की सुरक्षा का सवाल

सुनीता मिश्रा

कानून के साथ-साथ समाज को भी बच्चियों की सुरक्षा के लिए आगे आना होगा ताकि अपराधियों के मन में डर पैदा हो सके

पिछले दिनों गुजरात के खेड़ा जिले से कक्षा चार की एक छात्रा के साथ छेड़छाड़ एवं अश्लील हरकतें करने का मामला सामने आया। पुलिस ने आरोपित शिक्षक अखार अली महबूब मियां सैयद को गिरफ्तार कर लिया है। दुखद है कि विकृत मानसिकता वाले पुरुषों की वजह से देश में लड़कियां शिक्षा के मंदिर, ट्यूशन, पार्क और स्कूल से घर जाने वाले रास्ते पर कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। आए दिन बच्चियों के साथ यौन शोषण जैसी घटनाएं सुर्खियों में बनी रहती हैं। इसको लेकर उनके माता-पिता काफी चिंतित हो जाते हैं और वे उन्हें स्कूल भेजने से भी डरते हैं।

हाल में महाराष्ट्र के बदलापुर में स्थित एक स्कूल के सफाईकर्मी ने तीन और चार साल की बच्चियों का यौन शोषण किया। इसके खिलाफ लोग सड़कों पर उतरे, रेलवे स्टेशन पर जमकर प्रदर्शन किया, परंतु स्थिति जस की तस है। बच्चियों के खिलाफ अत्याचार के मामले कम होने के बजाय बढ़ते ही जा रहे हैं। माता-पिता के बाद शिक्षक ही बच्चों के मार्गदर्शक होते हैं। शिक्षक की शिक्षा से बच्चों के बेहतर भविष्य का निर्माण होता है। वे उन्हें जीवन जीने की कला सिखाते हैं। ऐसे में स्कूल के शिक्षक द्वारा इस तरह के घिनौने कुकृत्यों को अंजाम देने से समाज में नकारात्मक संदेश जाता है और ऐसी घटनाओं से पूरा देश शर्मसार होता है। देश में बच्चों की सुरक्षा से संबंधित कई योजनाएं चलाए जाने के बावजूद वे यौन शोषण जैसे अपराधों से सुरक्षित नहीं हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार, यौन शोषण के शिकार 88 प्रतिशत बच्चे घबराहट की गिरफ्त में आ जाते हैं। यानी बचपन में यौन शोषण के शिकार होने वाले बच्चे तनाव, डर, घबराहट, आत्मसम्मान की कमी सहित कई तरह की मानसिक और शारीरिक समस्या से परेशान रहते हैं। बचपन में हुए दुर्व्यवहार, यौन शोषण से बच्चों के सोचने-समझने की क्षमता भी प्रभावित होती है, जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा और रोजगार पर पड़ता है।

बेटियां आज देश के समग्र विकास का अभिन्न हिस्सा बन चुकी हैं। ऐसे में बच्चियों की सुरक्षा से कतई समझौता नहीं किया जा सकता। उनके साथ होने वाली इन घटनाओं पर विराम लगना चाहिए। इसके लिए बालिकाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों के मामलों में पूरी तत्परता, गंभीरता और संवेदनशीलता से कार्रवाई होनी चाहिए। दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जानी चाहिए, ताकि अपराध करने वालों के हौसले पस्त पड़ जाएं। इसके साथ ही समाज को भी अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभानी होगी। सरकार के साथ-साथ उन्हें भी बच्चियों के लिए हर जगह को सुरक्षित बनाने के लिए आगे आना होगा, ताकि अपराधियों के मन में डर पैदा हो सके।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

एजेंसियों में समन्वय आवश्यक

'आतंक से लड़ने की कमजोर इच्छाशक्ति' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में राजीव सचान ने उदयपुर के कन्हैयालाल हत्याकांड के आलोक में एक प्रमुख समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि जांच एजेंसियों की कार्यप्रणाली में किस कदर सुधार की दरकार है। आखिर जिस घटनाक्रम का वीडियो तक जारी हुआ उस मामले में इतने पुख्ता साक्ष्य क्यों नहीं प्रस्तुत किए जा सके कि दोषियों पर कानूनी शिकंजा ढीला न पड़े। निःसंदेह इसमें एनआइए के स्तर पर कुछ हीलाहवाली हुई हो, किंतु अक्सर ऐसे मामलों में विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय का अभाव भी जिम्मेदार होता है। इस मोर्चे पर पुख्ता कदम उठाए जाने चाहिए, ताकि जघन्य अपराध करने वाले अपराधियों को उनकी करनी की सजा दिलाई जा सके। कन्हैयालाल हत्याकांड तो एक मिसाल भर है। स्वाभाविक है कि इससे पीड़ित के परिजनों की पीड़ा दूर नहीं होने वाली। ऐसे मामलों में तो पीड़ितों के साथ सहानुभूति का दायरा और व्यापक हो जाता है तो अपराधियों के बच निकलने पर टीस होना बहुत लाजिमी है।

केशव तिवारी, आजमगढ़

भाजपा को जागना होगा

राहुल गांधी विदेश जाते हैं तो बेतुकी बातें करते हैं। मीडिया उसे खूब उछालता है। भाजपा आक्रामक होने की बजाय रक्षात्मक बनी रहती है। इस रक्षात्मक नीति की वजह से लोकसभा चुनाव में भाजपा का चुनावी ग्राफ नीचे गिरा। भाजपा के पास भी एक से बढ़कर एक नेताओं की भरमार हैं, क्यों नहीं उनका इस्तेमाल करती। कोई बोलता भी है तो उसे दंडित कर दिया जाता है। नुपुर शर्मा और कंगना रनौत इसके ताजा उदाहरण हैं। ऐसे लोगों को समझा देना चाहिए कि धर्म और जाति पर कोई टिप्पणी करने से बचें। विवाद इन दो बातों पर ही होता है। कांग्रेस मोदी को हटाने के लिए देश विरोधियों का साथ ले रही है। बस किसी तरह बांग्लादेश की तरह भारत में भी अराजकता फैले और हम सत्ता हथियाएं। वे शायद भूल रहे हैं कि यहां का बहुसंख्यक कट्टरवादी नहीं है। भारत में कांग्रेस लोगों को भड़काकर अफरा-तफरी फैला सकती है, रेल पटरियां उखड़वा सकती है, जैसा आजकल हो रहा है, ट्रेन रुकवा सकती है, सड़कें जाम करवा सकती है, लेकिन बांग्लादेश जैसे हालात नहीं बनवा सकती।

चंद्र प्रकाश शर्मा, दिल्ली

ट्रेन, ट्रैक और टेरर

देश पहले ही आंतरिक, बाह्य चुनौतियों, प्राकृतिक आपदा का सामना कर रहा है। ऐसे में रह-रहकर रेल की पटरियों पर नए-नए अवरोधक, विस्फोटक रखकर रेलवे एवं देश के लिए परेशानी तथा खतरा पैदा किया जा रहा है। कानपुर के आसपास तीन प्रयास, राजस्थान में भी तीन प्रयास दिखाते हैं कि इनके पीछे वहीं का कोई जिहादी मास्टर माइंड है। इनके पीछे पाकिस्तान का हाथ भी हो सकता है। यह भी गौर करने लायक है कि यह 'ट्रेन, ट्रैक, टेरर' का पैटर्न 1980 के बाद से भारत और जापान, यूके, फ्रांस, रूस, जर्मनी, दक्षिण कोरिया जैसे बहुत से देशों में कार्यरत रहा है। इससे पहले प्लेन हाइजैक अधिक होते थे। 1980 के बाद से एयरपोर्ट में चौकसी अत्यधिक बढ़ा दी गई। इसलिए जिहादियों, अलगाववादियों और भारत में माओवादियों ने ट्रेन की पटरियों और ट्रेनों को निशाना बनाने पर फोकस कर दिया। यह आतंकवाद के अन्य तरीकों से आसान है, क्योंकि इस काम को तो अकेला (लोन वुल्फ) भी अंजाम दे सकता है। रेलवे ट्रैक हजारों किलोमीटर के हैं, चप्पे-चप्पे की निगरानी इतनी आसान नहीं है, लेकिन अब खतरा बढ़ता ही जा रहा है तो ट्रैक की निगरानी का अति कठिन कार्य भी रेलवे पुलिस, ड्रोन आदि की मदद से करना होगा। जो भी इन कुकृत्यों के पीछे पकड़ा जाए, उसे त्वरित फांसी अवश्य होनी चाहिए। इससे देश की संपदा को क्षति के साथ-साथ हजारों लोगों की जान भी जा सकती है। पेरिस ओलिंपिक से ठीक पहले फ्रांस हाईस्पीड रेल नैटवर्क पर आक्रमण, राष्ट्र और राष्ट्र की प्रतिष्ठा पर आक्रमण था। ऐसे ही प्रयास भारत में हो रहे हैं, जो अति चिंताजनक है। ये सभी के सामूहिक प्रयास से ही रुक सकेंगे।

सीपी बंसल, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।
अपने पत्र इस पते पर भेजें:
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, चेयरमैन एमेरिटस-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष: नई दिल्ली कार्यालय: 011-43166300, नोएडा कार्यालय: 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

1998 में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन का पहला माड्यूल लांच किया गया था। इस पर रहने के लिए पहला दल एक्सपीडिशन-1 से वहां साल 2000 में पहुंचा था।

आजकल

अंतरिक्ष की पहेली में अटकीं सुनीता

भारतीय मूल की अंतरिक्ष विज्ञानी सुनीता विलियम्स अपने एक अन्य सहयोगी बुच विल्मोर के साथ जून में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) पर निर्धारित अवधि के लिए कुछ परीक्षण करने गई थीं, लेकिन आठ दिनों तक आइएसएस पर उनके प्रवास का कार्यक्रम उन्हें वापस लाने वाले अंतरिक्ष यान स्टारलाइनर में आई कुछ समस्याओं के कारण टल गया है। अब माना जा रहा है कि सुनीता और विल्मोर अगले साल फरवरी से पहले धरती पर वापस नहीं लौट सकेंगे

अभिषेक कुमार सिंह
संस्था- टैली परफार्मेंस से संबद्ध

अंतरिक्ष विज्ञानी सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर के बिना ही धरती पर वापस आया अंतरिक्ष यान स्टारलाइनर । एपी

अंतरिक्ष एक बड़ी पहेली है। अनंत विस्तार और अबूझ रहस्यों से भरी यह जगह इंसानों को सदियों से अपनी ओर आकर्षित करती रही है। आधुनिक विज्ञान की बदौलत यह संभव हुआ कि इंसान ने पृथ्वी के आवरण से बाहर निकलकर इसके आंगन में कदम रखे। चंद्रमा पर चहलकदमी की और मंगल-शुक्र के आगे सौरमंडल की असीम छोर तक वायजर जैसे यान भेजे। यह भी संभव हुआ कि अंतरिक्ष में टंगी याननुमा किसी प्रयोगशाला में कुछ दिन से लेकर हफ्तों या महीनों तक विज्ञानी रह सकें। इन्हीं में एक भारतीय मूल की अंतरिक्ष विज्ञानी सुनीता विलियम्स हैं, जो एक अन्य सहयोगी बुच विल्मोर के साथ अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आइएसएस) पर निर्धारित अवधि के लिए कुछ परीक्षण करने गई थीं, लेकिन आठ दिनों तक आइएसएस पर उनके प्रवास का कार्यक्रम उन्हें वापस लाने वाले अंतरिक्ष यान स्टारलाइनर की समस्याओं के कारण टल गया। अब माना जा रहा है कि सुनीता और विल्मोर अगले साल फरवरी से पहले धरती पर वापस नहीं लौट सकेंगे। ऐसा क्या हुआ कि सुनीता और विल्मोर का आठ दिन का कार्यक्रम फिलहाल आठ महीनों की अवधि में बदल गया?

मिशन ओडिसी को लगा झटका : आइएसएस पर कई प्रयोग करने के लिए विज्ञानियों के जत्थे अतीत में भी जाते रहे हैं। वे वहां प्रयोगों की जरूरत के हिसाब से रुकते हैं। यानी उनके आइएसएस पर निवास की अवधि योजना के मुताबिक कुछ दिन से लेकर कई महीनों तक की हो सकती है। सुनीता और विल्मोर भी ऐसी ही एक योजना-मिशन ओडिसी पर पांच जून, 2024 को आठ दिनों के लिए वहां भेजे गए थे। इन दोनों को आइएसएस तक निजी स्पेस कंपनी- स्पेस एक्स के यान स्टारलाइनर से भेजा गया था। निजी स्पेस कंपनी के सहयोग से संचालित यह अपनी तरह का पहला और ऐतिहासिक परीक्षण मिशन था। इस परीक्षण मिशन का उद्देश्य इसकी जांच करना था कि स्टारलाइनर नामक यह अंतरिक्ष यान नियमित इस्तेमाल में लाने से पहले कैसा प्रदर्शन करता है?

यह यान सफल प्रक्षेपण के बाद छह जून, 2024 को आइएसएस से जुड़ (डाकिंग) तो गया, लेकिन इसकी डाकिंग में ही समस्याएं नजर आ गई थीं। पता चला कि स्टारलाइनर के रिएक्शन कंट्रोल सिस्टम में लगे 28 में से पांच थ्रस्टर्स ने काम करना बंद कर दिया है। इसके अलावा स्टारलाइनर यान के प्रोपल्शन सिस्टम में हीलियम गैस भी लीक हो गई। इस तरह स्टारलाइनर का क्रू फ्लाइट टेस्ट (सीएफटी) मिशन समस्याओं में घिरता नजर आया। इन दिक्कतों को देखते हुए पृथ्वी पर मौजूद अमेरिकी स्पेस एजेंसी-नासा के नियंत्रण कक्ष में बैठे विज्ञानियों ने स्टारलाइनर की पहले से निश्चित वापसी टाल दी और अंतरिक्ष यात्रियों के प्रवास की अवधि बढ़ाने का फैसला किया। नासा ने निर्णय लिया कि 58 वर्षीय सुनीता विलियम्स और 61 वर्षीय बुच विल्मोर को स्टारलाइनर से वापस लाना जोखिम भरा हो सकता है, इसलिए यान को हाल में बिना अंतरिक्ष यात्रियों के धरती पर वापस लाया गया है। नासा ने घोषणा की है कि विलियम्स और विल्मोर अगले साल फरवरी में स्पेसएक्स के ड्रैगन कैप्सूल से घर वापसी करेंगे। घोषणा के मुताबिक यह 'स्पेसएक्स क्रू ड्रैगन' क्रू-9 मिशन के तहत सितंबर 2024 के आखिर में लांच किया जाएगा। क्रू-9 मिशन की शुरुआती योजना चार सदस्यों को आइएसएस तक ले जाने की थी, लेकिन अब इसमें दो सीटें खाली रखी जाएंगी, ताकि वापसी में विलियम्स और विल्मोर को लाया जा सके।

वैसे तो आइएसएस के लिए अपने तीसरे दौरे पर गईं सेवानिवृत्त नौसेना हेलीकाप्टर पायलट सुनीता विलियम्स और आइएसएस के दो दौरे कर चुके पूर्व लड़ाकू विमान पायलट विल्मोर ने पृथ्वी पर बैठे संवाददाताओं को यह कहकर आश्वस्त किया है कि वे दोनों वहां पूरी तरह सुरक्षित हैं और आइएसएस पर मौजूद टीम के साथ अपनी दिनचर्या में व्यस्त हैं, लेकिन इतना तो साफ है कि उन्हें तय योजना से काफी ज्यादा लंबा समय वहां बिताना पड़ रहा है। यूं अंतरिक्ष में लंबी अवधि तक रहने के और भी रिकार्ड हैं। जैसे रूस के वालेरी पोल्याकोव ने पिछली सदी के अंतिम दशक के मध्य में मीर अंतरिक्ष स्टेशन पर 437 दिन अंतरिक्ष में गुजारे थे। यही नहीं, पिछले ही साल नासा के अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री फ्रैंक रूबियो, रोस्कोस्मोस के रूसी अंतरिक्ष यात्रियों सर्गेई प्रोकोपयेव और दिमित्री पेटेलिन ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर 371 दिन बिताने के बाद पृथ्वी पर वापसी की थी। नासा के अंतरिक्ष यात्री स्काट केली और मिखाइल कोर्निएंको आइएसएस पर 340 दिन रहे थे। इनके अलावा क्रिस्टीना कोच (328 दिन), पैगी व्हिटसन (289 दिन) और एंड्रयू मार्गन (272 दिन) के नाम उल्लेखनीय हैं, जो आइएसएस पर लंबी अवधि के लिए रुके थे।

अंतरिक्ष में प्रवास की चुनौती : स्पेसएक्स के मालिक एलन मस्क वैसे तो इंसानों को मंगल ग्रह तक भेजने की योजना पर काम कर रहे हैं, लेकिन समझना होगा कि चांद और मंगल से पहले नजदीकी अंतरिक्ष में ही इंसानों को भेजना और उन्हें वहां लंबे समय पर टिकाए रखना काफी चुनौतीपूर्ण होता है। आइएसएस पर अंतरिक्ष यात्रियों को भेजते समय उनके भोजन, पानी, आक्सीजन, नियमित दवाओं के अलावा अंतरिक्षीय दशाओं के कारण उनकी हड्डियों, मांसपेशियों और रक्त संचार पर पड़ने वाले असर के मुताबिक कई प्रबंध करने पड़ते हैं। इसके लिए आइएसएस के चालक दल को हर लगभग ढाई घंटे व्यायाम करने का काम सौंपा जाता है। वह एक मनोविज्ञानी के साथ नियमित टेलीकांफ्रेंस भी करते हैं। पृथ्वी पर नासा का एक विशेषज्ञ अंतरिक्ष यात्रियों की पारिवारिक मामलों में मदद करता है। उनसे मिले अपडेट के अनुसार कुछ बदलाव भी किए जाते हैं। जैसे एक उदाहरण है कि कसरत के बारे में फीडबैक के आधार पर आइएसएस पर भारोत्तोलन मशीन के स्थान पर ऐसा उन्नत व्यायाम उपकरण स्थापित किया गया, जिसमें खींची जाने वाली डोरियां हटाकर पिस्टन लगाए गए थे। आइएसएस पर रसद आपूर्ति का सामान्य नियम यह है कि वहां हमेशा न्यूनतम चार महीनों की जरूरत के भोजन, पानी, कपड़े और आक्सीजन की आपूर्ति कायम रखी जाती है, ताकि किसी आपात स्थिति से निपटा जा सके। इन तैयारियों को देखते हुए कहा जा सकता है कि तकनीकी समस्याओं और किसी आकस्मिक दुर्घटना के खतरे को छोड़कर सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर के लिए आइएसएस पर आठ महीने तक रुके रहने में कोई समस्या नहीं है। उम्मीद है कि जब ये दोनों अंतरिक्ष यात्री फरवरी 2025 में पृथ्वी पर वापस आएंगे, तो पृथ्वी के वायुमंडल के बाहर अंतरिक्ष में अपनी अटूट जिजीविषा प्रदर्शित करने के लिए सराहे जाएंगे।

भारत के अपने स्पेस स्टेशन का सपना

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के मुताबिक साल 2035 तक भारत का अपना एक अंतरिक्ष स्टेशन होगा। इसरो के पूर्व चेयरमैन के. सिवन ने एक कार्यक्रम में घोषणा की थी कि मौजूदा दशक के अंत तक हमारा देश भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (बीएएस) के निर्माण और वर्ष 2035 तक इसकी स्थापना की योजना पर काम कर रहा है। बताया जा रहा है कि 52 टन वजनी यह स्पेस स्टेशन पृथ्वी से करीब 400 किलोमीटर ऊपर की कक्षा में रहेगा, जहां अंतरिक्षयात्री 15-20 दिन रहकर विभिन्न प्रयोग कर सकेंगे। इस समय में दुनिया के सिर्फ दो ही स्पेस स्टेशन हमारे नजदीकी अंतरिक्ष में उपस्थित हैं। इनमें से एक है अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आइएसएस) और दूसरा है चीन का तियांगोंग। पड़ोसी देश चीन ने अपना अंतरिक्ष स्टेशन तियांगोंग 2021 में लांच कर पृथ्वी की सतह से 340 से 450 किलोमीटर ऊपर पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित किया था। यह अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन के आकार का करीब एक तिहाई है।

अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन को अमेरिका, रूस, जापान समेत कई यूरोपीय देशों (कुल 15 देशों) ने मिलकर बनाया है। आइएसएस के निर्माण में अमेरिका के पूर्व स्पेस स्टेशन-फ्रीडम और रूस के स्पेस स्टेशन मीर-2 का प्रमुख योगदान है। फ्रीडम और मीर-2 से मिले अनुभवों के आधार पर आइएसएस का पहला माड्यूल 1998 में लांच किया गया था। इस स्पेस स्टेशन पर निवास के लिए अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर पहला चालक दल एक्सपीडिशन-1 से वहां 2000 में पहुंचा था। मार्च 2024 तक 22 देशों के 279 व्यक्ति अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंच चुके हैं। इनमें सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर को जोड़ दें तो यात्रियों की संख्या 281 हो जाती है।

अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन और चीनी स्पेस स्टेशन के मुकाबले भारतीय स्पेस स्टेशन का आकार छोटा होगा, लेकिन इनके उद्देश्यों को देखते हुए कह सकते हैं कि करीबी अंतरिक्ष में इस तरह की सहूलियत होना किसी देश के अंतरिक्ष संबंधी कार्यक्रमों की महत्ता दर्शाता है। प्रयोगों के आधार पर आइएसएस को अंतरिक्ष में तैरती प्रयोगशाला (लैब) कहा जाता है। इस पर अब तक 1800 से ज्यादा वैज्ञानिक प्रयोग किए जा चुके हैं। मानव ऊतकों (टिश्यूज) की बढ़ोतरी के प्रयोगों से लेकर पृथ्वी के ग्लेशियरों, कोरल रीफ और शहरों से जुड़े आंकड़े जमा करने में आइएसएस की भूमिका रही है। हाल के वर्षों में इस पर 3डी प्रिंटिंग, अर्थ इमेजिंग, लेजर कम्युनिकेशंस और मिनी-सेटेलाइट लांचर जैसे उपकरण जोड़े गए हैं, जिनकी सहायता से नए किस्म के प्रयोग हो सकते हैं। यही नहीं, इस पर मौजूद रहने वाले अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर भी महीनों तक चलने वाले प्रयोग किए जाते हैं। आज से दस साल बाद जब भारत का अपना स्पेस स्टेशन बनकर तैयार होगा, तो हम कह सकेंगे कि हमारे लिए अंतरिक्ष में प्रयोगों और परीक्षणों की एक नई जमीन तैयार हो गई है। -अभिषेक कुमार सिंह

खरी-खरी

कुछ तो लोग कहेंगे...

धर्मेंद्र जोशी

वह हर रंग में रंग जाने में माहिर हैं इसलिए हर समय आकाओं की बगल में पाए जाते हैं। सत्ता किसी की भी हो वह हमेशा निकटवर्ती बने रहते हैं। वह झुकने की कला में भी सिद्धहस्त हैं। एक तो बार तो इतना झुके कि उनके चरण सामने वाले के चेहरे तक पहुंच गए। वह हवा के साथ बहने में भी पारंगत हैं। जब भी जिस दल की या नेता की हवा रहती है, उसके लिए जी जान लगाते दिखाई देते हैं। वह आगवानी से लेकर समापन तक कैमरे की नजर में रहते हैं। कई मर्तबा तो अतिथि फोटो से ओझल हो जाते हैं, मगर वह हर कार्यक्रम में प्रारंभ से लेकर अंत तक छाए रहते हैं।

वह समय के साथ चलने के लिए भी जाने जाते हैं इसलिए वर्तमान में इंटरनेट मीडिया का अपने निहित उपयोग करने में अग्रणी हैं। पिछली बार एक भैया जी के जन्मदिन पर खुद के फोटो के साथ एक अतिरंजना से भरी पोस्ट इंटरनेट मीडिया पर डाल दी, जिससे भैया जी के छर्रे अति उत्साहित होकर गदर पर उतर आए। दिन भर शुभकामनाओं का दौर चलता रहा। जब भैया जी तक बात पहुंची, तो उन्होंने बताया कि उनका जन्मदिन तो तीन महीने के बाद आएगा, तब कहीं जाकर बमुश्किल उन्होंने पोस्ट को हटाया। वह हां में हां मिलाने की कला में भी निष्णात हैं, इसलिए कभी भी कोप का भाजन नहीं बनते हैं। उनकी सभी जगह उपस्थिति भी चर्चा का विषय रहती है। वह काल एवं परिस्थिति के अनुरूप पल में चेहरे पर दुख के भाव ले आते हैं और तत्क्षण मधुर मुस्कान बिखेरने में भी देर नहीं करते हैं। कभी निजी वाहन का उपयोग नहीं करते हैं, अपितु अपनी प्रबल प्रतिभा का परिचय देते हुए किसी अन्य के वाहन पर सवार होकर आते हैं और ठाठ के साथ लौट जाते हैं।

उनसे ईर्ष्या रखने वाले कुछ लोग उनको मसाजर, अवसरवादी, दायां-बायां, पिट्ठू, चम्मच और चापलूस जैसी उपाधि से सम्मानित करते हैं, मगर वह तुच्छ बातों पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य के प्रति अटल रहते हैं। यही कारण है कि वह सबको साधने में समर्थ हो चुके हैं। वह कई बार यह कहते हुए आगे बढ़ जाते हैं कि 'कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है, कहना।'

X पोस्ट

इस देश में मौजूद करोड़ों सिख भाइयों में से कोई एक सरदार आगे आए और कहे कि मुझे भारत की धरती पर अपनी पगड़ी और कड़ा पहनने में डर लगता है या कह दे कि मैं पब्लिक में अपनी पहचान छुपाता हूं। हद है झूठ बोलने की भी!
रुबिका लियाकत@RubikaLiyaquat

सिख समुदाय से जुड़े प्रतीकों को लेकर हर कोई राहुल गांधी के झूठ की पोल खोलने में लगा हुआ है, लेकिन ऐसा करने वाले यह क्यों नहीं समझ पा रहे कि वह अमेरिका और कनाडा में रह रहे खालिस्तान समर्थकों को संबोधित कर रहे थे। स्वाभाविक है कि उन्हें गुरपतवंत सिंह पन्नू और एसएफजे जैसे संगठनों की सलामी और सराहना भी हासिल हुई।
हार्दिक राजगौर@Hardism

हाल के दिनों में एक्स (पूर्व में ट्विटर) जैसे प्लेटफार्म का सबसे बेहतरीन इस्तेमाल अगर किसी राजनेता ने किया है तो वह हैं बसपा प्रमुख मायावती। बहनजी एक्स पर अपनी पोस्ट के माध्यम से विमर्श का रुख तय कर रही हैं। अपने विरोधियों को जवाब देने पर मजबूर कर रही हैं। साथ ही, प्रमुख मुद्दों पर अपनी राय भी रख रही हैं।
अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

धनंजय प्रताप सिंह
राज्य ब्यूरो प्रमुख, मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश डायरी

चुनौतीपूर्ण है जिलों का परिसीमन

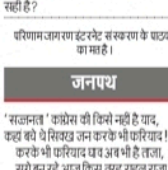

मध्य प्रदेश सरकार ने नए जिलों की मांग को ठंडा करने के लिए एक नए आयोग का गठन कर दिया है। सरकार ने मध्य प्रदेश प्रशासनिक इकाई सुधार आयोग गठित किया है। यह आयोग प्रदेश में जिला-संभाग और तहसील की भौगोलिक सीमाओं का पुनर्गठन कर नए सिरे से सीमाएं निर्धारित करेगा। आयोग को इस काम के लिए एक वर्ष का समय दिया गया है। सेवानिवृत्त अपर मुख्य सचिव मनोज श्रीवास्तव को आयोग का सदस्य बनाया गया है। बात ठीक भी है कि एक नवंबर, 1956 को भाषाई आधार पर बने मध्य प्रदेश में जिला इकाइयों के पुनर्गठन की आवश्यकता भी है। सरकार ने इस दिशा में कभी गंभीरता से प्रयास नहीं किए। प्रदेश की राजधानी भोपाल भी सीहोर जिले का हिस्सा हुआ करता था, जिसे दो अक्टूबर, 1972 को सरकार ने सीहोर से अलग कर जिला बनाया था। इसके बाद दिग्विजय सिंह सरकार ने जिला पुनर्गठन आयोग की अनुशंसा के आधार पर 1998 से वर्ष 2003 के बीच 10 नए जिले बनाए। इसके बाद जिन जिलों का निर्माण हुआ, वह राजनीतिक आधार पर ही हुआ है।

जाहिर है कि जब जिलों की सीमाएं नए सिरे से निर्धारित होंगी तो नए जिले बनने का रास्ता भी साफ होगा। यह भी बात सही है कि अब तक जिलों की सीमाओं में कई तरह की भौगोलिक दिक्कतें हैं। जैसे राजधानी भोपाल की ही बात की जाए तो यहां से लगा मंडीदीप औद्योगिक क्षेत्र रायसेन जिले में आता है, जिसकी दूरी साठ किलोमीटर से अधिक है, जबकि भोपाल मात्र 25 किलोमीटर दूर है। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के ही गृह क्षेत्र बुधनी को लें तो यह सीहोर जिले में आता है, जो 110 किलोमीटर दूर है। व्यावहारिक दृष्टि से

डा. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

देखा जाए तो इसे नजदीकी नर्मदापुरम जिले में आना चाहिए, जिसकी दूरी 25 किलोमीटर ही है। ऐसी कठिनाइयां प्रदेश के कई जिलों में हैं, लेकिन इन्हें दूर करना आसान भी नहीं है। अब सवाल इस बात का है कि वर्ष 2021 में जो जनगणना प्रस्तावित थी, वह अभी तक आरंभ भी नहीं हो पाई है, ऐसे में यह आयोग किस जनगणना को आधार बनाएगा? यदि 2011 की जनगणना के आधार पर जिलों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण होता है तो भी यह व्यावहारिक नहीं होगा। इस आयोग के सामने दूसरी चुनौती विधानसभा और लोकसभा क्षेत्रों के परिसीमन की है। वर्ष 2025 में विधानसभा और लोकसभा क्षेत्रों का भी परिसीमन कार्य आरंभ होना है। यदि यह परिसीमन का कार्य आरंभ हो गया तो प्रशासनिक सुधार आयोग की रिपोर्ट पर कितना अमल हो पाएगा?

सबसे बड़ी चुनौती तो राजनीतिक है। कोई भी राजनेता अपने जिले से किसी हिस्से को छोड़ना नहीं चाहेगा। ऐसे प्रयास का विपक्ष भी लाभ लेने का प्रयास करेगा। धरने-आंदोलन होंगे। विपक्ष को मुद्दा मिल जाएगा। इससे निपटने का अभी तक कोई प्लान नहीं है। अभी तो थानों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण करने के लिए ही 20 वर्ष से कोशिश चल रही थी। गृह विभाग ने अक्टूबर 2004 में नए सिरे से थानों की सीमाएं निर्धारित करने के निर्देश दिए थे, लेकिन अभी तक इसपर पूरी तरह अमल नहीं हो पाया है। मात्र उन्हीं थानों की सीमाएं बदली जा रही थीं, जो नए जिले बनने से प्रभावित हो रहे थे। इसके अतिरिक्त पुलिस आयुक्त प्रणाली लागू होने के बाद भोपाल और इंदौर के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के थानों की सीमाएं बदली थीं। तीन जनवरी, 2024 को इसके लिए फिर निर्देश जारी किया गया तब कार्यवाही तेज हुई। अब तक प्रदेश के कुल 968 थानों में से 817 थानों के परिसीमन का काम लगभग पूरा हो चुका है। यह पूरा हो भी जाएगा तो थानों की सीमाओं को लेकर विवाद प्रतिदिन खड़े होंगे। जो गांव या कस्बे दूसरे थाने में जुड़े हैं, वहां हुए अपराध का रिकार्ड अलग कर दूसरे थानों में पहुंच नहीं पाया है। आम लोगों को भी नए थानों की सीमाओं का ज्ञान नहीं है। कई बार तो गंभीर अपराध में फरियादी को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

जब थानों का ही परिसीमन इतना कठिन है तब जिलों के परिसीमन को कैसे आसान बनाया जा सकता है। दरअसल सरकार को इस बात पर विचार करना चाहिए कि प्रशासनिक इकाई का निर्धारण पुरानी जनगणना के आधार पर किया जाए या नई जनगणना रिपोर्ट के आने के बाद इसे विधानसभा-लोकसभा क्षेत्रों के परिसीमन के साथ किया जाए, ताकि विधानसभा और लोकसभा क्षेत्रों में भी व्यावहारिक कठिनाई को दूर किया जा सके। इसके साथ ही नए जिलों का गठन राजनीतिक आधार पर भी बंद करना चाहिए वरना इससे प्रशासनिक व्यय ही बढ़ेगा, नतीजे नहीं मिल पाएंगे। वर्ष 2025 बेहद महत्वपूर्ण है। यदि प्रशासनिक सुधार आयोग ने अपनी रिपोर्ट इस वर्ष दे भी दी तो विधानसभा और लोकसभा के परिसीमन के बीच इसे कैसे लागू किया जा सकेगा, यह भी विचारणीय है।

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या अमेरिका में राहुल गांधी के बयान कांग्रेस को नुकसान पहुंचा सकते हैं?

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग सही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

'सज्जनता' कांग्रेस की किसे नहीं है याद,
कहां बचे थे सिक्ख जन करके भी फरियाद!
करके भी फरियाद घाव अब भी है ताजा,
सगे बन रहे आज किस तरह राहुल राजा??
'गिरे वृक्ष जब पेड़' कौन किसकी है सुनता,
लगे सरासर ढोंग आज उनकी सज्जनता!!
- ओमप्रकाश तिवारी

नेशनल रिसर्च फाउंडेशन

तकनीकी विकास का रास्ता

शशि शेखर वेंपति
पूर्व सीईओ, प्रसार भारती

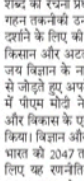

भारत टेकेड (तकनीक का दशक) में तेजी से आगे बढ़ रहा है। ऐसे में मोदी सरकार की एक पहल के रूप में अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ) वैश्विक विज्ञान के अग्रणी देशों के बीच भारत के स्थान को मजबूती देने के लिए तैयार है। 'टेकेड' शब्द की रचना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गहन तकनीकी उन्नति के एक दशक को दर्शाने के लिए की थी। जय जवान, जय किसान और अटल बिहारी वाजपेयी के जय विज्ञान के नारे को जय अनुसंधान से जोड़ते हुए अपने ऐतिहासिक संबोधन में पीएम मोदी ने वैज्ञानिक अनुसंधान और विकास के एक नए युग का आह्वान किया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को 2047 तक विकसित बनाने के लिए यह रणनीतिक कदम पीएम मोदी द्वारा भारत को ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने के महत्व को रेखांकित करता है। भारत की वैज्ञानिक क्षमता सदियों पुरानी है। आर्यभट्ट के नवाचारों और भास्कराचार्य की गणितीय प्रतिभा से लेकर सीवी रमन और सत्येंद्र नाथ बोस की आधुनिक सफलताओं तक। हालांकि एएनआरएफ की स्थापना उस विरासत का विस्तार मात्र नहीं है, यह परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण क्षण है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी अनुसंधान को असत्य तथा महत्वाकांक्षा और कल्पना की सीमाओं के चंगुल से बचाने का प्रयास करता है।

भारत में जिस एएनआरएफ की परिकल्पना की गई है, वह अमेरिका के राष्ट्रीय विज्ञान फाउंडेशन (एनएसएफ) जैसी संस्थाओं से आगे की बात करता है। एनएसएफ की सफलता एक ऐसे इकोसिस्टम के माध्यम से वित्त पोषण करने में निहित है, जो शिक्षा, उद्योग जगत और सरकार के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है, जबकि एएनआरएफ एक ऐसा मंच बनने की आकांक्षा रखता है, जो न केवल वैज्ञानिक परीक्षण में विस्तार करता है, बल्कि यह भारतीय मूल्यों में निहित सामाजिक-आर्थिक विकास के संदर्भ में मजबूती से मौजूद भी है। पूरी दुनिया बढ़ते भू-राजनीतिक बदलावों का सामना कर रही है, जिसमें पेटेंट और शोध पत्रों की विशाल मात्रा के माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी में चीन का प्रभुत्व शामिल है। भारत को उम्मीद है कि एएनआरएफ देश को वैश्विक तकनीकी इकोसिस्टम में एक रणनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करेगा। अपनी संपन्न साझेदारियों के साथ भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता, 6जी और सेमीकंडक्टर, सतत ऊर्जा और अन्य क्षेत्रों में नवाचार को आगे बढ़ाते हुए चीन के प्रभाव को संतुलित करने में मदद कर सकता है। एएनआरएफ को द्विपक्षीय और बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से भारत की अंतरराष्ट्रीय भागीदारी को भी मजबूत करना चाहिए। इसके जरिये भारत अपने विशाल प्रवासी समुदाय और प्रतिभा समूह का लाभ उठा सकता है तथा न केवल अति-महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंचों में अपनी अग्रणी भूमिका का भी विस्तार कर सकता है।

एएनआरएफ जिन प्रमुख क्षेत्रों को लक्षित करेगा, उनमें से एक है-हरित प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से स्वच्छ ऊर्जा स्रोत के रूप में हाइड्रोजन। पूरी दुनिया जीवाश्म ईंधन के बदले नवीकरणीय ऊर्जा को अपना रही है। ऐसे में हाइड्रोजन भविष्य के ईंधन के रूप में उभरा है। भारत में राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन पहले से ही शुरू हो चुका है, इस क्षेत्र में एएनआरएफ का अनुसंधान देश को हरित ऊर्जा के क्षेत्र में वैश्विक अग्रणी देश बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। क्वांटम कंप्यूटिंग और हाइड्रोजन ऊर्जा दो ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत एएनआरएफ के माध्यम से भविष्य की तकनीकी और पर्यावरणीय क्रांतियों की दिशा निर्धारित कर सकता है। इन चुनौतियों के लिए विज्ञान-आधारित दृष्टिकोण अपनाकर भारत न केवल अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करेगा, बल्कि वैश्विक ऊर्जा संकट के लिए स्थायी समाधान भी पेश करेगा।

भारतीय विज्ञानियों, तकनीकी विशेषज्ञों और नवोन्मेषियों की अगली पीढ़ी को बढ़ावा देने में एएनआरएफ की भूमिका का सबसे दूरगामी प्रभाव होगा। भारत लंबे समय से दुनिया की दिग्गज प्रौद्योगिकी कंपनियों को प्रतिभा प्रदान करने वाला देश रहा है। भारतीय मूल के सीईओ गूगल, माइक्रोसाफ्ट और एडोब जैसी कंपनियों का नेतृत्व कर रहे हैं। इस फाउंडेशन के माध्यम से भारत एक ऐसा परिवेश बना सकता है, जो घरेलू अनुसंधान और विदेश से देश की प्रतिभाओं की वापसी को प्रोत्साहित करता हो, जिससे प्रतिभा पलायन को रोकने में भी मदद मिलेगी। मौलिक अनुसंधान में निवेश करके, अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं का निर्माण करके और प्रतिस्पर्धी अनुदान प्रदान करके भारत के भीतर प्रतिभाओं को पोषित करने के एएनआरएफ के प्रयासों का आने वाले दशकों में फल मिलेगा।

2047 तक जब भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, तब तक एएनआरएफ का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ने लगेगा। फाउंडेशन यह सुनिश्चित करेगा कि नवाचार राष्ट्रीय चेतना में गहराई से समाहित हो तथा समृद्धि और विकास के चालक के रूप में विशाल समुदाय के साथ प्रतिध्वनित होती हो। एएनआरएफ एक ऐसे राष्ट्र का प्रतीक है, जो तकनीकों का उपभोग करने के बदले उनका निर्माण करने तथा वैज्ञानिक ज्ञान का आयात करने के बदले अत्याधुनिक नवाचारों का निर्यात करने की ओर आगे बढ़ रहा है। यह एक ऐसा माडल है, जो आर्थिक विकास को सिर्फ पारंपरिक अर्थों में नहीं देखता है, बल्कि तकनीकी संप्रभुता को भारत के भविष्य की कुंजी के रूप में रेखांकित करता है।

भारतीय विज्ञानियों, तकनीकी विशेषज्ञों और नवोन्मेषियों की अगली पीढ़ी को बढ़ावा देने में अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की भूमिका का दूरगामी प्रभाव होगा। प्रतीकात्मक

****

राष्ट्रीय सहारा
पटना • बृहस्पतिवार • 12 सितम्बर • 2024
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

दान, भोग और नाश ये धन की तीन गतियां हैं। जो न देता है और न ही भोगता है, उसके धन की तृतीय गति (नाश) होती है।

-भर्तृहरि

शांति का रास्ता

कोलकाता के आरजी कर अस्पताल के मुद्दे पर आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टर सुप्रीम कोर्ट के अल्टीमेटम के बावजूद अभी तक काम पर नहीं लौटे हैं, जो चिंता की बात है। इस अस्पताल में प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और उसकी हत्या को लेकर पिछले 9 अगस्त से डॉक्टरों का आंदोलन जारी है। निसंदेह यह बहुत जघण्य घटना है, जिससे हर व्यक्ति दुखी है, और उससे भी ज्यादा दुखद यह है कि अब तक पीड़िता के परिजनों को न्याय नहीं मिला है। इस मामले को लेकर पीड़िता के सहकर्मियों की हड़ताल वैधानिक और न्यायसंगत है। लोकतंत्र में राजनीतिक-सामाजिक संगठनों, व्यक्ति और व्यक्तियों के समूह को अपनी मांगों को लेकर सरकार के खिलाफ शांतिपूर्ण ढंग से विरोध-प्रदर्शन और हड़ताल करने का संवैधानिक अधिकार है। लेकिन हड़ताल की वजह से सैकड़ों किलोमीटर दूर से आए मरीज और उनके तीमारदारों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सरकार ने दावा किया है कि हड़ताल से 23 मरीजों की मौत हो गई है। जाहिर है कि इस पहलू पर मानवीय दृष्टि से विचार करते हुए डॉक्टरों को काम पर लौट आना चाहिए। वस्तुतः प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और हत्या के मामले में राज्य की पुलिस और प्रशासन ने जिस तरह से गुमराह और भ्रमित करने वाला रवैया अपनाया उससे डॉक्टरों के साथ आम लोगों में भी निराशा है। पुलिस, प्रशासन और सरकार के ऊपर से सभी का भरोसा उठ गया है। डॉक्टरों के काम पर नहीं लौटने की यह एक बड़ी वजह हो सकती है। मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आंदोलनकारी डॉक्टरों को वार्ता के लिए राज्य सचिवालय में आमंत्रित किया था लेकिन डॉक्टरों को निमंत्रण की भाषा पर आपत्ति थी। इसलिए उन्होंने इसे ठुकरा दिया। डॉक्टरों का कहना है कि पीड़िता के परिवार को न्याय मिले और कार्यस्थल पर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। जब तक यह नहीं होगा हमारी हड़ताल जारी रहेगी। ये दोनों मांगें जायज हैं और राज्य सरकार को इन्हें तुरंत मानना सुनिश्चित करना चाहिए। राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी स्वयं महिला हैं, और राज्य की मुखिया होने के नाते उनसे अपेक्षा की जाती है कि महिला प्रशिक्षु डॉक्टर को न्याय दिलाने के लिए वह स्वयं पहल करें। इस मुद्दे पर अभी तक जो गतिरोध बना हुआ है, उसे तोड़ने के लिए जरूरी है कि ममता बनर्जी डॉक्टरों के हड़ताल स्थल पर स्वयं जाएं और उनसे वार्ता करें। राज्य में शांति बहाल करने का यही एक रास्ता बचा है।

टोल में राहत

राजमार्गों पर पहले बीस किलोमीटर की यात्रा करने वाले वाहनों पर कोई टोल टैक्स नहीं लगेगा। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने शून्य शुल्क नीति लागू करने के लिए नियमों में संशोधन की 2024 अधिसूचना जारी की है। यह प्रावधान केवल उन वाहनों के लिए होगा जो ग्लोबल नेविगेशन सैटेलाइट सिस्टम ऑन-बोर्ड यूनिट से लैस होंगे। राष्ट्रीय परमिट वाले वाहनों को छोड़ कर अन्य वाहनों को राष्ट्रीय राजमार्ग, स्थायी पुल, बाईपास या सुरंग पर पहले बीस किमी. की यात्रा के लिए कोई शुल्क नहीं देना होगा। यह फास्टैग सिस्टम से बिल्कुल अलग होगा। राजमार्गों के आसपास रहने, करीब की यात्रा करने और रोजमर्रा के कामकाज के लिए टोल प्लाजा से गुजरने वालों की जेब पर पड़ने वाले भार में इससे राहत मिल सकेगी जो लंबे समय से इस अतिरिक्त खर्च को लेकर नाराजगी जता रहे थे। सरकार को टोल टैक्स से प्राप्त होने वाला रेवेन्यू तेजी से बढ़ता जा रहा है। इस वर्ष अगस्त में 503 करोड़ रुपये टोल की वसूली हुई जो पिछले साल की तुलना में 20 अधिक है। बीते साल केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजना का ठेका खत्म करने के बाद 100 टोल टैक्स लेने का फैसला किया था। इसके पूर्व 2018 में सरकार ने पुरानी टोल नीति के स्थान पर पे एंड यूज नीति लागू करने की योजना बनाई थी जिसके अनुसार सड़क वाहन जितनी दूरी तय करेगा, उतना टैक्स देना होगा। हर 60 किमी. पर टोल प्लाजा होने के कारण स्थानीय वाहन चालकों को मजबूरन पूरा टोल देना पड़ रहा है। उन्हें इस नई सुविधा का लाभ मिलेगा। हालांकि केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी पहले भी कई दफा दोहरा चुके हैं कि टोल प्लाजा के 60 किमी. के दायरे में रहने वालों को टोल से मुक्ति दी जाएगी। हो सकता है कि किन्हीं तात्कालिक कारणों से यह मुक्ति फिलहाल बस बीस किमी. के दायरे तक सीमित रखने का निर्णय लिया गया है जिस पर भविष्य में और छूट की व्यवस्था की जा सके। इसमें दो राय नहीं कि सड़कों की स्थिति पहले से बेहतर हुई है। स्थायी पुलों तथा बाईपास की व्यवस्था ने सड़क यात्राओं को पहले की तुलना में सुगम बना दिया है। मगर अपने देश में कुल वाहन मालिकों में अधिकतर दोपहिया ही इस्तेमाल करते हैं। बेशक, उनकी रोजमर्रा की सड़क यात्रा को सस्ता और सुलभ बनाने के बेहतरीन प्रयासों की आवश्यकता है।

कटाक्ष/ सहीराम

पलट, तेरा ध्यान किधर है

देखो जी, नीतीश जी के साथ आने का इतना असर तो मोदी जी पर भी होना ही चाहिए था कि वे भी थोड़ा पलटना सीख लें। सो हुआ। वैसे भी जब मोदी जी के साथ आने वाले संगी-साथी संघ-भाजपा की बोली बोलना सीख जाते हैं तो संगी-साथियों का भी इतना असर तो होना ही चाहिए कि संघ-भाजपा वाले भी कुछ हुनर तो उनका भी सीख लें। नीतीश जी पलटूराम के नाम से जगत प्रसिद्ध हैं। एक जमाना था जब जगत सेठ हुआ करते थे। कुछ उसी तरह से नीतीश जी भी जगत पलटू हैं। अब राजनीति में पलटने को चाहे कितना ही खराब माना जाता हो, लेकिन प्यार मोहब्बत में तो पलटने को अच्छा माना जाता है। मसलन, एक जमाने के लवर ब्वॉय शाहरुख खान की डीडीएलजे में कही गई यह उक्ति तो प्रेमी जनों के लिए मंत्र की तरह ही है-पलट, पलट। फिर वो एक फिल्मी गाना भी तो है-पलट मेरी जान, तेरे कुर्बान, ओ तेरा ध्यान किधर है। हमें यकीन है कि अगर इंडिया गठबंधन वाले नीतीश जी को प्यार मोहब्बत के कुछ इसी अंदाज में बुलाएं तो वे फिर पलट सकते हैं, जिसका डर एनडीए को दिन-रात सताता रहता है, और जिसकी उम्मीद इंडिया गठबंधन दिन-रात लगाए रहता है। नीतीश जी का भारतीय राजनीति में यही योगदान है। खैर जी, असल बात नीतीश जी का पलटना नहीं है।

असल बात तो यह है कि मोदी जी पलटूराम हुए जा रहे हैं। इससे नीतीश जी के कलेजे में तो ठंड पड़ सकती है कि आखिर, हमने तुम्हें भी पलटना सिखा ही दिया। कुछ उसी अंदाज में जैसे कभी फिल्मों में आशिक माशूका से कहा करता था कि देखो, हमनें तुम्हें इश्क करना सिखा दिया। अब देखिए, लेटरल एंट्री पर मोदी जी पलट गए वरना तो जी थोक में अपनी मनमर्जी के, अपनी पसंद के टॉप क्लास अफसर भर्ती कर सकते थे, बिना किसी आरक्षण के झंझट के। फिर देखो वक्फ के कानून पर भी पलटी मार गए। वरना तो जी, कहते हैं दो तीन लाख करोड़ रुपये की जमीन फ्री में हाथ आ जाती जिसे वे बड़े आराम से अपने यार-दोस्तों में बांट सकते थे। फिर ब्रॉडकास्ट बिल पर भी पलट गए। उधर, देखमदेख सुना है प्याज-लहसूनविहीन निर्मला ताई भी पैसा उगाही के एक प्रावधान पर पलट गईं। जातिगत जनगणना पर भी पलटने की तैयारी चल रही है। संघ का कहा तो मानना ही होगा।

बे-पटरी करनी होगी साजिश

रेलवे

प्रो. हर्ष सिन्हा

सितम्बर 8 तारीख को कानपुर के पास कालिंदी एक्सप्रेस के एक सिलिंडर से टकराने की दुर्घटना जान-माल के नुकसान के नजरिए से भले महत्त्वपूर्ण न हो लेकिन इसने देश में क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर सिक्योरिटी (सीआईएस) जैसे बेहद महत्त्वपूर्ण लेकिन आम तौर पर उपेक्षित मुद्दे को बार फिर से विमर्श के केंद्र में ला दिया है। यह उन नीति-निर्धारकों और नियामकों के लिए भी पुनर्विचार का विषय है, जो आम तौर पर आधारभूत ढांचे की सुरक्षा को साइबर सुरक्षा का पर्याय मानने लगे हैं।

कालिंदी एक्सप्रेस की घटना इसलिए भी ध्यान खींचती है कि बीते एक महीने में केवल उत्तर प्रदेश में ही यह इस तरह की तीसरी घटना है। इससे पूर्व 16 अगस्त को कानपुर के पास साबरमती एक्सप्रेस के बोल्डर से टकरा जाने के कारण 22 कोच पटरी से उतर गए थे। दावा किया गया था कि ये बोल्डर रेल पटरियों से बांधे गए थे। 24 अगस्त को फर्रूखाबाद और कासगंज के बीच पैसेंजर ट्रेन पटरियों पर रखे लकड़ी के बड़े टुकड़े से टकरा गई थी। संयोग ही कहा जाएगा कि तीनों हादसों में जनधन की क्षति नहीं हुई। हालांकि संभावनाएं प्रचुर थीं। भारत में दुर्भाग्य से आपदा प्रबंधन संबंधी पहल या सुरक्षा संरक्षण संबंधी विमर्श तब तक स्थगित रहते हैं, जब तक कि कोई दुर्घटना बड़ी बलि न ले ले वरना कुछ समय की सुर्खियों के अलावा सामान्यतः कोई बड़ी प्रतिक्रिया नहीं होती।

जैसा कि इन तीनों घटनाओं के बाद भी दृष्टव्य है। इन सभी घटनाओं में साजिश की संभावनाओं का जिक्र हुआ है, और पुलिस के साथ-साथ कुछ मामलों में एटीएस को भी जांच में शामिल किया गया लेकिन यह सिक्के का केवल एक पहलू है। गड़बड़ियों के लिए जिम्मेदारों को खोज कर सजा दिलाने से ज्यादा जरूरी ऐसी घटनाओं की संभावनाओं को क्रमशः शून्य करते जाना है। विकसित देशों विशेष रूप से यूरोपीय देशों में क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर सिक्योरिटी यानी अहम बुनियादी ढांचों की सुरक्षा को लेकर दो दशक में काफी काम हुए हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं में सैन्य खतरों की तुलना में जैसे-जैसे अपरंपरागत खतरों पर ध्यान देना शुरू किया गया है, वैसे-वैसे खतरों के नये मोर्चे नुमाया होते जा रहे हैं। एक ऐसे दौर में जब राष्ट्र आमने-सामने के युद्धों की बजाय प्रच्छन्न युद्धों का सामना कर रहे हैं, आतंकवाद अपने उद्देश्यों के लिए उड़ते जहाज को इमारत से टकरा देने जैसे अकल्पनीय विकल्प चुन रहा हो तो ऐसे समय में बुनियादी ढांचों की सुरक्षा से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कुछ और नहीं रह जाता। 9/11 के बाद अमेरिका की होमलैंड सिक्योरिटी का प्रारूप इसकी पुष्टि करने के लिए पर्याप्त है। सामान्य रूप से अहम बुनियादी ढांचे से अभिप्राय

उन सुविधाओं, परिसंपत्तियों या प्रणालियों से है जो किसी देश की सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के नजरिए से महत्त्वपूर्ण होते हैं, उनमें आई कोई गड़बड़ी सार्वजनिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिरता सबको एक साथ प्रभावित कर देती है। ऊर्जा, रासायनिक नेटवर्क, जन स्वास्थ्य, पुलिस, फायर ब्रिगेड, सूचना प्रौद्योगिकी के अलावा सार्वजनिक परिवहन प्रणाली इन अहम बुनियादी ढांचे में शामिल हैं।

बीते कुछ वर्षों में विशेष रूप से भारत में आपदा प्रबंधन अधिनियम लागू होने के बाद बुनियादी ढांचों की सुरक्षा पर तेजी से काम शुरू हुआ है, लेकिन इसका स्वरूप फिलहाल आपदा केंद्रित ज्यादा है। समस्या के न्यूनीकरण की दिशा में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र को अलबत्ता, बेहतर तवज्जो दी गई है, लेकिन सार्वजनिक परिवहन प्रणाली के क्षेत्र में अभी काफी कुछ किया जाना चाहिए। भारत में रेल जीवन रेखा जैसी अहमियत रखती है। तकरीबन साढ़े तेरह हजार ट्रेनें हर दिन ढाई लाख यानी लगभग एक ऑस्ट्रेलिया के बराबर लोगों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के अलावा 33 लाख टन माल की ढुलाई भी करती हैं। बीते कुछ वर्षों में भारत में हवाई यात्रा ढांचे का भी तेजी से विकास हुआ है लेकिन यह रेलवे का विकल्प नहीं बन सकता। भारत में रेल पटरियों की लंबाई एक लाख पंद्रह हजार किमी. तक विस्तारित है, और इन ढांचों की विरासत वर्ष 1853 तक पहुंचती है, जब भारत में पहली ट्रेन चली थी। स्वाभाविक रूप से इतनी महत्त्वपूर्ण जीवन रेखा को सुरक्षित रखना सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। इसमें कोई दो राय नहीं कि रेल मंत्रालय ने इस क्षेत्र में लगातार काम किया है। इसका एक बड़ा प्रमाण रेल दुर्घटनाओं की संख्या में लगातार होने वाली कमी है। बमुश्किल एक दशक पहले तक लगभग 60 फीसद ट्रेन दुर्घटनाएं रेल पटरियों पर गड़बड़ियों के चलते होती थीं पर इसमें भी काफी कमी आई है, लेकिन बेहतरी की इस रफ्तार को और अधिक बेहतर करने की जरूरत है।

दरअसल, रेल पटरियों पर बोझ जरूरत से ज्यादा है। आजादी के बाद से अब तक रेल नेटवर्क में लगभग 30 फीसद की बढ़ोतरी हुई है, लेकिन इसी अवधि में यात्री भार में 1344 फीसद की बढ़ोतरी हुई है, और माल ढुलाई का बोझ 1642 फीसद तक बढ़ गया है। विशेषज्ञों के आकलनों के मुताबिक भारत में हर साल रेल पटरियों के नवीनीकरण का कार्य अपने लक्ष्य के साठ फीसद तक ही पहुंच पा रहा है, जो पर्याप्त नहीं है। ऐसी बुनियादी समस्याओं के साथ तोड़फोड़, आतंकी या देश-विरोधी तत्वों द्वारा समय-समय पर की जाने वाली साजिश इस अहम बुनियादी ढांचे की सुरक्षा के लिए नये किस्म की चुनौतियां पैदा कर रही हैं।

कालिंदी एक्सप्रेस हादसे की जगह पर बारूद की बरामदगी और अच्छी-खासी दूरी तक रेलवे पटरियों के समानांतर पेट्रोल गिरा होने की खबरें बेहद चिंताजनक हैं। घटनास्थल से मात्र 300 मीटर की दूरी पर पेट्रोल पंप की मौजूदगी गहरी साजिश और इसके सफल होने के बाद पैदा होने वाले घातक परिणामों का अंदाजा लगाने के लिए पर्याप्त है। ऐसी घटनाओं के सबक बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। रेल पटरियों की निगरानी की मौजूदा व्यवस्थाओं को और अधिक बेहतर करने और नवीन तकनीकों का इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, जमीनी तौर पर नवाचारी कदम उठाने की भी जरूरत है। यह सब तभी संभव हो सकता है, जब हम अहम बुनियादी ढांचों की सुरक्षा पर अपनी प्राथमिकताओं का पुनर्निर्धारण करें।

(लेख में व्यक्त विचार निजी हैं)

भारत में रेल पटरियों की लंबाई एक लाख पंद्रह हजार किमी. तक विस्तारित है, और इन ढांचों की विरासत वर्ष 1853 तक पहुंचती है, जब भारत में पहली ट्रेन चली थी। स्वाभाविक रूप से इतनी महत्त्वपूर्ण जीवन रेखा को सुरक्षित रखना सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। विशेषज्ञों के आकलनों के मुताबिक भारत में हर साल पटरियों के नवीनीकरण का कार्य अपने लक्ष्य के साठ फीसद तक ही पहुंच पा रहा है, जो पर्याप्त नहीं है

हड्डियों और जोड़ों की समस्याओं के मूल में है विटामिन डी की कमी

- एक अनुमान के मुताबिक, भारत के 70-90 प्रतिशत लोगों में विटामिन डी की कमी होती है, जो हड्डियों के लिए सही नहीं है
- पुरुषों में खेलों में अधिक भागीदारी, व्यावसायिक खतरे, खराब आहार और धूम्रपान जैसे कारण हड्डियों और जोड़ों में समस्याएं पैदा करते हैं, जबकि महिलाओं में हार्मोनल परिवर्तन, ऑटोइम्यून डिजीज, कैल्शियम और विटामिन डी का कम सेवन इसके पीछे के कारण हैं
- उपचार के दौरान स्थिति के अनुरूप ट्रीटमेंट देना जरूरी हो जाता है यानी सबकी बॉडी अलग होती है, इसलिए उसके मुताबिक ही उपचार किया जाना चाहिए

वन्दे भारत को यह जताने को चलाया गया कि बुलेट ट्रेन न सही, वन्दे भारत को शक्ल-सूरत में वही समझ लीजिए। यानी शेर न सही, उसकी खाल सही। कितने वीडियो बनवाए, चलवाए। पर जब से चली है, आए दिन कोई-न-कोई अप्रिय खबर सामने आ जाती है। बिला शक एक सफेद हाथी!

ओम थानवी, पत्रकार
@omthanvi

निर्मल होने का रास्ता चुनौतीपूर्ण

दिल्ली में यमुना | **पंकज चतुर्वेदी**

सावन बीत गया, भादों भी आधा निकल गया दिल्ली और उसके आसपास यमुना नदी के जल-ग्रहण क्षेत्र कहलाने वाले इलाकों में पर्याप्त पानी बरसा, लेकिन न नदी में पानी दिखा और न ही पानी से शहर की मुक्ति। जिस समय नदी में पानी लबालब होना चाहिए था, तब कम से कम दो बार दो इसमें अमोनिया की मात्रा अधिक हो गई। कई हजार करोड़ के खर्च, ढेरों वादों और योजनाओं के बाद भी लगता नहीं है न कि दिल्ली में यमुना को 2026 तक निर्मल बना देने का लक्ष्य पूरा हो पाएगा। समझना होगा कि यमुना पर लाख एसटीपी लगा कर नालों के पानी को शुद्ध कर लें लेकिन जब तक यमुना में नदी का पानी अविरल नहीं आएगा, तब तक इसके हालात तो सुधरने से रहे।

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) की रिपोर्ट के अनुसार जुलाई में यमुना में ऑक्सीजन की मात्रा शून्य पाई गई जबकि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। यमुना की सफाई के लिए केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार को 8,500 करोड़ रुपये दिए लेकिन नतीजा शून्य है। असल में दिल्ली में यमुना को साफ-सुथरा बनाने की जो भी नीति हैं, उनका मूल यह है कि दिल्ली में यमुना, गंगा और भूजल से 1,900 क्यूसेक पानी प्रति दिन प्रयोग में लाया जाता है। इसका 60 फीसद यानी करीब 1,100 क्यूसेक सीवरेज का पानी एकत्र होता है। यदि यह पानी शोधित कर यमुना में डाला जाए तो यमुना निर्मल रहेगी और दिल्ली में पेयजल की किल्लत भी दूर होगी। लेकिन हर समय नजरंदाज किया जाता है कि नदी में बाकी जल कहां से आएगा?

ईमानदारी की बात तो यह है कि यमुनोत्री से निकलने वाली जल-धारा, जो मैदान में आ कर गंगा की सबसे बड़ी सखी-सहेली कहलाती है, पहाड़ से उतरने के पहले ही लुप्त हो जाती है। दिल्ली तक जो भी जल आता है वह अधिकांशतः हरियाणा की छोटी नदियों और कारखानों के उत्सर्जन का हिस्सा होता है। बरसात के मौसम के पचहत्तर फीसद दिन बीत जाने के बाद भी दिल्ली में एक भी बार बाढ़ नहीं आई। बाढ़ नदी में जीवन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पहाड़ों से बह कर आया पानी अपने साथ कई उपयोगी लवण लेकर आता है। वहीं नदी के जल-मार्ग में कूड़े-मलबे के कारण धारा अवरुद्ध होती है, बाढ़ उसे स्वतः साफ कर देती है। इस तरह नदी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है, जो मछलियों और जीवों की प्रजातियों को अनुकूल परिवेश प्रदान करती है।

दिल्ली में यमुना की शुद्धि के मशीनी उपायों से कहीं ज्यादा जरूरी है कि यहां तसल्ली से बाढ़ आए। आखिर, दिल्ली में बाढ़ क्यों नहीं आई? कारण खोज लें तो यह भी समझ आ जाएगा कि मल-जल को साफ करने के उपाय क्यों असफल ही रहते हैं। यमुना की आत्मा सभी नदियों के मानिंद उसके फ्लड प्लेन अर्थात कछार में है। जब नदी यौवन पर हो तो जमीन पर जहां तक उसका विस्तार होता है, वह उसका कछार या फ्लड प्लेन है। अब दिल्ली में तो नदी को फैलने की जगह ही नहीं बची। हजारों निजी और सरकारी निर्माण और नदी के बीचोंबीच खड़े किए गए खंभे यमुना को दिल से बहने ही नहीं देते। सुनिश्चित करने की जरूरत है कि नदी के फ्लड प्लेन को पूरी तरह से खाली रखा जाए। नदियों में आने वाली बाढ़ एक नये जीवन का निर्माण करती है, और एक तरह से जरूरी भी है। बाढ़ से नदी का जलीय जीवन भी बेहतर होता है।

दिल्ली तक यमुना का अवरोध चाहने वाले दिल्ली से हरियाणा और फिर उससे ऊपर पहाड़ तक भी हैं, जिन्ने अवैध बालू खनन के लिए कई-कई जगह नदी के रास्ते रोके हुए हैं, या अनैतिक तरीके से इसके मार्ग को ही बदल दिया है, ऐसे लोगों की मंशा की पूर्ति के लिए पहाड़ पर ही नदी को बांधने के सरकारी प्रयास भी कम नहीं हैं। देहरादून के कालसी विकास खंड में यमुना नदी पर 204 मीटर ऊंचे बांध की लखवार व्यासी परियोजना 1972 में शुरू हुई। फिर इस पर काम बंद हो गया। 2013 में काम फिर शुरू हुआ और अब यमुना पहाड़ से नीचे उतरने से पहले यहीं घेर ली जाती है। जाहिर है कि जब पहाड़ में ही यमुना का भाव नहीं है तो हथिनी कुंड से वजीराबाद तक यह एक बरसाती नदी ही है। पहाड़ पर इतने बड़े बांध और कई सुरंगों के जरिए पानी के मार्ग को बदलने से महज जल-प्रवाह ही कम नहीं हो रहा है, बल्कि इतने निर्माण का मलबा भी बह कर नीचे आ रहा है, जो नदी को उथला बना रहा है। दिसम्बर 21 के आखिरी हफ्ते में जब व्यासी जलविद्युत परियोजना की एक टरबाइन को प्रयोग के तौर पर खोला गया तो यमुना की धारा लगभग लुप्त हो गई थी। इससे स्पष्ट हो गया था कि इस परियोजना के कारण दिल्ली तक यमुना का रास्ता अब बंद हो गया है।

जब व्यापक निर्माण के कारण पहाड़ों पर जम कर जंगल काटे जाएं तो पारिस्थितिकी हानि के कुप्रभाव से नदी भी नहीं बच सकती। महज सिंचाई और बिजली के सपने में यमुना हरियाणा में आने से पहले ही हार जाती है। इधर, दिल्ली जिस नदी को निर्मल करने के लिए बजट बढ़ाती है, वास्तव में उस नदी का अस्तित्व है ही नहीं।

कीमत | **डॉ. ज्ञानानंददास स्वामी**

एक बार एक चरवाहे को सड़क पर एक अनमोल मणि मिला। उसने अज्ञानतावश उस मणि को सामान्य चमकता पत्थर समझ कर अपनी एक बकरी के गले में लटका दिया। घर लौटते समय गांव के एक दुकानदार ने उस पत्थर को मूल्यवान जान कर उसे खरीदना चाहा। चरवाहे ने कहा 'यदि मेरी बकरी 100 रुपये में खरीदोगे तो यह चमकता पत्थर मुफ्त में दे दूंगा।' उसने मणि के साथ बकरी खरीद ली और शहर में उसे 1000 रुपये में बेच कर मुनाफा कमाया। शहर के जौहरी ने उसे अच्छी तरह परखा। उसे हीरा जान कर शहर के बड़े जौहरी को 10,000 रुपये में बेचा। यह बड़ा जौहरी ज्ञानी भी था, उसने जांच करवाई तो पता चला कि यह तो चंद्रकांत मणि है, और इसका मूल्य एक अरब रुपये से भी ज्यादा है। चीज तो वही थी। सबके पास ही थी। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति ने जो कीमत लगाई उसमें भारी अंतर था। वस्तुतः वस्तु का आपके पास होना उतना मायने नहीं रखता जितना उस वस्तु का ज्ञान! ज्ञान से ही हम उस चीज या पदार्थ की यथार्थ महिमा समझ सकते हैं, और तदनुसार ही उसकी कीमत समझ सकते हैं। उसी प्रकार हम सबकी देह के भीतर अनंत शक्तिमान आत्मा है किंतु देहभाव से आलिप्त होने से हमें न तो उसका पूर्ण ज्ञान है, और न ही उसकी महिमा। हम भी चरवाहे की भांति आत्मा को नगण्य समझ कर उपेक्षा करते आए हैं। भगवान कृष्ण इस शाश्वत आत्म-ज्ञान से ही अर्जुन के अज्ञान को दूर कर रहे हैं। उन्होंने समझाया कि देह के भीतर रहने वाली आत्मा हमारा वास्तविक स्वरूप है। आत्मा अजर, अमर और अक्षय है। अविनाशी आत्मा को कोई नष्ट नहीं कर सकता। महंतस्वामी महाराज कहते हैं कि अलौकिक, अमूल्य और अद्भुत आत्म-ज्ञान से हम सदा आनंदित रह सकते हैं। शाश्वत आनंद का झरना हमारे भीतर होने पर भी हमें उसकी कीमत नहीं है। इस आत्म-ज्ञान का हम दैनिक जीवन में उपयोग करेंगे तो उस अनमोल मणि की सही कीमत समझी कहलाएगी! जी हां, मान-अपमान, सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि सब देह के साथ जुड़े हैं। देह के क्रिया-कलाप से निकल कर उस अनंत आनंद के स्रोत की तरफ नहीं मुड़ेंगे तो बड़े लाभ से वंचित रह जाएंगे।

रीडर्स मेल

बेपटरी होतीं ट्रेन बड़ी चुनौती

सरकार और खुफिया एजेंसियों के लिए यह बड़ी चुनौती है कि ट्रेनों को नुकसान पहुंचाने के लिए जो शरारती तत्व काम कर रहे हैं, उन्हें कैसे रोका जाए। मान लो, अगर ये शरारती तत्व अपने नापाक इरादों में कामयाब हो जाते हैं, तो देश में जान-माल का कितना नुकसान होगा। कुछ दिन पहले ही उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद के निकट ट्रेन की पटरी पर पेड़ का एक मोटा तना रख कर ट्रेन को पलटाने की कोशिश की गई थी, और अब सोलापुर, महाराष्ट्र में रेल लाइन पर बड़ा पत्थर रख कर ट्रेन को क्षति पहुंचाने की कोशिश की गई। सोचो, अगर ट्रेन के लोको पायलट ने सतर्कता न दिखाई होती तो कितना बड़ा हादसा हो जाता और न जाने कितने घरों के चिराग बुझ जाते। रेल मंत्रालय को चाहिए कि शरारती तत्वों की बढ़ती नापाक हरकतों से निपटने के लिए प्राथमिक तौर पर सख्त कदम उठाए ताकि इन शरारती तत्वों के मंसूबे पूरे न होने पाएं और भविष्य में किसी भी लापरवाही का बुरा नतीजा किसी निर्दोष को अपनी जान देकर न चुकाना पड़े।

राजेश कुमार चौहान, भागलपुर

अपराधी की तरफदारी क्यों

उमर अब्दुल्ला का कहना है कि अफजल गुरु को फांसी की सजा नहीं देनी चाहिए थी। लेकिन रक्षा मंत्री की बात से हम सहमत हैं कि अपराधी अफजल गुरु को फांसी की सजा न देते तो क्या उसे फूलों की माला पहना कर उसका सम्मान करते। हर कोई जानता है कि अफजल गुरु बड़ा अपराधी था। उसे फांसी की सजा मिलना बेहद जरूरी था। वह ऐसा अपराधी था जिसने देश की संसद पर हमले की साजिश रची थी, संसद वह स्थान है जहां कानून बनाए जाते हैं। संसद को हम लोकतंत्र का मंदिर कहते हैं। अफजल गुरु ने लोकतंत्र के उसी मंदिर पर हमले की साजिश रची थी जिसकी सुरक्षा करते हुए हमारे कई सैनिक शहीद हुए थे। उसका वह अपराध मामूली अपराध नहीं था। ऐसे अपराधी की तरफदारी जिस तरह कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला कर रहे हैं, वह भी एक अपराध की श्रेणी में ही आता है। कश्मीर की जनता को नेशनल कॉन्फ्रेंस एवं उमर अब्दुल्ला को विधानसभा चुनाव में ऐसी सजा देनी चाहिए कि उमर को अपने कहे पर पछतावा अवश्य हो।

मनमोहन राजावतराज, शाजापुर, मप्र

राजनीति में भ्रष्टाचार

भारतीय राजनीति में राजनेताओं पर आरोप लगने पर कई लोगों ने अपने पद को त्याग दिया था (जिसमें आप सरकार के नेता भी थे),जबकि दिल्ली के शराब घोटाला मामले में मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने भारतीय राजनीति को अलग राह पर ले जाने का उदाहरण पेश किया है। इस उदाहरण को आदर्शवादिता के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि केजरीवाल भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार किए गए हैं। लेकिन मुख्यमंत्री पद पर रहने वाले व्यक्ति के लिए यह शोभनीय नहीं है। केजरीवाल स्वयं कहते थे कि राजनीति में भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए आए हैं, लेकिन अब जब उन पर ही सवाल उठ चुके हैं, तब उनसे भ्रष्टाचार-मुक्त राजनीति की आशा करना सिरे से बेमानी कहा जाएगा।

मनोज श्रीवास्तव, सुल्तानपुर, उप्र

letter.editorsahara@gmail.com

राष्ट्रीय सहारा
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया कादरी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेन्चर्स लिमिटेड प्रेस, मौजा-दरियापुर, पुलिस स्टेशन-शाहपुर, दानापुर, पटना से मुद्रित तथा चतुर्थ तल, सहारा इण्डिया बिहार, बोरिंग रोड क्रासिंग, पटना से प्रकाशित। समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - संजय त्रिपाठी *।
पटना कार्यालय- 3911448/417/454/422, फैक्स : 2535935,2520760 विज्ञापन-3911455/434, प्रसार- 3911451/428
वर्ष - 19, अंक 6420
आर.एन.आई. सं. -बीआईएचएचआईएन/2006/18082 Postal Reg. No. : R-10/NP-50/06-07
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु उत्तरदायी

हमें गर्व है हम भारतीय हैं